

अधिक लाभ उठा सकते हैं। कोई यह न जाने कि मैं किसी मतलब से प्रशंसा कर रहा हूँ, पण्डित जी से साधारण दूरकी मित्रता के सिवा मेरा और कोई सम्बन्ध नहीं है, मैंने जो कुछ लिखा है वह केवल सच्चे मनसे न्यायधर्म का पालन किया है, परमात्मा उन को इस लाभदायक पुस्तक प्रकाशन का यश दे, और सर्व देश में इस पुस्तक का प्रचार करे—

॥ दोहा छन्द ॥

रत्न द्वीप, निधि, चन्द्रमा,  
सम्भवत बीच नवीन ।  
'अफसूँ' श्री 'वेताव' ने,  
पुस्तक मुद्रित कीन ॥

“१६७६”

“संख्या सूचक मन्त्र विम्बाक्षरानुसार  
हिन्दी सुभाषितीष्ट ये, छपी बढे नितमान ।  
प्यारी पुस्तक डालगुणि, अफसूँ सम्भवत जान ॥

“१६७६”

नम्र

अफसूँ

( काशी निवासी )

॥ ॐ कवये नम ॥

# हिन्दी सुभाषित



पण्डित राम रक्ता मल राम कवि

द्वारा सम्पादित

अ+उ+म, महिमा

आमुन्चारण होतही, टिके न विघ्न विपाद ।  
स्याग भागते हैं यथा, सुनि केहरिको नाद ॥

अगुवा अवगुण

सबसे आगे होयके, कबहु न करिये बात ।  
सुधरे-काज, समाज फल, विगरे गारी खात ॥

अच्छोमे बुराई का लेश

लघु कलाक भी म्वन्अमे, समझ पडे ततकाल ।  
दूरहि ते चुगली करत, ज्यो दर्पण मे बाल ॥

## अज्ञानकृत अनादर

भले बुरे सो एकसी, मूदन की परतीत ।

गुब्जा सम तोलत कनक, तुला पलाकी रीति  
गुण जाने बिन गुणिन को, होत नहीं सत्कार

गज मुक्ता तजि भिड़नी, धारत गुब्जा हार  
अरे हस या नगरमे जैयो आप विचार  
कागनसो जिन प्रीति करि, कोकिल दई बिडार  
अधानी जानत नहीं, गुणिनको सत्कार

जिमि गुलाब गुडहर सुमन, भेदन जान गैवार

साइं घोडे अछत ही, गधहन पायो राज  
कौआ लीजे हाथ मे, दूर कीजिये बाज  
दूर कीजिये बाज, राज पुनि ऐसो आयो  
सिंह कीजिये कैंद स्यार गज राज चढायो  
कहि गिरधर कविराय जहाँ यह बूझ बधाई  
तहाँ नकीजे भोर साम् उठि चलिये माई

राम कवि राजा प्रजा जागे गुण गान लागे,  
सत्रके समाई लहें सार निज घरकी ।  
चक्रवादि पक्षीके विरहके विनाश कारी,  
कमल कुटुम्बको हुलासकी खबरकी ।  
मुद्रिन जहान होत उदित भए तैं जाके,

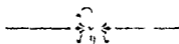
करत प्रकाश न्यथा हरे चगचम्की ।  
 पड़े न दिखाई जो पै तुम्हको उल्लूक-  
 तेरी आसकी खुटाई या खुटाई दिनकर की ।  
 मेहुंड बरूको लगावे जो जतन करि,  
 काटत चमेली चम्पा चदन जुहिनको ।  
 हिंसा करि हस और कोन्विला कलापिनकी,  
 आदर समेत पाले वायम मलिनको ।  
 गये गजराजको समान मान होत जहा,  
 एकमे कपूर औ कपास लगे जिनको ।  
 हमे कमलाकर न देश दिग्गलावे वह,  
 दूरसे हमारे हैं प्रणाम कोटि तिनको ॥

### अज्ञानानन्द

शोष-कोष गुन बन गये, हुई हियेकी धन्द  
 उल्लू खण्डर उजाड़को, समभक्त स्वर्गानन्द  
 जो विषया सन्तन तजी, मूढ ताहि लपटात  
 ज्यो नर डारत वसन कर श्वान स्वादमो खात  
 रहिमन राम न उर धरै, रहत विषय लपटाय  
 पशु खर खाये स्वादमो, गुर गुलियाये खाय  
 करि फुलेलको आचमन, भीठो कहत सराहि  
 चुप कररे गन्धी चतुर, इत्र दिग्गजत काहि

# अज्ञानी परोपकारकी सार नहीं जानता

बुद्धि होन जानत नहीं, परहित कारक रीति  
निज मुखही ने करत है, जिम थालक-कर प्रीति



## अति निन्दा

अति परिचय ते हांत है, अरुचि अनादर भाव  
मलियागिरिकी भीलनी, चन्दन देति जराय  
अति सम्पति दिन पायकै, अति मत करिये फोय  
दुर्योधन अति मान तै, भयौ निधन कुल स्वोय  
अतिही सरल न हृजिये, देखिलेहु धन रात्र  
सीधे सीधे काटिये, वाको तरु बच जाय  
सबको रसमें राखिये, अन्त लीजिये नाहि  
विष निकस्यो अति मथनतै, रत्नाकर हू माहिं  
चोरा चोरी प्रीतिके, कीन्हें' बढत हुलाम  
अति र्नाये उपजै अरुचि, थोरी बात मिठाम  
अति कवटू नहिं कीजिये, किये पाव दुरत मोय  
सुधा सुरस भोजन विमल, अति र्नाये विष होय  
चौपाई

सुन प्रभु बहुत अवज्ञा कीये, उपज कोय ज्ञानिहुके हीये  
अति सघर्षण करै जो कोई, अनल प्रकट चदनते होई

## अनन्य प्रेम

जिन नैननमे पो बसे, आन बसे क्यो आन  
अबाबील घर करत है, सूनो देखि मकान  
प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छवि कहा समाय  
भरी सराय रहीम लग्नि, आप पयिक फिरजाय  
सरवरके रग एकसे, बाढत प्रीत न धोम  
पै मरालको मानसर, एकै ठौर रहीम

## अन्याय डंड

अवगुण करता औरही, देत औरको मार  
जो पहुँचे नहिं रुद्र पै, जारत विरहिन मार  
और करै अपराध कुड, और पाव फल भोग  
अति विचित्र भगवन्त गति, को जग जाने जोग

## अनुचित संतोष

छात्र, छत्र—धर जो कही, कर बैठे मन्तोष  
बढ़े नहीं दिन दिन घटे, विद्याधनका कोष

## अप्रिय सत्य

हितहूकी कहिये न तिहि, जो नर होय अबोध  
ज्यो नकटेको आरसी, होत दिखाये क्रोध  
तोष भरी न उचारिये, यदपि यथार्थ थात  
कहै अन्ध फौँ अधिरो, मान चुरी मनरात

ऋष्टु ऋहि नीच न छेडिये, भलौ न बाको सग  
 पाथर डारे कीचमे उद्धरि विगारे अग  
 रिम उपजावक मय मो, कहिये नही उमाहि  
 दहत रहत जिय अन्धको, कहत अन्ध जो ताहि

### अप्रिय

, मां ताके अवगुण कहै, जो जिहि चाहै नाहि  
 तप्रत, कलकी, विपभरथो, बिरहिन शशिहि कहाहि  
 जाको जह स्वारथ सधे, सोही ताहि सुहात  
 चोर न प्यारी चादनी, जैसी कारी रात  
**अपना दोष कोई नहीं देवता**

, मव देखे पै आपनो, दोष न देखे कोय  
 , करे उजेरौ दीप पै, तरे अंधेरो होय  
 अपने दोष न देखिहै, पर निन्दा विस्तारि  
 ज्यो कुलटा कुलजानको, नहै अपावन नाहि  
**अपना वही है जो सदा साथ रहै**  
 सोई अपनो आपनो, रहे निरन्तर माथ  
 हांत परायो आपनो, शत्रु पराये हाथ  
 नेगी दूर न होत है यह जानो तहकीक  
 मिटत न ज्यो क्योही किये, जो हाथनकी लीक  
 अपना तबतक ही रहे, रहे पीठ असवार  
 ननु घोडा ले चोरको, पहुचत कोम हजार

अपने हितकी बात सबको भली लगनी है

भले लगे सबको कही, कोऊ हिनरुं धन

पिय आगमके कागवच, विगहिनगे सुदर्शन

जो जाके हितकी कहै, मो तारी अभिराम

पिय आगम भागी भली वायम पिच्छिच्छ कण्ठ

कोउ कहै हितकी कहै, ई नार्होप्यं ईन

सबै उडावत कागरो, पं विगहिन कर्ण-ध

कहो मूढ की धानको, करिये जां विदुं ईन

सौह दिवाये औरके, पं कर्ण-ध

अपनी कीरति कान सुन, होत न कर्ण-ध

नाग मत्रके सुनतही, विर-ध

**अपव्ययका अन्तर**

दीप बार ले आजतू, निमग्न ईन कर्ण-ध

काल अंधेगी रातमें, वंश-ध

**अपवाद भङ्ग**

लोकनके अपवाद की, कर्ण-ध

रघुपति सीता परि हरी, कर्ण-ध

**अभयना**

जो चाहै मोई करै, कर्ण-ध

सबके देखत नगन हरि, कर्ण-ध



डरे न कन्ह दुष्ट सो, जाहि प्रेमकी धान  
 'भौर' न छोडे केतकी, तीगरे कटक जान

## अभ्यास महिमा

करत करत अभ्यासके, जड मति हात मुजान  
 रसरी आवत जात तै, सिल पर परत निमान  
 जन्मत ही पावै नहीं, भली बुरी कुड वात  
 बूझत बूझत पाइये, ज्यों ज्यों समझत जात  
 एक एक अक्षर पढे, जाने ग्रन्थ विचार  
 पैड पैड हू चलत जो, पढुचत कोस हजार  
 कठिन कला हू आय है करत करत अभ्यास  
 नट जो चाले बरत पर साथे बरम छ माम  
 कन कन जोरे मन जुरे, काटे निबरे सोय  
 बूढ बूढ ज्यों घट भरै, टपकत बीते तोय  
 यज्ञ और अभ्यास कर, मुशकिल हो आसान  
 अभ्यासी मरते नहीं, कर भारक-विप पान  
 शशि सकोच साहस मलिल, मान सनेह रहीम  
 बढत बढत बढजात है, घटत घटत घट सीम  
 यह रहीम निज मग लै, जन्मत जगत न कोय  
 बँर, प्रीति, अभ्यास, यश, होत होत ही होय  
 बढत बढत सम्पति सलिल, मन संगोज बढ़िजाय -  
 घटत घटत पुनि ना घटे, वरु समूल कुम्हलाय

बनन काज अभ्यास तै, शनै शनै ही सोय

बूढ़ बूढ़ घट भरत है, फन फन मन भर होय

पाय फल अभ्यास तै, दिन अभ्यास न पाय

चल न्यौट्टी पहुची उदधि, न चलै गरुड न जाय

करन मदा अभ्यास जो निश्चयही फल पाय

गिरि गिरि न्यौट्टी भीति तै, अन्त शिखर चढजाय

दुख पाये दिनह कहू, गुण पावत हँ कोय

महै प्रेय बन्धन सुमन, तव गुण मयुत होय

प्रिया गुप्ती भक्ति तै, कै कीने अभ्यास

भील द्रौणके दिन कहे, सीख्यो बान प्रिलास

प्रिया याद किये विना, विमरत इहि उरमान

विगर जात बिन रत्नर तै, ढोली केसो पान

**अभिलाषा पूरी होनेपर दशा**

मन भावनके मिलनको, सुखको नाहिन छोर

बोल उठे नधि नचि उठे, मोर सुनत घनघोर

विरहानल व्याकुल भण, आया प्रीतम गेह

जैमे आवत भाग तै, आग लगेपर मेह

मनभावनके मिलन तै, स्यो मन हो न हुलास ?

मिल मनेह गुण करत है, चारो ओर प्रकास

निज मन भावनके मिले, का को जिय न खिलाय  
दिनकर दर्श निहार कै, खिलत कमल हर्षाय  
मलिन देह वेई वमन, मलिन विरह के रूप  
पिय आगम औरै वढी, आनन ओप अनूप

### अलस निन्दा

साथी मिले जु आलसी, ठनै कर्म सों वैर  
एक पाँव सो जात तब, चलत न दृजो पैर

### असत्य निन्दा

मिथ्या भापी साच ह, कहै न माने कोय  
भाण्ड पुकारै पीर बंश, मिस समरें जग लोय  
अन्तर अँगुरी चारको, साँच भूठमें होय  
सब मानें देखी कही, सुनी न माने कोय  
कबहू भूठी वात को, जो करिहै पछपात  
भूठे सग भूठो परत, फिर पाछै पछतात  
जग परतीत बढाइये, रहिये साचे होय  
भूठे नरकी साचि ह, साखि न माने कोय

### घनाक्षरी

भानु छुप जात अन्धकार के समूह आगे,  
छुपत एशानु अति तृणके गिरायें तैं ।  
विद्या नुप जात है अविद्याके समाज विच,  
शील नुप जात है अशीलके दबायें तैं ।

समवर्ण धातु सग सुवर्ण रजत ह्युपे,  
ह्युपत सुगन्ध दुर्गन्ध नियगयेतै ।  
अन्तमे असत्यको विनाश होत "गमकवि"  
सत्य प्रगटात शुभ कालहुके पाये तै

### अवस्था परिवर्तन

सुख बीते दुख होत है, दुरर बीते सुग्य होत

दिवसगये ज्यो निशउदित निशगति दिवस उवोत  
एक दशा निबहै नहों, नहिं पढतावहु कोय

रविहूकी इरु दिवसमे, तीन अवस्था होय  
घटत थढत सम्पति सुमति, गति अरहटकी जोय

रीती घटका भरत है, भरी सु रीती होय  
जो पावै अतिउच्च पद, ताको पतन निदान

ज्यों तप तप मध्यान लो, अस्त होत है मान  
होत बुरे हू ते भलो, काहू समय प्रकास

अधिक मास तै ज्यो मिट्यो, पाडव फिर बनवास  
सरस निरस नर होत है, समय पाय सब कोय

दिनमें परम प्रकाश रवि, चन्द मन्द द्युति होय  
धनी होत निर्धन बहुरि, निर्धन तैं धनवान

बडी होति निशि शीत ऋतु, ज्यो म्रौपम दिनमान  
तब लागि महिये विरहदुरर, जय लागि आव सुवार  
दुख गये तब सुकर है, जानै सब मसार

जिन दिन देणै वे कुमुम, गई सु वीत बहाग  
अय अलि रही गुलाबमे, अपत कर्दली डार  
इहि आशा अटक्यो रहै, अलि गुलाबके मूल  
अइहै बहुर बसत ऋतु, इन डारन वे फूल  
मरत प्यास पिजरा परथो, मुत्रा दिननक फेर  
आदर दै दै बोलयतु, वाँयस बलिकी वेर

कुण्डलिया

साई अवसरके पडे, कोन सहै दुख द्वन्द  
जाय विकाने डोम घर वे राजा हरिचन्द्र  
वे राजा हरिचन्द्र, करें मरघट रखवारी  
धरे तपस्वी वेप फिरे, अर्जुन बलधारी  
तपै रसोई भौम महाबलि परघर माई  
को न करै घट काम, परै अवसरके साई

छप्पय

कबौ द्वार प्रतिहार, कबौ दर दर फिरत नर  
कबौ देत धन कोटि, कबौ करतर करत कर  
कबौ नृपति मुख चहँत, कहत कर रहत वचन बस  
कबौ दाम लघु दास, करत उपहास जिभ्य रस  
कहु जान न सम्पति गरजिये, विपत न ये उर धारिये  
हिय हार न मानत सत पुरप, 'नरहरि' हरिहि सँभारिये।

## कुण्डलिया

नर वर नयन उधार अब देख गौर करि तौर  
 आज दिवस है और कछु, काल दिवस है और  
 काल दिवस है और, दौर इमि चले रैन दिन  
 कभी रक हो राव, कभी हो राव राज विन  
 कभी मगलाचार, कभी रोवत विलाप कर  
 कभी मोद अरु धूम, कभी हो विकल दुरित नर  
 यह अचल न चल दल सम सदा, दुख सुख माने अज्ञ जन  
 कह 'राम' वीर सुइ धीर नर, इक रस रहत सुधार पन

## घनाक्षरी

पात कर जात द्रुम द्युति ते विहीन होत,  
 आवत बसत दल फूल अधिकारि है ।  
 प्रीप्सकी गरमी अपनात पच भूतन को,  
 पावसके मेघ आ अनत भर लाई है ।  
 केला कटजात डटजात फल पावन तै,  
 तावन तैं सोना गहि लेत सुघराई हे ।  
 रामकवि काहेको विनाश मन मूढ़ होत,  
 होयेगा हुलास दुख दारुण विताई है ।

## हरि गीत

ससारमे किसका समय है एकसा रहता सदा  
 है निशि दिवा सी धूमती सर्वत्र विपदा सपना

जो आज एक अनाथ है नरनाथ कल होता वही  
 जो आज उत्सव मग्न है कल शोकसे रोता वही  
 उन्नत रहा होगा कभी जो हो रहा अवनत अभी  
 जो होग्या अवनत अभी उन्नत रहा होगा कभी  
 हँसते प्रथम जो पद्म है तम पद्मे फँसते वही ।  
 मुरभे पडे रहते कुसुम जो अन्तमें हँसते वही  
 उन्नति तथा अवनति प्रकृतिका नियम एक अरएण्ड है  
 चढता प्रथम जो व्योममे गिरता वही मार्तण्ड है  
 अतएव अवनति ही हमारी कहरही उन्नति कला  
 उत्थान ही जिमका नही उमका पतन हो क्या भला  
 उत्थानके पीछे पतन सभव सदा है सर्वथा  
 प्रौढत्वके पीछे स्वय वृद्धत्व होता है यथा  
 हों । किन्तु अवनति भी हमारी हे समुन्नति सी बढी  
 जैसी बढी थी पूर्णिमा वंसी अमावस्या बढी  
 है नेचरलका नियम यह चलना हमेशा चाल पर  
 इसही तिये रहता नहीं है कोई यकसा हाल पर  
 नीचे पडेको है उठाता प्रेम-से पुचकार कर  
 ऊचे चढेको हे गिराता मार थप्पड गाल पर

### गीतिका

कल जिमे देखा था बैठा शहनशाही तरत पर  
 आज वो बैमल पंडा रोता उमीने सस्त पर

अब जिसे तुम हो हिकागतकी नजर से देखत  
देखलेना कल उसीको नाज करते वस्तपर

सबैया

रेमन साहसी माहस राग्य सुसाहससे सब जैर फिरंगे  
त्योपदमाकर या सुखमे दु ख त्या दुखमेसुखमेर फिरंगे  
वैमेहि बेन बजावत श्याम सुनाम हमारेहि डेर फिरंगे  
एक दिना नहि एक दिना कबहू फिर वे दिन फेर फिरंगे

छप्पय

व उठते भी हैं अवश्य ही, जो गिरते हैं

दुर्दिन के ही वाद, सुदिन मन्के फिरते हैं

देखे दारुण दु ख, वही नर फिर सुख पावे

अवनतिके उपरान्त, घड़ी उन्नतिकी आगे

रवि रात बीतने पर प्रगट, होते प्रात समयमे

वस यही मोचकर आपभी, धीगज रखिये हृदयमे

होता प्रथम वसन्त, ग्रीष्म ऋतु फिर आती है

चले पसीना अग, आग सी लग जाती है

पत्ते फल या फूल, बिना जल जलजाते हैं

पशु पक्षी भी घोर धाममे घनराते हैं

फिर शीघ्र देखते देखते, हरीभरी होती मही

आजाती वर्षा ऋतु भली सुख देती तत्काल ही



कवियोंका सर्वस्व, स्वर्ग की शोभा भारी

शिवके भी सिर चढा, और आकाश बिहारी

अमृत सहोदर चन्द्र, कला जब घटने लगती

तब होता है क्षीण, और श्री लटने लगती

वह किन्तु शीघ्र ही पूर्ण हो, होता है फिर-अभ्युदय

है ठीक नियम यह प्रकृतिका, परिवर्तन हों हर समय

इतने बड़े अनन्त तेजकी, राशि दिवाकर

तपते तीनों लोक बीच पूजित हो घर घर

किन्तु समय पर राहु उन्हें ग्रस लेता जाकर

कुछ कर सकते नहीं, हजारों यद्यपि हैं कर

वह पहले होता अस्त या प्रस्त समस्त प्रभा रहित

फिर होते मुक्त प्रकाशसे युक्त पूर्वमे अभ्युदित

जीव मरण के बाद जन्म पाता है देखो

कृष्ण पक्षके बाद, शुक्ल आता है देखो

चलती है हेमन्त हवा, जब जोर दिखाती

तब होता पतझाड, न पत्ती रहने पाती

फिर वही वृक्ष होते हरे, नव पल्लव शोभित सभी

वस इसी तरह होंगे सुर्गा, उन्नति युत हमभी कभी

सवैया

कवहू तो घटा धनघोर उठै, कवहू नहीं नेऋहु यादर है

कवहू जग मे सनमान बडो, कवहू घर माफ न आदर है

कवहू नन शाल दुशाल घने , कवहू सिरपै नहिं चादरहै  
मन राम भजो जिय सोच न जी , यह काठिरकी गति नादरहै

### आत्मश्लाघा

आपहि कहा वरदानिये, भले बुरे को जोग  
ऊठे घन की घात को, कहैं बटाऊ तोग  
आत्म प्रशसासे मिलत, नेकहु मान न मोद  
निज कर कुच मीडे बधु, लहत न मदन विनोद  
यहक वडाई आपनी, कत राचत मति भूल  
बिन मधु मधुकरके हिये, गडे न गुडहर फूल  
कहत निपुणई गुण विना, रहिमन निपुन हजूर  
मानो टेरत त्रिटप चढि, मो समान को कूर  
निज मुख निज कीरति कथा, वरनत ओछे लोय  
जिमि खाली घट करत ख, मौन सपूरण होय  
भूठे हू हे भूढ नर, निज कीरति करि गान  
स्यो गुणि जन की नजर में , नर ते वनत हवान

### आयु परिमाण

धर्म कर्म कर जान के, जीवन को अति अल्प  
विद्या, धन, सचन निपय , आयु मान शत कल्प

### आश्रय प्रशंसा

पडित वनिता अर लता, शोभित आश्रय पाय.  
है मानिक बहु मोल को, हेम जटित छवि छाया

बिन आश्रय सोभित नहीं, पडित, लतिका, नार  
 मणि माणिक्य बहु मूल्य है, वे भी हेमाधार  
 घनाक्षरी

चतुर गवैया होय वेद को पढैया होय

समर लडैया होय रण भूमि चौडी मे  
 जानत समैया होय मोर कवि त्योही चाहे

बात को जनैया होय नैनकी कनौडी मे  
 नीति पै चलैया होय पर उपकार आदि,  
 कुशल करैया काज हाथकी हथौडीमे

गुनन को शीला होय तौऊ न वसीला बिन,  
 कोऊ हो पुछैया भैया तेहि तीन कौडीमें

**इनसे बचो**

पाप मूल जग लोभ है, व्याधि मूल मद पान  
 दुख मूल अज्ञान है, तीनों त्याग सुजान  
 पर - मेवा सब सुख हरत, परनारी धन प्राण  
 कीर्ति हनत पर अन्न नित, विप्र द्वेष कल्याण.

**ईश्वरको सबकी चिन्ता है**

प्रभुको चिन्ता सबकी, आपुन करिये नाहि

जन्म अगाऊ भरत है, दूध मात थन माहि  
 एक एकके नामको, रचि राखै जगदीस

जैसे भरिये पेट को, सबको निहुरै मीम

जिहि जेतो निहचै तितौ, देत देव पटुचाय  
 सक्कर खोरे को मिलै, जैसे सक्कर आय  
 यथा योग सब मिलत है, जो त्रिधि लिख्यो अँकूर  
 रत्न गुर भोग गँवारनी, रानी पाय कपूर  
 अमर बेल बिन मूलकी, प्रति पालत है ताहि  
 रहिमन ऐसे प्रभुहि तज, खोजत फिरिये काहि  
 काम कट्ट आवै नही, मोल न कोऊ लेइ  
 बाजू टूटे बाजको, साहिय चारा देइ  
 रहिमन कोऊ काकरै, ज्वारी चोर लवार  
 जो पति राखन हार है, माखन चाखन हार  
 अजगर करै न चाकरी, पत्नी करै न काम  
 दास मल्लूका यों कहें, सबके दाता राम  
 सबैया

दात न थे तव दूध दियो, जब दात दिये तो अनाजहि देई  
 जीव बसै जलमे थलमे, तिनकी सुवि लेइ सो तेरीहु लेई  
 जानको देत अजानको देत, जहानको देत सो ताहूको मेई  
 क्यों अब सोच करे मन मूरख, स च करे ऋतु आज न देई

दोहा

प्रलय करन बरसन लगे, जु रि जलधर इक साथ  
 सुरपति गर्व हरो हरपि, गिरिधर गिरि धर हाथ

## उद्यम महिमा

हलन चलनकी शक्ति है, तबलो उद्यम ठान  
 अजगर लू मृगपति बदन, मृग न परत हैं आन  
 विद्या धन उद्यम विना, कहिये पावत कौन  
 विना डुलाये ना मिले, ज्यों पराकी, पौन  
 श्रमही ते सब मिलत है, विन श्रम मिले न काहि  
 सीधी उ गुली धी जम्यो, क्योहू निकलौ नाहि  
 उद्यम बुधि बल से मिलै, तब पावत सुख साज  
 अध कध चढि पगु ज्यो, सबै सुधारत काज  
 प्रेरकही तें होत है, कारज सिद्धि निदान  
 चढे धनुष हू ना चले, विना चलाये दान  
 विन उद्यम मसलत किये, कारज सिद्धि न ठाय  
 रोग न जानत औपधी, जान राय तो जाय  
 गुनी होय श्रम कष्ट करि, लहै राज दरबार  
 धीध बंध मुक्ता सहै, तब उर हार विहार  
 चले पिपिलका जो सदा, समुद्र पार हूँ जाय  
 जो न चले तो गरुड हूँ पैड हूँ चले न पाय  
 भयो विमुक्त न ज्ञान सो, कर्म हीन नर कोय  
 विन राये मधु बोधसो, मुख मीठो नहिं होय  
 मुख में भोजन निकटको, विन उद्योग न जाय  
 बद्धरा थन रीचे विना, पियत न दूध अघाय

दिन उद्यम नहीं पाइये, कर्म लिल्यो है जौन  
 दिन जलपान न जात है प्यास गग तट भौन

### घनाक्षरी

सामिलमें पीरमें शरीरमे न भेद राखै,  
 हिम्मत कपटको उधारै तो उधर जाय ।  
 ऐसे ठान ठानै तौ बिनाहृ जन्त्र मन्त्र किये,  
 सापके जहरको उतारै तो उत्तर जाय ।  
 ठाकुर कहत कहु कठिन न जानो अब,  
 हिम्मत कियेते कहो कहा न सुधर जाय ।  
 चार जने चारहू दिशाते चारों कोन गहि,  
 मेरुको हिलायकै उरारें तो उरर जाय ।  
 जाते हैं समुद्र वध रहते न अद्रि अडे,  
 अग्नि, जल, वायु आदि हुफम उठाते हैं ।  
 हुफम उठाते है उमग भरे वीर वीर,  
 होते धन धान्य शाह मस्तक नवाते हैं ।  
 मस्तक नवाते हैं जगतके सफल लोग,  
 गिरधर मूर्ति निज हिय में बिठाते हैं ।  
 हिय मे बिठाते है त्यों महिमा पराक्रम की,  
 पौरुष दिग्वापे क्या क्या काम हो न जाते हैं ।

## उदरपोषण, पेटस्तोत्र सहित

उदर भरनके कारणे, प्राणी करत इलाज  
 नाचै थाचै रनभिरे राचै काज अकाज  
 दुर भर उदर दरीनके, होत न नन संताप  
 तो जन जनकी को महत तरजन गरजन ताप  
 करी उदर दुड भरन भय, हर अग्धंगी दार  
 जोन होयती क्यो रहे, अबलो तनयकुमार  
 उदर वग्न नरतै भलौ, राहु उदर तै हीन  
 रुवह नाहिन होत है, जन जनको आधीन  
 भरत पेट नट निरत कै उरत न करत उपाय  
 धरत धरत परयाय अरु, परत वरत लपटाय  
 दीन धनी आधीन है, मीम नचावत काहि  
 मान भग की भूमि यह, पेट दिखावत ताहि  
 रूपे सूपे उदर को, भरे होत संतुष्ट  
 राम न लारु करोर के, पाये तुष्ट न दुष्ट  
 एक एकसों लग रहे, अन्नोदक सबन्ध  
 चोली दामन ज्यो रच्यो, जगत जजीरा बन्ध  
 रहिमन कहत सु पेट सो क्यो न भयो तू पीठ  
 रीतै अनरीतै करत, भरे विगारत दीठ  
 बडे पेट के भरन मे, है रहिमन दस बाढ...  
 गजके मुख विधि.

नहि रहीम कुछ रूप गुण, नहिं मृगया अनुराग  
 देशी श्रान जु राखिये, भ्रमत भूरुही लाग  
 गगन चढै फिर क्यों गिरै, रहिमन बहरी बाज  
 फेर आय बन्धन परै, पेट अधम के काज

## पेट स्तोत्र

नमामि पेट नमामि पेट पेट प्ररमाराध्य प्रभी  
 पाडे पानी पाडे बनते, चौबेजी चपरास पहनते  
 हेत तुम्हारे शुद्ध भिखारी, अद्भुत महिमा बडी तुम्हरी  
 नमामि पेट नमामि पेट पेट०  
 द्वार पाता है बने द्विवेदी, तेल बेचते बठ त्रिवेदी  
 बने मिश्रजी जमादार है, गाँव कैसे गुण अपाग हैं  
 नमामि पेट नमामि पेट पेट०  
 बिडी बनाते है साड जी, बडी बेचती है वाईजी  
 पाठक बेचें दोतीजोडा, जो कुछ आप कर मो थोडा  
 नमामि पेट नमामि पेट पेट०  
 तज हथियार तराजू धारी, जत्री धन बैठे पनसारी ।  
 त्याग बेचना जीरा, धनिया बने कान्स्टेबरा हैं बनिया ।  
 नमामिपेट नमामि पेट पेट०  
 दुरा दाई चपेट तब खाके, भस्म रमाके जटा बढाके ।  
 कई शुद्र दुब्यसनी पाजी, बन बैठे जग मे घाना जी ।  
 नमामि पेट नमामि पेट पेट०



## उदरपोषण, पेटस्तोत्र सहित

उदर भरनके कारणे प्राणी करत इलाज  
 नाचै घाचै रनभिरै राचै काज अकाज  
 दुर भर उदर दरीनके, हांत न तन संताप  
 तो जन जनकी को महत तरजन गरजन ताप  
 करी उदर दुइ भग्न भय, हर अग्धगी दार  
 जोन होयती क्यों रहे, अवलो तनयकुमार  
 उदर धरन नरतें भलौ, राहु उदर तें हीन  
 कबहू नाहिन होत है, जन जनको आधीन  
 भरत पेट नट निरत कै, उरत न करत उपाय  
 धरत वरत परयाय अरु, परत वरत लपटाव  
 दीन धनी आधीन है, मीस नवावत काहि  
 मान भग की भूमि यह, पेट विखावत ताहि  
 रुखे सूर्ये उदर को, भरे होत सतुष्ट  
 राम न लाख करोर के, पाये तुष्ट न दुष्ट  
 एक एकसों लग रहे, अन्नोदक सधन्ध  
 चीली दामन ज्यो रच्यो, जगत जजीरा बन्ध  
 रहिमन कहत सु पेट सों, क्यों न भयो तू पीठ  
 रीतै अनरीतै करत, भरे विगारत दीठ  
 चडे पेट के भरन में, है रहिमन दुख बाढ  
 गजके मुख विधि याहिते, दिये दात द्वै काढ

तोभी होतीहै तब पूजा, कौन समर्थ आपसा वृजा

नमामि पेट नमामि पेट पेट०

प्रात काल नीच खुलती जब, मनोवृत्ति जागृत होती तब

याद आपकी ही आजाती, शीघ्र दृष्टि हठी पर जाती

नमामि पेट नमामि पेट पेट०

जन्मकालमें जीवन भर तरु, उपाकालमें अर्द्ध रात्रि तरु  
लेकर मनमें विविध वासना, करते सब नित तब उपासना

नमामि पेट नमामि पेट पेट०

वर न जो नित तब आराधन, महा मूर्ख पापी बह दुर्जन

शीघ्र अवज्ञा फल पाताहै, कुछ दिन ही में मर जाता है

नमामि पेट नमामि पेट पेट०

जगमें तब ऐसी है महिमा, ऐसे हैं प्रताप गुण गरिमा

बड को पीपल कहना पडता, सालेको प्रभु कहना पडता

नमामि पेट नमामि पेट पेट०

कई आप हित ऐसे मरते, चमरो को सलाम नित करते

कई पीटते यश का भेरी, करते नीच द्वार पर फेरी

नमामि पेट नमामि पेट पेट०

तुम्ही दुखो से भेट कराते, तुम्ही अनेक चपेट खिताते

जड लेखिनी कहा तक गाते, जग जीवो की कौन चत्तारे

यक्ष रक्ष सिद्धादिक किन्नर, सुर तरु भी रखते हैं तब डर

नमामि पेट नमामि पेट पेट०

पृथ्वी भरके सकल जीव गण, साहिब बाबू सेठ महाजन  
लगा रक से महाराज तक, सभी आपके हैं आराधक  
नमामि पेट नमामि पेट पेट०

सिर पै टोपी तन में कुर्ता, न हो भलेही पग में जूता  
आप भरे हैं तब क्या कहना, बहता सदा शान्तिका भरना  
नमामि पेट नमामि पेट पेट०

तब चिन्ता निज मनमे धारे, भूक प्यासकी दशा विसारे  
प्रति दिन प्रति क्षण हेतु तुम्हारे, फिरते हैं सब मारे।मारे  
नमामि पेट नमामि पेट पेट०

किसिको पर धर्मा बनवाया, किसिको लन्दन तक पहुँचाया  
किसिको वाघम्वर पहनाया, सबको तुमने नाच नचाया  
नमामि पेट नमामि पेट पेट०

लिये तुम्हारे लोग भगडते, पैर पकडते नाक रगडते  
एठ छोडते हाथ जोडते, आस फोडते पैर तोडते  
नमामि पेट नमामि पेट पेट०

ज्ञान तभीतक ध्यान तभीतक, ईश्वरका गुण गान तभीतक  
रहते भरे आप हैं जबतक, खाली में है खाली बक बक  
नमामि पेट नमामि पेट पेट०

स्थिति अनुसार भक्त गण अर्पित, लेख चौप्य पेयादिक चर्चित  
नित नै वेद्य ग्रहण करते हो, तोभी खाव खांव करते हो  
नमामि पेट नमामि पेट पेट०

घरमें कोई भी मरजाये, रोना धोना भी मचजाये

धन रहैमि जल पकको, लघुजिय पियत अघाय  
उदधि बडाई कोन है, जगत पयामो जाय  
नम्र विटप सब फल भरे, रहे भूमि तियराय  
पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहि सु सम्पति पाय  
चौपाई

पर हित सरिस्त धर्म नहि भाई, पर पीडा सम नहि अधमाई  
पर हित वश जिनके मनमाहीं, तिन्ह कह जग कछु दुर्लभनाहीं  
दोहा

वनी कृपण ते होत कथ, निग्रन उदारहि सीस  
वो न दे सके तनिक धन, ये परहित दे सीस

### उपकारकी ढाल

निन्दक हैं जो दुष्ट जन, कर उनपर अहमान  
टुकडा आगे डालदे, फिर नहि भोके शान

### उपाय

पूरे साधन के बिना कारज मधै न थीर  
ओछी डोरी कृपमो, नैक न कादत नीर  
जो पहिले कौजै यतन, मो पाछे फल दाय  
आगि लगै गोदें कुजा, कसे आग बुभाय  
होत न कारज घडन ते विधियत निना उपाय  
अजन चलत न नेफह भाप भरे धिन भाय

मैंने स्तुति की है तब ऐसी, की होगी न किसीने जैसी-  
बस बरदान यही मैं पाऊँ, तेरा दुःख कभी न उठाऊँ

नमामि पेट नमामि पेट पेट ०

दोहा

अरे पेट धिक्कार है तो को वार हजार  
गुणि जन को निदरत फिरत, फिर फिर द्वार गवार

### उदारता

श्रुति उदारता बडन की, कहलो बरनै कोय  
चातक याचै तनक जल, बरस बरै घन तौय,

### उपकार

उपकारी उपकार जग, सबसो करत प्रकास

ज्यो कटु मधुरे तरु मलय, मलयज करत सवास  
जे उदार ते देत हैं, रीभक्त जिहि तिहि चाल

गाल बजाये हू करै, गौरी कन्त निहाल  
जो सब ही को देत है, दाता कहिये सोय

जल धर वर्षत सम विपम, थल न विचारे कोय  
भलेबुरे हू सो करत, उपकारी उपकार

तरुवर छाया करत है, नीच न ऊच विचार  
बड़े दीनके दुख सुने, लेत दया उर आन

हरि हाथी साँ कब हुती, कहू रहीम पहिचान

धन रहीम जल पकको, लघुजिय पियत अधाय  
उदधि बडाई कोन है, जगत पयामो जाय  
नम्र विटप सब फल भरे, रहे भूमि तियराय  
पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सु सम्पति पाय  
चौपाई

परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीडा सम नहिं अधमार्थ  
परहित वश जिनके मनमार्ही, तिन्ह कह जग कछु दुर्लभनाही  
दोहा

धनी कृपण ते होत कब, निधन उदारहि रीस  
बो न देखे सके तनिक धन, ये परहित ते सीस

### उपकारकी ढाल

निन्दक हैं जो दुष्ट जन, कर उनपर अहमान  
टुकडा आगे डालदे, फिर नहिं भौके शान

### उपाय

पूरे माधन के बिना, कारज सर्वे न बीर  
ओछी डोरी कृपणो, नैक न काढत नीर  
जो पहिले कीजै यतन, सो पाछे फल दाय  
आगि लगै खोदे कुत्रा कैसे आग बुभाय  
होत न कारज घडन तै विधिवत बिना उपाय  
अजन चलत न नेकह, भाप भरे विन भाय

नाको अरि का फर सकै, जाको जतन उपाय

जरै न तांत रेतसो, जाके पनहै पाय

जोरावर अरि मारिये, बुधि बल किये उपाय -

काल यवन को कृष्ण ज्यो, पट मुचकन्द उदाय  
छल बल धर्म अधर्म करि, अरि साधिये अभीत

भारत में अर्जुन किसन, कहा करी युध रीत  
सुर दिराय दुर दीजिये, रल सो लरिये नाहि

जो गुड देने ही मरै, क्यो विप दीजे ताहि  
भूठे ही करिये जतन, कारज विगडे नाहि

कपट पुरुष धत खेत पर, देख मिरग भगजाहि  
छोटे अरि को साधिये छोटा करि उपचार

मरै न मूसा सिंह पे, मारे ताहि मजार  
जोरावर हू को कियौ, विधि वग करन इलाज

दिपत मही अकुस गजहि, जल निधि तरन जहाज

**ऊंचा पद सार हीन है**

ऊंचे पद की लालसा, नारायण दे त्याग

फीको फीको सो लगन, उग्र उपरी भाग  
नामवरी जिन की नहीं, होत न वे बदानाम

लकडी की तलवार पर, कहा किट्टू को काम  
बड माया को दोष यह, जय कबहू घट जाय

नौ ' गहीम ' मरिबो भलो, दुग्न सुग्नजिये बत्ताव

## ऋणी

उत्तमर्ण के सामने, होत ऋणी द्युति हीन

जिमि दिनकर के सामने, हिम कर कान्ति मलीन

मिले एक हू छाक में, जाहि न पुष्कल अन्न

पर सो ऋणी न होय तो, रहे सदैव प्रसन्न

लेन हार सनमुख भये, देन हार द्युति दीन

राहु केतुके सामने, ज्यो शशि रवि श्री हीन

## ऐक्य

जुटे न जैमे ताहत है, मिले विरगत सग

काथ पूग चूना पडत, होत लाल मिल रग

बहुतन को न विरोधिये, निबल जान बलवान

मिल भगि जाहि पिपीलका नागहिं नग के मान

बहुत निबल बल मिल करें, करें जु चाहे सोय

तिनकन को रसरी करी, करी निबन्धन होय

मितारे ते मुख मिलत है, निहचै मान वचन

बने रमोई जो मिले, आग इधन जल अन्न

दोऊ चाहे मिलन को, तो मिलाप निर्धार

कबहू नाहीं बाजि है, एक हाथ से तार

दुर्बल हू बलवान हो जो गठ जाय समाज

बोटे तृण मिल गुण बने, बाधत हैं गजराज

“मैं मैं तू तू ने किया, आपस में मत भेद



हम को सदा प्रयोग करः कभी न उपजे खेद  
प्रीत रीत सन मे भली, वैर न हित मित गोत

रहिमन याही जनम की, बहुर न सगति होत  
एक नहीं कुछ कर सकत, यदपि होय छवि गेह

बिन सनेह गुण हीन है, गुण बिन हीन सनेह  
घनाक्षरी

बुन्दन मिलाप ही सो भरिजात वारधीश,  
करि को निबन्ध होत तिन के मिलान है ।

पड पड पैसा होय जात है खजाना पूर,  
वर्ण वर्ण सीरे नर होत विद्वान है ।

एक एक जररा जुगि गिरि को अकार होत,  
मानुष जुरे तो होत दल का विधान है ।

राम कवि विविध विचारों से विचार देखा,  
एकताइ एकै मुख सम्पत् की खान है ।

बाधे जात वारिधि हिमालय को हिलायो जात,  
अग्नि जल वायु नित हुकम उठाते हैं ।

ऐरावत नाचै निज पीठ पै चढावै शेर,  
महा बलकारी खौफनाक खौफ खाते हैं ।

सम्भव होजात जिसे भापै असम्भव जग,  
सकल पदार्थ बिन मागे घर आते है ।

राम कवि देखाहै विचार कर बार बार,  
एक एकता से सब काम बन जाते हैं ।

## ऐश्वर्य मद

धन घाटे मन बढ गयो, नाहिन मन घट होय

ज्यो जल सग बाढे जलज जल घट घटे न सोय

धन अरु जोवन को गरव कबहु करिये नाहि

देखत ही मिट जात है, ज्यो बादर की छाहि

धन गुण जोवन रूप मद, दुरै न एको सच

ज्यो हासी रासी बहुर, रोके रहत न रच

देखत है जग जात है, तउ ममता से मेल

जानत है या जगत में, देखत भूलो खेल

थोडा धन चिन्ता हरै, बहुत करै मति भग

उद्धरे नीर न कुम्भ मे, नद में भरे तरंग

रहिमन कबहु बडन को, नहीं गर्व को लेश

भार धरै ससार को, तउ कहावत शेष

कुण्डलिया

दौलत पाय न कीजिये, सपने में अभिमान

चचल जल दिन चार को, ठाय न रहत निदान

ठाय न रहत निदान, जियत जग में यश लीजै

मौठे बचन सुनाय, विनय सत्रहीमो कीजै

कहि गिरधर कवि राय, अरे ! ये सब घट दौलत

पाहुन निशानि चार, रहत मय हो के दौलत

दोहा

कनक कनक तै सो गुनी, मादकता अधिकत -  
उहि राये वौराय जग, इहि पाये वौरात

### ओछे की प्रीति

ओछे नर की प्रीति की दीनी रीति बताय,

जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घट जाय

बिन बूभे ही जानिये, बुध मूरख मन माहि

छलकत ओछे नीर घट, पूरे छलकत नाहि

बिनसत बार न लागई, ओछे नर की प्रीति

अम्वर डम्वर साभ के, ज्यो बालू की भीति

ओछे नर के पेट मे, रहै न मोटी घात

जैसे सागर को सलिल गागर मे न समात

ओछे नर के चित्तमे, प्रेम न पूरियो जाय

आध सेर के पात्रमे, कैसे सेर ममाय

बचन रचन कापुरुष के, कहे न छिन ठहराय

ज्यो कर पद मुख कछप के, निकस २ दुग जाय

### जमा शक्ति

नर भूपण सब दिन जमा, विक्रम अरि घन घेर

ज्यो तिय भूपण लाज है, निलज सुरति की बेर

होत जमा करवाल मों, रिपु को नष्ट घमट

घडे न कहर भूमि में, पावक पुञ्ज प्रचंड

गारी गाय असीम दे, कर अनिष्ट को इष्ट

खारी जल खादर गहे , घरसाने करि मिष्ट  
दुष्ट जनो के कोप पे, कोप करो मत वीर !  
आग न आग बुझा सकै, ताहि बुझावत नीर

## जुद्ध अगुवा से हानि

पाय क्षुद्र अगुवा घटे, पिछलगुवो की लार  
चलत मुई की गैल गहि, रखै सूत का तार

## कठिन दुःख

चौपाई

-यद्यपि जग दारुण दु ख नाना, सबते कठिन जाति अपमाना

## कपटी

ऊपर दरमै सुमिता सी, अन्तर अन मिल आक  
कपटी जन की प्रीति है, रीरा की सी फाक  
देवत को सुन्दर रागे, उर में कपट विपाद  
इन्द्रायन के फरान सम भीतर कटुक मवाद  
मु पर मीठी बात है, मन की रूचि प्रतिमूल  
कुम्भ पयो मुख विष भग्धो, ताहि विलोकि न भूल  
सन्मुख मुख मीठो वचन, पीठो कारज दूर  
दीठो मीत दुराय अम, कचन घट विष पूर  
हृदय कपट बरनेष धर, वचन कहै गदि छोला  
अबके लोग मयूर ज्यो, क्यों मिलये मन ग्योत

मित्र मित्र मां प्रीति कर, हृदय आन मुख आन  
जाके मन बिच प्रेम नहिं, दुरे दुराये जान  
सोरठा

तुलसी देख सुवेप, भूले मूढ न चतुर नर  
सुन्दर केकी पेप, वचन सुधासम अशान अहि

चौपाई

आगे कह मृदु वचन बनाई, पाछे अनहितमन कुटिलाई  
जाकर चित अहि गति समभाई, अस कुमित्र पर हरे भलाई  
मन मलीन तन सुन्दर कैसे, विपरसभरा कनक घट जैसे

घनाक्षरी

मीठी मीठी बात एक पल को न छोड़े साथ  
वचनो की चातुरी से नेहमे सने रहे ।  
पैज कर कहत मरैगे सग तेरे मीत ।  
रैन दिन ऐसे बैन इनके घने रहे  
लागी जब घात हाथ साफ करि बैठे जाय,  
कुज जो थे नैन सोई वाण सां हने रहे ।  
कलिके कुमीतन की राम कवि देखी रीत,  
बातनमें वैरी, मुख अपने घने रहे ।



## कृपण निन्दा

खाय न खरचै सूम धन, चोर सबै लैजाय

पीछे ज्यो मधु मन्छिका, हाथ मलै पछताय

बह सम्पति किहि कामकी, जो काहू पै होय

नित्त कमावै कष्ट सहि, विलसे औरहि कोय

कृपण धनीको जगतमे, दड दियो है राम

भोजन आगे धर मनो, मुखमे दई लगाम

त्यागी कहिये कृपण को, गहत न कौडी साथ

लेत न कनु परलोक हित, रमता रीते हाथ

जेती सम्पति कृपणकी, तेती तू मत जोर

बढत जात ज्यो ज्यो उरज, त्यो त्यो होत कठोर

### घनाक्षरी

देखतके वृन्दनमे दीरघ सुमाय मान,

कीर बस्यो चारिये को प्रेम जिय जग्यो है ।

लाल फल देख कै जटान मडरान लागे,

देखत बटोई बहुतेरो डगमग्यो है ।

गग कवि फल फूले भुआ अधिरान लखि,

सबन निराश है के निज घर भग्यो है ।

ऐसे फल हीन वृन्द वसुधामें मये यारो,

सैमर विसामी बहुतेरन को ठग्यो है ।

## कहने और करनेमें अन्तर

कहिवो कछुकरवो कट्ट, है जगकी विधि दोय

देखन के, अरु खान के, और दुरद रू होय  
आप कहै नाहीं करै, ताकौ है ये हेत

आप जाय नहिं, सासुरै, औरन को सिध देत  
मान करहु जेकर मऊह, कथनी अरुथ अपार

कथे न करकछु आवही, करनी कर तव सार  
चले न निज उपदेश पर, तासां होय न हेत  
बुरे बतावत और को, खुद बैगन खालेत

### चौपाई

पर उपदेश कुशल बहुतेरे,  
आचरही ते नर न घनेरे

### घनाक्षरी

जीवन सुधार होत बन्धन विनश जाय,  
जाहुके क्रियेसे मन पावत विश्राम है ।  
जैसा कुल्ल वेद शास्त्र देत उपदेश तोहि,  
जानत है सत्य मन मानत मदाम है ।

बचन बनाय निज चातुरी जनाय नित्य,  
रैन दिन ऐसे ही तू करत कलाम है ।  
चल्यो पै न आप तिम मार्ग पर एक क्षण,  
विषयोंका दास अति भूठा कवि रामहै ।

औरोको बतावत है भजो भगवानजू का,  
 भजता है आप पर नित्य काम काम तू ।  
 औरोको सुनाये तज दीजे लोभ मोह आदि,  
 हुआ पर आप लोभ माहका गुलाम तू ।  
 बुरी है पराई निन्दा कह कह जनावे है,  
 निन्दायुत निन्द्य पर करता कलाम तू ।  
 मानुषीय जन्म है अमोलक, बरमान फिर,  
 सोवत है ताको अरे। भठे कवि राम तू ।

### कहनेसे सुनना अच्छा

दूना सुन आधा कहो, सीखो प्रकृति विवेक  
 कान दिये दो ईशने, बाणी बकसी एक

### कही बात पराई

पावत बहुत तलाश नहीं, कर तै टूटी बात  
 आधी मे टूटी गुडी, को जाने कित जात  
 गूढ मन्त्र जौलो रहे, करै जु मिलि जन दोय  
 भई छफानी बात जय, जान जात सबकोय  
 गूढ मन्त्र गरुजे विना, कोउ राखि सकैत  
 कनक पात्र बिन और मे घाघिन दूध रहै न  
 बात बही अपनी समझ, जो नहीं हुई बयान  
 तोर न आपत हाथ फिर, जो तजि गयो कमान



## कुण्डलिया

साइं अपने चित्तकी, भूलि न कहिये कोय

तब लगि मतमें रागिये, जब लगि कागज होय

जब लग कारज होय, भूलि कन्हू नहि कहिये

दुर्जन हमें न कोय, आप मियरे हो रहिये

कहि गिरधर कविराय, बात चतुरनके ताइं

करतूनी कहिदेत, बात कहिये नहिं साइं

सनेया

बोधा किसीको रुहा कहिये सां विथासुन पूर रहै, अरगाइके

याते भलां मुख मौन धरै, उपचार करै कहु औसर पाइके

ऐसो न कोऊ मिल्यो कन्हू, जो कहै कछु रच दया उर लाइके

आवतुहै मुखलो बढिकै फिर पीर रहे, या सरीर समायके

## कायर निन्दा

कायर नरको देखि रन, मुख फीको दरसाय

काचो रग ज्यो धूपमे, भटक चटक उडिजाय

कायर मन उडिजात है, सुन कर रनकी बात

बात लगे काफूर ज्यो, धिर फिर पल न रहात

## कार्य कसौटी

काम परैही जानिये, जो नर जैमो होय

धिन ताये खोटो गरो गहनो लहै न कोय

सब कोऊ सबको करै, राम जुहार सलाम

हितु अनहितु तब जानिये, जादिन अटके काम

काज पडै सबही बडा विन कारज सब छोट  
पाई हेत भजानते, रुपिया मोहर नोट  
रहिमन बिपना तू भली, जो थोरे दिन होय  
हितु अनहितु या जगतमें, जान परै सब कोय  
देत दया निधि तनिकु दुख, या दिन तुहि अनजान  
जान जाय या जगतमें, को अपनो को आन  
चौपाई

धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपतकाल पररिये चारी  
कसे कनक मणि पागम पाये, पुरुष पररिये समय सुभाये

## कुछ नहीं

छपय्य

न कह्यु क्रिया विन विप्र, न कहु कायर जिय छत्री  
न कह्यु नीति विन नृपति, न कह्यु अन्दर विन मन्त्री  
न कहु वाम विन धामु न कहु गग विन गरुआई  
न कहु कपटको हेत, न कहु मुग्न आप बडाई  
है न कह्यु दान सन्मान विन, न कहु सुभोजन जामुदिन  
जन सुनो मरुल नर हरि कहत, न कह्यु जन्म हरि भक्ति विन  
समि विन सूनी रैन, ज्ञान विन हिरदै सूनो  
कुल सूनो विन पुत्र, पत्र विन तरवर सूनो  
गज सूनो इक दत, ललित विन सायर मृनो  
विप्र मून विन वेद और दल पहुष निहूनो

हरिनाम भजन विन सत अरु घटा सून धिन दामिनी  
 वैताल कहें विक्रम सुनो, !पति विन सूनी कामिनी

### कुत्सित कार्पण्य

विद्या दान न जेत है, जो परिडत पन धार  
 छागी गल धनमे वृथा, तिनके जन्म असार

### कुपुत्र निन्दा

कुल कपूत किहि काम को, जिहिं सुख सोभा नाहि  
 ज्यो बरूरी के कठ थन, दूध न जल तिहि माहिं  
 ज्यों रहीम गति दीपकी, कुल कपूत मति मोय  
 वारे उजयारे लगे, बढे अधेरी होय  
 कुल कपूत नहिं जामियो, रहै वाफ़ वरु माय  
 निकस वासते अग्नि कन, वनको देत जराय  
 कुल ही नहिं कुल देशकां, देत कपूत दुखाय  
 ज्यों जयचन्द्र कनौज गति, जानत बुध ममुदाय

### कुराडलिया

बेटा विगरे वापस, करि निरयन का नेहि  
 लटापटी होने लगी, मोहि जुदा करि देहि  
 मोहि जुदा करि देहि, परी मा माया मेरी  
 लैह घर अरु द्वार, करू में फजियत तेरी  
 कहि गिरधर कविराय, सुनो गढ़वा के लेटा  
 समय परो है आय, वापसे भगवत बेटा

साइं ऐमे पुत्र ,ते बाभू रहे वरु नारि

विगरी बेटे बाप मे, जाय रहे सुसरारि

जाय रहे सुसरारि, नारिके नाम विकाने

कुलको धर्म नशाय,और परिवार नशाने

कहि गिरधरि कविराय, मात भंरै वरु ठाई

अस कुपुत्र नहिं होय, बाभू रहतो वरु साइं  
 भालसरत, शोकातुर लपट, कपटी और सदा बल हीन  
 मानस मलिन सदा निद्रातुर,लोभी और अकारण दीन  
 ऐसे सुतसे क्या फल होगा, हे चतुरान दं वरदान  
 कभी कपूत किसीको मत दे, चाहे करदे निस्मन्तान  
 परसे प्रेम द्रोह अपनेसे, करते नित्य दुष्ट गुण गान  
 गुरु जनकी निन्दा कर हंसते, अपनेको कहते गुणवान  
 काला अक्षर भैस बरानर, पर तोभी रखते अभिमान  
 क्रोधानलमे जलते रहते, यही कपूतोको पहचान

### कुल वृद्धिसे प्रसन्नता

यो रहीम सुख होत है, बढत नेव निज गोत

ज्यो बडरी अरिया निरख,अरियनको सुखहोत

### कुलस्वभाव अमिट है

कुल मारग छोडें न कुउ, होहु कितेकी हानि

गज इक मार्ग न दूसरो, बढत महावत आनि

जिन पण्डित विद्या तजहु, धन मूरख अवरैख  
कुलजा शील न परहगै, कुलटा भूपित देख  
अपनी राह न छाडिये, जो चाहहु कुशलात  
बडी प्रबल रैलहु गिरत, और राहमें जात  
तुलसी कबहु न त्यागिये, कुल अपने की रीति  
लायक ही सो कीजिये, व्याह वैर अरु प्रीति

### घनाक्षरी

चातक कुल शोभा नीर पियत न नीचै है,  
हस कुल शोभा क्षीर नीर की जुदाई तै ।  
कज कुल शोभा है दिनेशमे न मोडै मुर,  
शोभा है कुमुद कुल चन्द्र की मित्ताई तै ।  
सूर कुल शोभा जैसे रणमे न दीने पीठ,  
दाता कुल शोभा जैसे दान अधिकाई तै ।  
रास कवि भाषे तैसे सुजन सुजान सुनो,  
कवि कुल शोभा शुभ होत कविताई तै ।

### कुसंगति निन्दा

जिन प्रसंग दूषण लगें, तजिये ताका साथ  
भदिरा मानत है जगत, दूष कलाली हाथ  
खल जनसो कहिये नहीं, गूढ कबहु करि मेल  
यो फैले जग मॉहि ज्यो, जल पर बुन्दक तेल

( ४३ )

दोहा

दुर्जनके मसर्ग तै, सज्जन ताहत क्लेश

ज्यों दशमुख अपराध तैं, बन्धन लहो जलेश

अनधर सुधर समाज मे, आय विगारे रग

जैसे हौज गुताथ को, विगारे श्वान प्रसग

अनमिल मुमिता समाज तै, होत गये उठ चेन

जैसे तिन परि देत दुरय, निकसै निकसै नैन

रसिक सेभामे निरस नर, होत होत रस हानि

जैसे भैंसा तालपरि, मतिन करत जल आनि

मित्यो दुष्ट नाहिन भलो, उपजत मिले अहेत

ज्यों काटो गढि देहमें, अटक सटक दुरय देत

विगारो होय कुसग जिहि, कौन सकै समभाय

तासन बसाये बसन को, कैम फूल बसाय

दुष्ट निम्न धमिये नहीं, बस न कीजिये यात

कदली बेर प्रसग तैं छिन कटकन पात

करिये यात न तन पररा, खल दिग जैयें नाहिं

रुदुक नीम तर जात ही, मुख कडुयें ह्यै जाहि

एक अनीत करे लहें, मगी दुरय अति ताहि

भीम कीचनन रो दियो, मार चित्त के माहि

बसिये तहा विचार क जहाँ दुष्ट गनि नाहिं

होन न करत भैंवर दर, ज्यों चम्पक बन माहि

आप अकारज आपनो, करत कुबुधके साथ  
पाय कुल्हारो आपने, मारत मूर्ख हाथ  
दुष्ट सग यसिये नहीं, दुर उपजत इहि भाय  
घसत वासकी अग्नि तें, जरत सबै बनराय  
पड कुसगमें पडत है, निर्मल पर भी मार  
पावक लोहे से मिलत, पीटत ताहि लुहार  
रोकत सग मलीन का, यश सौरभ विस्तार  
काली मिरच मिलाय ते, उड न सके यनसार  
कुटिलन सग रहीम कहिं, साधू धचते नाहिं  
ज्यो नैना सैना करें, उरज उमेठे जाहिं  
रहिमन नीचन मग बसि, लगत कलक न काहि  
दूध कलालिन हाथ लरि, मद समझहि नर ताहि  
सगति सुमत न पावई, परे कुमतके धध  
राखो मेल कपूर में, हीग न होय सुगध  
सगत दोष लगै सवन, रुहे जु साचे बैन  
कुटिल बक भ्रू मग मे, कुटिल बक गतिनैन  
बहु दुष्टन के कलह मे, भूल न दीजे पाय  
बाम आसके घिसन तें, सकल विपन जर जाय  
चौपाई

खलउ करैं भल पाय सुसगू, मिटहि न मलिन सुभाव अभगू  
उघरहिं अन्त न होय निवाह कालनेम जिमि रावण राह

चरु भल वास नरके कर ताता, दुष्ट सग जनि देख विधाता  
 को न कुम्भगति पाय नशाई, रहत न नीच मते चतुराई

घनाक्षरी

तोहे की कुम्भगति से आग पर मार पड़े  
 सट्टे की कुसगति से दूध फट जात है  
 वास की कुम्भगति से जल जात लाखों बृत्त  
 कीच की कुसगति से कूप अट जात है  
 दुष्ट की कुम्भगति समाज को विनाश करे  
 मूर की कुसगति से मूर कट जात है  
 'राम कवि देखा है विचार करि बार बार  
 नीच की कुसगति से मान घट जात है

चौपाई

धूम अनल सम्भव मुन भाई, तिहि बुझाव घन पदवी पाई  
 रज मग परी निरादर रहई, सद्य कर पद प्रहार नित सहई  
 मन्त उडाय प्रथम तिहि भरई, पुनि नृप नयन किरीटन्ह परई  
 मुन्यगपति अस समक प्रसगा, बुधन कर्हि अधमन करसगा

घनाक्षरी

जाइये न नहीं जहाँ मगति कुसगति है  
 कायर के संग मर भगि है पै भगि है  
 फूलन के वाम बग फूलन की वाम होत  
 कामनी के संग काम जगि है पै जगि है



घर वसे घर वसे घर मे बेराग्य कहा  
 माया मोह ममता मे पगि है पै पगि है  
 काजर की कोठरी मे कैसह सयाने पंठै  
 काजर की एक रेख लागि है पै लागि है

### कोरा भजन

लगन बिना कोरा भजन , देत न हरि को सग  
 एक पक्ष सो गगन में , उड नहि सकत विहंग.

### कौन क्या चाहता है

धन चाहत निसदिन अधम , मध्यम धन अरु मान  
 उत्तम चाहत मान ही , चाहत कुछ न महान

### गुणमहिमा

मान होत है गुणहिं तै , गुण विन मान न होय  
 शुक्र सारो राखै मवै , काग न राखै काय  
 आडर तज कीजिये , गुण महिमा चित चाय  
 क्षीर रहित गौ नहिं विकृत , आनिये घट वैधाय  
 थोडे ही गुण ते कहै , हो प्रसिद्धि जग माहिं  
 एकहि तर ते गहि करी , करी सहसठस नाहिं  
 ऊंचे बैठे ना राहै , गुण विन बडपन कोय  
 बैठौ देवल शिखर पर , चायस गम्ड न होय  
 गुण वारो सपति लहै , लहै न गुण विन कोय  
 काढ नीर पताल तै जो गुण युत घट होय

गुण सनेह युत होत है , ताही की छवि होत  
 गुण सनेह के दीप की , जैसे ज्योति उद्योत  
 करे अनादर गुणिन को , ताहि सभा छवि जाय  
 गज कपोल शोभा मितन , ज्यो अलि देत उडाय  
 जैसे जैसे अधिक गुण , तैसे होय मिलाय  
 अहि उर,विष गल,अनल चरत, ससि सिर शशुवसाय  
 जहा रहे गुण वन्त नर , ताकी शोभा होत  
 जहा धरे दीपक तहा , निहचे करे उदोत  
 खाली तज पूरण पुरुष , जिहि सब आदर देत  
 रीतो कुवा उतारिये , गेच भरयो घट लेत  
 पूजनीय गुण ते पुरुष , वर्ष न पूजित होय  
 यज्ञ तिलक किय कृष्ण को , छोटे बडे सब कोय  
 गुण विन पुजे न लोक मे , बडे कुलियो की पाति  
 कोन भजे वसुदेव को , वासुदेव की भाति  
 गुण ते लेत रहीम जन , मलिल कूप ते काढि  
 कूपहु ते बहु होत है , मन काहू को वाढि

#### कुण्डलिया

गुण के गाहक सहस नर, विन गुण लहे न कोय  
 जैसे कागा कोमिला, शब्द सुने सब कोय  
 शब्द सुने सब कोय, कोविता मरे सुहावन  
 ठोऊ को डक रंग, काग सब भये अपावन

कहि गिरधर कविराय, सुनो हे ठाकुर मनके  
 बिन गुन लहै न काय, महस नर गाहक गुन के  
 घनाचरी

दीपक विचार सार केतोही सनेह डार  
 गुणते विहीन हीन मन्दर लखात है  
 ऐसे धनु देख गुण देख बिन कामका न  
 कोटि शर जोडे एक पट पै न धात है  
 चग चढ जात है अकाश गुण सयुत हो  
 राम कवि भापै ये गुण को करामात है  
 जो पै गुण डारिये तै येते गुण जडता में  
 मानुष अपार गुण कापै कह्यो जात है  
 जौलौ कोऊ पारखी सो होन नहिं पाई मेंट  
 तबही लो तनिक गरीब लो शरीरा हैं  
 पारखी सों मेंट होत मोल बडे लाखन को  
 गुनिन के आगर सुबुद्धि के गभीरा है  
 ठाकर कहत नहिं निन्दो गुणवानन को  
 देखवे को दीन ये सपूत मूर बीरा है  
 ईश्वर के अनम ते होत ऐसे मानस जे  
 मानस सहूर वाले धूर भरे हीरा हैं



## गुणहीन को गुण प्यारा नहीं लगता

रम की कथा सुनी न तिहिं, धूर कथा की चाहि  
जिन दासैं चाखीं नही, मिष्ट निबौरी ताहि  
जो गुण को नहिं जानई, अवगुण ही गुण ताहि  
सूर उदित आसै मुँदत, रजनि उलरु उमाहि

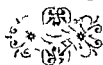
## गुप्त नाश

फाट रह्यो जीवन बसन, पल पल करो विचार  
श्वास श्वास पर खिंचत है, याको इक इक तार

## चाहने वाले की दृष्टि से देखो

जो जाफ़ो प्यारो लगत, सो तिहिं करत बखान  
जैसे विप को विपभखी, मानत अमृत समान  
जो जिहि भाये सो भटो, गुण को कटु न विचार  
तज गज मुक्ता भीलनी, पहरति गुजा हार  
जाको जासो मन लग्यो, सो तिहि आये दाय  
खात भम्म विप मुड युत, शिव तउ शिवा सुहाय  
जा जाही सो रच रह्यो, ताहि ताहि सो काम  
जैसे कीडा आक को, कहा करै बसि आम  
जिय चाहै सोई भलो, जियत भलो हिय लागि  
प्यासो चाहत नीर को, कहा करे ले आगि

जे चेतन ते स्यो तज जाको जासो मोह  
 चुबक के पाछे सदा, फिरत अचेतन लोह  
 जिहि चाहे सोई लहै यो मुख हांय शरीर  
 ज्यो प्यासे जिय को मिले, निर्मल शीतल नीर  
 मनभावन के मिलन निन, यो जिय होत उदास  
 ज्यो चकोर की दिन गिशा, चकवा चढ प्रकास  
 सख कोऊ चाहत भलो, मित्र मित्र की ओर  
 ज्यो चम्डै रवि के उदय, शशि के उदय चकोर  
 प्रेमी प्रीति न छोडही, होत न पन तै हीन  
 मरे परे हू उदरमे, ज्या जल चाहत मीन  
 मीठी कोउ वस्तु नहि, मीठी मन की चाह  
 अमली मिसिरी छोड के, आफू रात सराह  
 कत टै टै कर करत हौ, चातक को उपचार  
 भेक कहा तुम जानिहौ, खाति वृन्द की सार  
 दीपक दाहक और को, होत रहे तो होय  
 पै पतंग के अग को सुरदायक है सोय  
 जाकी जाको लगन है, मगन ताहि को पाय  
 काकी कार सुहावनो, रानी राव सुहाय



## छलेहुए सबसे डरते हैं

पिसुन छल्यो नर सुजन मो, करत विसास न चूक

जैसे टाधो दूध को, पीवत छाछहि फरु

फेर न हँ है कपट सो, जो कीजै व्यापार

जैसे हाडी काठकी, चढे न दृजी धार

खल बचित नर सुजन को, नहिंन विसाम करेड

उहक्यो उडु प्रति विम्बते मुक्ता हस न लेड

## छोटोसे बड़ोकी शोभा

छोटे नरते रहत है, शोभायुत सिरताज

निर्मल राखे चादनी, जैसे पायन्दाज

बडे धनीकी आयरू, निर्धनको अपनाय

मैला दर्पण देखिये, निग्ररे राख रमाय

नीच सनेही करि रहें, ऊच सुग्री दिन रैन

तेरा मलत हैं पगन सो, मन्तक पावत चैन

छोटन सो मोहें बडे, कहि रहीम यहि लेग

सहसन को ह्य वाधियत, लै दमरी की मेर

छोटो ही के मेलमे, मान बडो नर पाय

लका जीती रामने, बानर रीछ महाय

बडे करत हैं काम नड, छोटन को बल पाय

गुरु अखन ज्यो चलत बह, अति लघु बाल ॐ महाव

# जीवित मृतक हैं

चौपाई

कौल, काम बश, कृपण, विमूढा,  
अति दरिद्रि, अयशी, अति बूढ़ा ।  
सदा रोग बश, सतत क्रोधी,  
राम विमुख, श्रुति सत विरोधी ।  
निजतनु पोषक, निर्दय रानी,  
जीवित शव नम चौदह प्राणी ।

## जवान वसमें रखो

द्वपद्य

जीभ जोग अर भोग, जीभ सय रोग बढ़ावै  
जीभ कर उद्योग, जीभ लै कैद करावै  
जीभ स्वर्ग तँजाय, जीभ सय नर्क दिगवै  
जीभ मिलावै राम, जीभ सय देह धरावै  
निज जीभ अँठ ग्फाप्र करि' घाट महारँ तोलिये  
थैताल कहँ विराम सुना, जीभ मेंभारँ धोलिये,

कुण्डलिया

श्यावा जाग्त एभँवन हरित फात भा पाय  
पवन अनँग हिय जग्त ही, यदुर न अरुर ध्याय

बहुरान अकुर आय, जरै दिन रान धरौ  
कोटि यन्नह करहु, दुस नहि जाय निवेगे  
राम सु कवि यो कहत, जाय तन मगहि वावा  
अमृत पारि चहि सीच, हिये कर बुझत न द्वावा



## जानीहुई वातका क्या पृथना

जाने सो बूझ कहा, आदि अन्त प्रगतन  
घर जन्मे पशुके कहो, देखत षोड शब्द  
परतछनी कै देखिये, कह वरनै बुड नाहि  
कर ककन को आरसी, को देखनै ई शब्द  
जान बूझ अजगुत करै तासो कहा शब्द  
जागत ही सोवत रहै, तिहि को देखै शब्द  
जान अजान जु हो रहे, तासो गिबै शब्द  
ज्योतिमान रवि को कहो, शब्द शब्द शब्द

जिसके सयोगसे सुखहे उसके दिव्यदाम्बुदुम्बु

जाहि मिले सुख होत है, ता विरै शब्द शब्द  
सूर उदय फूल कलम शब्द शब्द शब्द  
पियक विछरे निरह बस मन शब्द शब्द  
धरनि गिरत विचही शब्द शब्द शब्द



घनि रहीम गति मीन की, जल बिछरत जिय जाय  
जियत कज तजि अनत बसि, कहा मौरको माय  
जितो हर्ष मिल होत है, बिछरत शोक सभान  
कमल रिलत जलसे मिलत, बिछरत त्यागत प्रान

**जिससे सुख पाया हो उसके दुखमें  
साथ देना चाहिये**

विपति परे सुख पाइये, ना डिग करिये भौन  
नेन सहाई बधिर के, अध सहाई श्रौन  
सेवरु सोई जानिये, रहे विपितमें सग  
तन छाया ज्यो धूपमें रहे साथ इक रग  
सुख दुख सगीजो रहें, सो साचे हितु जान  
बाढत जल बाढत कमल, घटत तजन है प्रान

**जैसी करनी वैसी भरनी**

करे बुराई सुख चहै, कैमे पावै कोय  
रोपै विरवा आरु को, आम कहा ते होय  
होय बुराई ते बुरो, ये जानो निरधार  
ग्याड रनवै और को, ताको कूप तगार  
यह कहयत जैसी करै, तैसी पावै लोय  
आग्नि को आगे करै, आधी कहियत सोय

## दोहा

को सुग्य को दुग्य देत है, देत कर्म भ्रुकभोर  
 उरभै सुरभै आप ही, ध्वजा पवनके जोर  
 सब काहुको कहत है, भली बुरी ससार  
 दुर्योधनकी दुष्टता, विक्रम को उपकार  
 जैसो कारन होत है, तैसो कारज थाप  
 कर सरधनु प्रानी हनत, कर माला हरि जाप  
 नारायण दुर्वचन को, कौन सुने हर्षाय  
 खोटा सिक्का जाहि दो, तुरत देत लौटाय  
 जैसा बीज बगैरिये, वैसाही फल पाय  
 काटे खात बबूल मे, फूल सुगन्ध रिम्भाय

## घनाक्षरी

आप हित चाहै परहित को निनाहै नर,  
 दापन दुरारै पर दापन दुराइये ।  
 चाहै जो भलाई भल ठानै मन औरन को,  
 चाहत कल्याण ध्यान राखत पराइये ।  
 चाहै सुत बन्धु नारिधार मन औरन के,  
 सुग्य अभिलास नहीं, जीवो को सताइये ।  
 राम कवि भाषै शिर परम हितु है तोर,  
 सन्तत विचार चारु हिये मे धराइये ।

जमी मो निमल कहें दमी मो अदत्ती कहै,  
 मधुर वचन रहै तामो कहें दीन है ।  
 दाता को बतावे दमी नेह हीन को गुमानी,  
 वृणा को घटाये तामो कहें भाग हीन है ।  
 माधु गुण देसै जहा तहाही लगावे दोष,  
 एमो रुष्टु दुर्जनको हठोई मलीन है ।

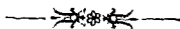
### तत्व ज्ञान

गहत तत्व ज्ञानो पुरुष, बात विचारि विचारि  
 मथन हार तज छाछको, मारन लेत निकारि  
 तत्व हीन बकवाद को, सुनते निपट गेंवार  
 लडको ही में बिकत है, लकडों की तलवार  
 बिन रस की बकवास जो, सज्जन को न सुहाय  
 भ्रमर गहत है सरस को, कागज कुसम विहाय

### त्याग

हो निर्भय बटमार सो, कस केवल लङ्गोट  
 कबहू नगी लाशको तक्त न फफन खसोट  
 थोड़े लाभके लिये अति परिश्रम  
 बिना प्रयोजन भूलिहू, करिये नाही ठाट  
 जैयो नहि जा गावको, ताकी पूछ न चाट  
 क्यो करिये प्रापति अल्प, जामें श्रम अति होय  
 कौन गरज गिरि खोदकै, चूहा चादू कोय

काम करो मत हो जहा, अल्प लाभ बहु हार  
पाई ग्योजनके लिये, पाव तेल मत जार,



## ढान महात्म्य

विना दिये कडु ना मिले, यह समझो सब कोय  
देत शिशिरमे पात तरु, सुरभि सु पल्लव होय  
खरबत खात न जात धन उत्सव क्रिये अनेक  
जात पुण्य पूरन भये, अरु उपजे अत्रिकेक  
धन पूरन धनवान पै, विन दीने न लहात  
ज्यो विन बरसै सघन जल, लिया पियो नहि जात  
पुन्य विनेक प्रभाव तैं, निहचै लच्छ प्रवास  
जौ लौ तेल प्रदीप में, तौ लौ होत प्रभास  
दाताके कर कमलकी, उपमा युगत बरान  
मुकुल रूप आगे बढत, तौटत सुमन समान  
नाद रीक तन नेत मृग, नर धन हेत समेत  
ते रहीम पशुते अधिक, रीके नृट न देत  
तय लग है जीवो भलो दीवो परै न धीम  
विन दीवो जीवो जगत, हमदि न रुचै रहीम  
दादु दीया है भला दिया करो सय कोय  
घरमे धरा न पाइये, जो कर दिया न होय

## दृढता

जो न होय दृढचित्त को तहां न रहे सटेक  
ज्यो काचे घट में सलिल नहिं ठेरत छिन एक-

दुःखद है

छपय

मरै वैल गरियार, मरै वह अडियल टट्टू  
मरै हठीली नाग, मरै वह रसम निखट्टू,  
मेवक मरै सु तौन, जौन कहु समय न सुभभे  
स्वामी मरै सु कौन, जौन सेवा नहिं बुभभे  
जिजमान सूम मरिजाय तो, कहा सुमिर दुख रोइये  
कविगद् कहै मरिजाय सो, जाहि सुने सुख सोइये

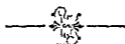
सवैया

पूत कपूत, कुलच्छनिनारि, लराक परोस, लजायन सारो  
बन्धु कुबुद्धि, पुरोहित लम्पट, चाकर चोर, अतीथ धुतारो  
साहिब सूम, अरारुतुरग, किसान कठोर, दिवान नकारा  
ब्रह्म भने मुन शाह अकच्यर धारहु बाध समुद्र में डारो

दुख से घबराना नहीं चाहिये

कष्ट परे हू साधु जन, नेक न होत मलान  
ज्यो ज्यो कचन ताडये, त्यो त्यो निर्मता जान  
अधिक दुर्ग्या लरि आप तै, दीजै दुख बिसराय  
धर्म सुवन बन दुख हरयो, मुनि नता विपति बताय

रहिमन निज मन की व्यथा, मनही राखो गोय  
 सुन इठलै हैं लोग सब, वाट न तै है कोय  
 यों रहीम दुख सुख सहत, बडे लोग सहि साति  
 उवत चन्द्र जिहि भाति सों, अथवत वाही भाति  
 दुख सहते हैं शाति से, यह मन जान प्रवीन  
 पत भर भारत पात जो, देत बसत नवीन  
 दीरघ मास न लेय दुख, सुख साईं मत भूल  
 दर्ई दर्ई कत करत है, दर्ई दर्ई सु रुबूल  
 दियो सु सीस चढाय ले, आछी भाति अहेर  
 जापै चाहत सुख लियो, ताके दुखहि न फेर



## दुर्वचन से हानि

स्वप्ने वचन मिलाप में, कहत होत रस भग  
 वीन बजत ज्यो तार के, टूटे रहत न रग  
 अमृत ऐसे वचन मे, रहिमन रिस की गास  
 जैसे मिसरी मे मिली, निरस वास की फाम  
 चुरे वचन नहि बोलिये, यदपि होय हित हेत  
 जैसे चन्दन धूम तड, आरगन को दुख देत  
 नीरस वक्ता जी सुनो, ब्रैठ रहो गहि मौन  
 वन फोडा घडियाता की, ठनक सहैगा कौन

अति कठोर उपदेश सो, दुष्टाचार न जात  
 क्यो मुख स्वाद सुधार हित, देत नीम के पात  
 गीरा को मुँह काट कै, मलियत लौन लगाय  
 रहि मन कडवे मुखन की, चाहिये यही सजाय

### दुष्ट निन्दा

हैं सहाय हित हू करै, तऊ दुष्ट दुख देत  
 जैसे पावक पवन को, होत जलन को हेत  
 हित हू भलो न नीच को, नाहिन भलो अहेत  
 चाट अपावन तन करै, काट श्वान दुख देत  
 महज सँतोष है साधु को, खल दुख देन प्रवीन  
 मछुवा मारत, जल बसत, कहा बिगारत मीन  
 कबहु दुष्ट के वदन तैं मधुर न निकसै बात  
 जैसे कडवी बेल के, को मीठे फल खात  
 खल निज दोष न देखई, पर के दोषहि लागि  
 लखे न पग नर, सब लखें पर्वत धरती आगि  
 दया दुष्ट के चित्त मे, कबहु उपजति नाहि  
 हिंसा छोडे सिंह यह, क्यो आवै मन माहि  
 दुष्ट रहै जा ठौर पर, ताको करै बिगार  
 आगि जहा ही राखिये, जार करै तिहि द्वार  
 दुष्टन को हित के वचन, सुन उपजत है कोप  
 सापहि दूध पियाइये, ज्यों केवल विष ओष

आप न काहू काम के, डार पात फटा फूल  
 औरन को रोकत फिरै, रहिमन पेड बबूल  
 न ये विससिये अति नये, दुर्जन दुसह सुभाव  
 आटे पर ग्रानन हनत, काटे लो लग पाव  
 नीच हिये हुलसे रहे, गहे गेद के पोत  
 ज्यो ज्यों माथे मारिये, ल्यों ल्यों ऊचे होत  
 पर द्रोही पर दार रत, पर वन पर अपवाद  
 ते नर पामर पाप भय, देह धरे मनुजाद  
 सहज सरल रघुपति बचन, कुमति कुटिल कर जान  
 चलै जोक जिमि बक्र गति, यद्यपि सलिल समान  
 दुर्जन दर्पण सम सदा, कर देखो हिय गौर  
 सन्मुख की गति और है, विमुख भये की और  
 उदासीन अरि मीत हित, सुनत जगहि खल रीति  
 जानु पाणि युग जोर कर, विनती करू मप्रीत  
 काटे पै बदली फले, कोटि यतन कर सीच  
 विनय न मान खगेश सुन, डाटहि पै नर नीच

चौपाई

पर हित हानि लाभ जिन केरे, उजरे हर्ष त्रिपाद बसेरे  
 हरि हर यश राकेश राहु से, परा काज भट सहम बाहु से  
 जो पर दोष लग्यहिं सह साखी, पर हित घृत जिनके मन माखी  
 तेज कृशानु रौष महि पेशा, अध अवगुण धन धनिक धनेशा



परा काज लागि तनु परहरहीं, जिमि हिमि उपल कृशीदल गरहीं  
 उदय केतु सम हित मबही के, कुभकर्ण सम सोवत नीके  
 सैं आपनि दिशि कीन्ह निहोरा, तिन निज ओर न लाउव भोरा  
 वायस पालें अति अनुरागा, होय निरामिय कबहु कि कागा  
 कवि कोविद गावहि अस नीती, रल सैं कलह न भल नहिं प्रीती  
 उदासीन नित रहिये गुसाईं, रल परहरिये श्वान की नाईं  
 अधम जाति में विद्या पाये, भयो यथा अहि दूध पियाये  
 जिहिते नीच बडाई पावा, सो प्रथमहि हठ तांहि नशावा  
 वैर अकारण सब काहू सों, जो करि हित अनहित ताहू सों  
 स्वारथ रत परिवार विरोधी, लम्पट कामि लोभि अति क्रोधी  
 शण्डव रल पर बधन करहीं, रल कडाइ विपत सह मरही  
 पर सम्पदा विनाश नशाहीं, जिमि कृपिहति हिमि उपल विनाही  
 रल बिन स्वारथ पर अपकारी, अहि मूपक सम सुन उरगारी  
 दुष्ट हृदय जग आरति हेतु, यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतु

सरस काव्य रचना रचू, रलजन मुनत हसत  
 जैसे सिंधुर देर मग, श्वान सुभाव भुसत  
 नीच चग सम जानिये, सुनि लरि तुलसीदास  
 ढील देत म्हि गिर परत, सैंचत चढत अक्रास  
 घनाक्षरी

आपने बनाइये को और के विगारये को,  
 सावधान है के सीखे द्रोह के हुनर है

भूल गये कर्णानिधान श्याम मेरे जान,  
 जिन को प्रनायो यह विद्वान को वितर है  
 ठाकुर कहत पगे सबै मोह माया मध्य,  
 जानत या जीवन को अजर अमर है  
 हाय ! इन लोगन को कौनसो उपाय,  
 जिन्हे लोक को न डर परलोक को न डर है  
 तज कर कामना जां करत पराये काम,  
 उत्तम पुरुष ताको कहिके बुलाइये  
 स्वार्थ परमार्थ जो दोनो ही को चाहत होय,  
 मध्यम नरो मे तासु गणना कराइये  
 अपनो ही भलाई जो चाहत हमेशा नर,  
 राम कवि ताको नाम नीच ही गनाइये  
 पिना ही प्रयोजन जो औरों के विगाडै काम,  
 सोच बड जी को ताको नाम क्या धराइये

दोहा

गुन तज अवगुन देखि हैं, दुर्जन दुसह सुभाय  
 ज्यों तज मधुरे फल सुतर, कीकर कटक राय  
 मो समान नहिं जगत में, जहर। करो मत मान  
 तुम मे भी अति विपम है, दुर्जन दुसह जबान  
 उदधि रहत हर कट बसि, भयो न इतना मान  
 काल कूट। जितना भयो, बस कर दुष्ट जबान

अगर दुष्टता जीव की, शिर तज अपयश लेई  
मन तन ग्वाल कडाइ कै, पर तन बन्धन देई  
चौपाई

पर घर घालक लाज न भीरा  
बाम्ब कि जान प्रसव की पीरा  
दोहा

सज्जन गुण लखि दहन है, दुर्जन हृदय नितात  
जिमि चोरन की आग्र मे, सटकत रजनी कात  
घनाक्षरी

गग के न गौरी के गिरीश के न गोविन्द के,  
गोत के न जोत के न जाये राहगीर के  
काहू के न सगी रति रगी भैत भानजी के,  
जी के अति स्रोटे सोटे सँहैं जम वीर के  
ग्वाल ऋवि कहैं देखो नारि को खसम जानै,  
धर्म को पसम जानैं पातक शरीर के  
नमक हराम बढ काम करै ताजे ताजे,  
बाजे बाजे बेसहूर गुरु के न पीर के

## दुष्टपर उपकार अपकार और अपकार उपकार है

नीचोंमें उपकारका फल उपजे अपकार  
दूध पिलाये सर्प को, उगले विष फुकार  
खल दुष्टोंके दाहसे, सरे लोक हित काम  
वृश्चिक भस्म कुघावको, तुरत करे आराम

### दुष्टोसे सब डरते हैं

बाँके नरतें होत हैं, बन्दनीक सब लोय  
नमत दुतीया चन्दकौं, पूरन चन्द न कोय  
बसै बुराई जासु तन, ताही को सन्मान  
भले भले कहिं छाडिये, खोटे ग्रह जप दान

### चौपाई

टेढ जान शंका सबकाह, बक्र चन्द्रमहि प्रसन राह ।

### दृढ़ता माहमा

जो न होय दृढ चित्तको, तहा न रहै सटेक  
ज्यों काचे घटमें सलिल, नहिं ठहरत द्विन एक

### देह दशा

जैसी परे सो सह सके, कहि रहीम यह देह  
घरती ही पर परत सब, शीत घाम अरु मेह

## द्यूत निन्दा

जूआ खेले होत है, सुरस सम्पति को नास  
राज काज नलसे छुटयो, पाण्डव किय धनवास  
रहिमन नहीं सराहिये, लैन दैन की प्रीति  
प्रानन बाजी लागही, हार होय कै जीत  
कुडलिया

जड़ है जुआ कुकर्मकी, दुराचार का यार  
इसमे हारे हार है, जीते भी है हार  
जीते भी है हार, जुआ अपमान करावे  
धीर धाम धन धान्य, धरणि धी धर्म नशावे  
चोरी जारी रूत, तीन तापों की जड है  
जुआ नाशका मूल, जुआ पापोंकी जड है.

## धन महिमा

गुण प्रगटे अणुगुण दुरै, जाके कमला साथ  
तियमारी परिहरी तउ, कृष्ण त्रिलोकी नाथ  
जो रहीम विधि बड किये, कोतिहि दूषण काढि  
चन्द्र दूयरो कूबरो, तउ नग्वनतैं बाढि  
धन, धन, धन, है आपकां, नमस्कार बहुवार  
गुणि जनसे अगुणीन को, कर वायत सत्कार

## नम्रता

जो हो मनमे नम्रता, कष्ट न सहे शरीर

तोड़ सकत नहिं मूलते, कोमल तृणहि समीर  
नरकी श्रु नल नीरकी, एकै गति करि जोय  
जेतो नीचो हूँ चले , तेतो ऊचौ होय

## नियम गुण

नृप अनीति के दोष तै चूकै मन्त्र प्रयोग

करै रुपथता पुरुष को, क्यों नहिं उपजै रोग  
होय सो होय हिसाय सो, दिन हिसाय नहिं होय  
भरै बदनतै अन्न मन, नहीं नाफतै कोय  
नारायण सब सयमी, जिये सदा सुख भोग  
उचिताहार बिहार सो, नहीं सतावत रोग  
ठीक नियममे काम कर, कबहु न पडे भ्रमे ल  
गहे सुगमता सरलता, ज्यों लाइनपर रेल

## निर्धनकी निर्द्वन्द्वता

जगमें सम्पति हीन को , सकट नेकहु नाहि  
ज्यों मुर तर निर्द्वन्द्व हैं, पतझड शत्रुके माहि  
नीचको उच्चपद शोभा नहीं देता  
बडे न लोपेँ लाज कुल, लोपेँ नीच अधीर  
उदधि रहै मरजाद पर, बहै उलट न नीर

होत अधिक गुन निबल पै उपजत वैर निदान  
 मृग मृगमद चमरी चमर, लेत दुष्ट हनिप्राण  
 जो रहीम ओछो बढै, तौ अति ही इतराय  
 पादे से फरजी भयो, टेढो टेढो जाय  
**नेत्र मनकी बात जानते हैं**  
 नयना देत बताय सब, हिय कौ हेत अहेत  
 जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत  
 रहिमन अँसुवा नयन दरि, जिय दुरा प्रगट करेइ  
 जाहि निकारो गेहते, कसन भेद कहि देखे  
 रहिमन मन महाराजके, दृग सौं नहीं दिवान  
 जाहि देखे रीझे नयन, मन तिहि हाथ बिकान  
 कहत नटत रीझत रिझत, मिलत रिपलत लगजात  
 भरे मौनमे करत हैं, नैनन ही सब बात  
 कोटि जतन कीजै तऊ, नागरि नेह दुगै  
 कहेदेत चित चीकनो, नई रुखाई नैन  
 कहि रहीम डक दीपतैं, प्रगट सबै दुति होय  
 तनु सनेह कैसे दुरै, दृग दीपक जरु दीय  
 रूप नगर बसि मदन नृप, दृग जाखूस लगाय  
 नेहिन मनको भेद उन, लीनो तुगत मगाय  
 अपना से को करत है, फहु दुराव जग माहि  
 हेत अहेत भली बुरी, नैना नैन बताहि

प्रेम नगर में दृग बया, नोरि प्रगटे आय

दो मन को करि एक मन, भाव देत ठहराय  
नैन कहत नैनहि सुनत, नैन करत निरधार

नैनन ही से चलत है, सब जगको व्यवहार  
मनकी बदी विचार करि, लखि अन रीती बात  
परके नैन निहार करि, सकुचि नैन नय जात

में तो सो कौवा कह्यो, तू जनि इन्हें पत्याय

लगा लगी करि लोनयन, उरमे लाई लाय  
भूठे जान न सप्रहे, मन मुख निकसै वैन

याही ते मानहु किये, बातनको विधि नैन  
सारी डारी नीलकी, ओट अचूक चुकैन

मो मनमृगकर वर गहे, अहै अहेरी नैन  
**न्यायी राजाकी प्रजा सुखी रहती है**

राजाके बल लोक सब, फिरँ धिरँ सब ओर

ज्यों वनमें छूटे चरँ, बाधि हयके जोर  
नृप प्रताप ते देश में रहे दुष्ट नहि कोय

प्रगटे तेज दिनेशको, तहा तिमिर नहिं होय  
नीति निपुण राजानि को, अजगुत नहीं सुहाय

करत तपस्या शूद्र को, ज्यों मारधो रघुराय  
रहै प्रजा धन यतन सो, जह बाकी तरवार

सो फटा कोउ न ती सकै, जहा कटीली डार



रहिमन राज सराहिये, शशि सम शीतल होय  
कहा थापुरो भानु है, तप्यो तरैयन रसो य

पछताते हैं

छप्यय

सठन सनेह जु करै, मान बचहै सुलब्धहै

पिय वियोग सुखचहै सोंकरै तजै स्वामि कहै  
मनि बन्धहि पर रमनि, खेल दुर्जन सग खेलहि

नृपति मित्रकर गनहिं, सर्प मुख उगलि मेलहि  
धुक्क हित समै नरहरि निरस, जड आगे विस्तरहि गुन  
पछिताहिं सुते नर भगति बिन, दौलत दलपत गान सुन

पर घर वास निन्दा

पर घर कबहु न जाइये, गये घटत है जोत

रवि मडलमें जात शशि, चीण कला छवि होत  
ठौर छुटे ते भीतहू, है श्रमीत सतरात

रविजल उखरे कमल को, जारत गारत जात  
को न जाय पर गेह में, होत प्रतिष्ठा हीन

पैठ भानुके भवनमें, भयो मयक मलीन  
कौन बडाई जलदि मिल, गग नाम भौ धीम

किहि को प्रभुता नहिं घटी, पर घर गये रहीम

माह मास लहि, टेसुआ, मीन परं थता भौर

ल्यों रहीम जग जानिये, छुटे आपने ठौर  
को न छुटे निज ठौरके, हीन प्रतिष्ठा होय

निकस दात मुग्गमे भयो हाड अपानन सोय  
पर घर जा कहि राम कवि, को न करे घट काम  
पाडव सुत सेवक भये, बमि बिराटके धाम

### पद भ्रष्ट निन्दा

तार्की सम्मति को सुने जो पद भ्रष्ट प्रधान  
अन चालू सिका कहा, पावत है सम्मान

### पराधीन निन्दा स्वाधीन प्रशंसा

जो प्राणी पर बश परयो, सो दुख सहत अपार  
जूथ बिछोही गज सहै, बन्धन अकुश मार  
मन प्रसन्न तन चैन जँह, स्वेच्छा चार विहार  
मग मृगी मृग सुख सबै, बन बसि तृन आहार  
पराधीनता दुख महा, मुख जग में स्वाधीन  
सुग्गी रमत शुक बन विपे, कनक पीजरे दीन  
पराधीन नहि कीजिये, काहू को भगवान  
जो कीजै मत दीजिये, ताकां करिता ज्ञान

चौपाई

कत विधि सिरजि नारि जग माही  
पराधीन मुपने सुख नाही

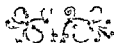
## प्रकृति मिलने से मन मिलता है

प्रकृति मिले मन मिलता है, अन मिल तैं न मिलाय  
 दूध दही ते जमत है, काजी ते फट जाय  
 एक वस्तु गुन होत है, भिन्न प्रकृति के भाय  
 भेंटा एक को पित्त कर, करत एक को वाय  
 वाके मीधे को मिलत, निवहै नही निदान  
 गुन ग्राही तौऊ तजत, जैसे धान कमान  
 पडित पडित को मिलत, संशय मिटत न बेर  
 मिलैं दीप दुहु दुहुन को, होत अधेर निवेर  
 सुजन सुजन के दरस ते, पावत जिय सतोप  
 लहत कच्छ के वत्स ज्यो, सोम दृष्टि तैं पोष  
 कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को सग  
 वे डोलत रस आपने, उनके फारत अग  
 धीरज रहे न धीर को, हो यदि भेल कुमेल  
 पानी दीपक मे पडे, चिड़ चिडात है तेल  
 भेद भरे नेतान सो, होत न देश सुधार  
 कवहु न निकले मधुर सुर, जो नहिं मिले सितार  
 सरल सरल सों होय हित, नाहि सरल अरु बक  
 ज्यो सग सूघहि कुटिल धनु, डारै दूर निसक  
 सूरको सूर गुणीको गुणी लवराके दिगै लवरा सुख पाये  
 लम्पटको नित लम्पट भावत पडितके मन पडित भाये

## पाप परिणाम

वृद्धि न है है पाप तैं, वृद्धि धर्म तैं धार  
सुन्यो न देख्यो सिंह के, मृग के सो परिवार  
पंडित के सामने मूर्ख का आदर नही होता

मूढ तहा ही मानिये, जहा न परिडित होय  
दीपक की रवि के उदय, बात न पूछे कोय  
चतुर सभा मे कूर नर, सोभा पावत नाहि  
जैसे वक्र सोहत नहीं, हम मडली माहि  
जहा चतुर नाहिन तहा, मूढन सो व्यवहार  
वर पीपर दिन हो रहे, ज्यो अरड अधिकार  
उत्तम को अपमान अर, जहा नीच को मान  
कहा भयो जा हस की, निन्दा काग बरान  
तेजस्वी के सामने, बने दुष्ट जन मूक  
जय तक भासत भासकर, बोलत नहीं उलूक  
पंडित जन के सामने, मूढ न ठहरन पाहि  
सुनत शेर रत्र स्यार दल, अनत तुरत चल जाहि  
जह गुणि जन तह मूढ नर, काहू को न सुहात  
कनक सामने काच की, कोउ न पूछत बात



## पात्र भेदसे गुण भेद

पलट जात है वस्तु के, गुण भाजन अनुमार  
सुधा भयो विष गहू को, गरल शमु शृंगार

### पात्रता

करत न कबहु कुपात्र को, मदुपदेश कल्याण  
सुनने में आया नहीं, जोक लगी पापान  
करत न चञ्चल चित सदा, सदुपदेश को मान  
सुमन माल कपि कठ में, छिन भर की महमान  
दान दीन को दीजिये, मिटे दरद की पीर  
औपधि ताको चाहिये, जाके रोग शरीर  
जो गरीब सो हित करै, धन रहीम वे लोग  
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई योग  
दीन सवन को लखत है, दीनहि लखै न कोय  
जो रहीम दीनहि लगवै, दीन बन्धु सम होय  
बहत नदी नद जल उदधि, कौन बडाई ताय  
धन बादर जल होत जा, फल फूलन सुरदाय  
स्वारथ रत समार नर, देत तैत करि भेय  
दीन हीन को कौन जग, दीनबन्धु विन देय  
अधिकारी को दीजिये मिटे दरद दुख तय  
सुता अधानी त्यागि करि, भूरी बहु का देय

कामीको कामी विलोक सुग्री अरु ज्वारीको ज्वारीमिले हरपाये  
जाकोहै जैसा सुभाव सदा तिरिके अनुसारहि आनन्द आये

### प्रतिष्ठाकी रक्षा करो

फिर जोडे जुड़ती नहीं, भई प्रतिष्ठा भग

फटे दूधके छीछड़े, वने न पय के अग

जाय भरोही माल धन, इज्जत लेहु बचाय

बहुर हाथ नहीं आवही, जो कपूर उड जाय

सम्पति भग्म गवाय कै, हाथ रहत क्यु नाहि

ज्यो रहीम शशि रहत है, दिवस अकासहि माहिं

रहिमन पानी राखिये, विन पानी सत्र सून

पानी गये न उबरै, मोती मानस चून

मोरठा

रहिमन मोहिं न सुहाय, अमी पियायत मान विन

जो विप देय बुलाय, प्रेम सहित मरिवो भलो

कुटलिया

पानी बाढो नावमें, घर में बाढो दाम

दोनो हाथ उलीचिये, यही मयानो काम

यही मयानो काम, रामको सुमिरन कीजै

पर स्वारथ के हेत, सीम आगे धर दीजै

कहि गिरधर कविराय, बडन की याही बानी

चलिये चाल सुचाल, राखिये अपनो पानी

## प्रेम प्रचार

प्रेम निपाठन कठिन है, समुक्त कीजिये कोय

भाग भग्न है सुगम पै, लहर कठिन ही होय

जैसो बन्धन प्रेमको तैसो बन्ध न और

काठहि पेधै, कमल को, छेद न निकरै भौर

नवल नेह आनन्द उमग, दुरै न मुख चरु और

तैसो जान्यो जात है, ज्यो सुगधको चोर

प्रेम छकै मनको हटक, रख न सकै कुल लाज

कमल नालके तन्तु मों, को बाँधे गजराज

वात प्रेमकी राखिये, अपने ही मन माहिं

जैसे छाया कूप की, बाहर निकसै नाहिं

प्रेम पगन जासों भई, सुख दुरख ताके सग

धसत कमल अलि वास वश, सकमल भरत मतग

होत चाह कय होत है, प्रेम सु सज्जन संग

पास दिये विन पास पर, चढे न गहरो रग

प्रेम नेम के पन्धको, है कहु अद्भुत रूप

पिय हिय लागै लगत ज्यो शरद जौन्ह मी धूप

कयहू प्रीति न जोरिये, जोर तोरिये नाहिं

ज्यों तोरे जोरे बहुरे, गाठ परे गुण माहि

अन्तर तनक न राखिये, जहा प्रीति व्यवहार

उर सों उर लागै न तह, जहा रहत है हार

अगम पन्थ है प्रेमका, जह ठकुराई नाहिं  
गोपिनके पीछे फिरे, त्रिभुवन पति बन माहि  
ज्यो ज्यों छुटे अयान पन, त्यो त्यो प्रेम प्रकास  
जैसे कैरी आमकी, पकरत पकै मिठास  
रहिमन रिस सहि तजत नहि, बडे प्रीतिकी पौर  
मुकन मारत आवई, नौद विचारी दौर  
रहिमन मन महाराजके, दग सो नहीं दिवान  
जाय देर रीके नयन, मन तिहि हाथ विकान  
गिरतै ऊचे रसिक मन, बूडे जहा हजार  
बहै सदा पशु नरनको, प्रेम पयोधि पगार  
अद्भुत गति है प्रेमकी, वैनन कही न जाय  
दरस भूरु लागे दगन, भूरुहि देत भगाय  
अद्भुत गति है प्रेमकी, लखो सनेही आय  
जुरै कह टूटे कह, कह गाठ पड़जाय  
देखो करनी कमल की, जलमो कानो हेत  
प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूरयो सरहि समेत  
भौरा भोगी बन भ्रमै, मोद न माने ताप  
सय कुसमन मिल रम करै, कमल यँधावे आप  
सुन परमित प्रिय प्रेमकी, चातक चितवत पारि  
बन आशा सय दुरा सहै, अन्त न याचै वारि



दीपक पीर न जानई, पावक परत पतग  
 तनु तो तिहि ज्वाला जरथो, चित न भयो रस भग  
 प्रीत परेवाकी गनो, चाहत चढन अकास  
 तह चढतीय जु देखिय, परत छाड उर स्वाम  
 सुमिर सनेह कुरग को, पवन न रान्यो राग  
 धर न सकत पग पछमनो, सर सन्मुख उर लाग  
 सब रस को रस प्रेम है, विपई खेलै सार  
 तन मन धन योवन रिसै, तऊ न माने हार

सोरठा

जल पय सरस विकाय, देख प्रीति की रीति भल  
 विलग होय रस जाय, कपट खटाई परत हों

चौपाई

जलद जन्म भरि सुगत विमारे, याचत जल पवि पाहन डारे  
 चातक रटनि घट घटि जाई, बढै प्रेम सब भाति भलाई  
 कनक हि ब्रान चढे जमि दाहे, तिमि प्रीतम पर प्रीति निवाहे  
 जग यश भाजन चातक मीना, नम प्रेम निज निपुण नवीना  
 मीन पतगहि गुरु करे, जो चाहत किय नह  
 त्यागन सगम होत ही, परहर अपनी देह

धनाक्षरी

कै तो प्रेम पन्थ दिग पद न टिकावे कोऊ  
 जो पै पाव डार फिर हारे औ निहारै ना

'राम' कवि काहू विधि काहू को न दीजे वैन  
 मुग्य मे निकारे जो पै ताहि इनकारै ना  
 कै तो काहू कार्य्य को न कीजिये आरम कभा  
 आदि कर दीजे जो पै अत विन छारै ना  
 कोई कछु भाप मन रागै अभिलारै जाइ  
 नीजे प्रणपाम एकवास को विचारै ना  
 पारम सराहिये क्यों जहा द्वैत भाव रहे,  
 लोह स्वर्ण कै ही निज तुल्यता दुराय है  
 स्वर्ण गिरि क्योंकर सराहिव के योग्य कहो,  
 'राम' कवि जहा तरु तरु ही रहाय है  
 सत्य ही सराहिये के योग्य दूध प्रीत जान,  
 जल अपनाय निज भाव से तिकाय है  
 अथवा है मलैगिरि शोभा मूल जग माहि,  
 जहाहु को तरु तरु चन्दन है जाय है  
 यद्यपि किसान नर आगम मनावत है,  
 स्वागत करत भेक विविध विधान मो  
 उच म्वर मोर गुण गावत हैं चाव कर,  
 भूम भूम भौगुर सु नाचें नहु तान मो  
 याध के समाज मज माज अति मोद मान,  
 उड कर जान पाम चकुले मन्मान सो

‘राम’ हैं बलाहक के चाहक अनेक पर,  
चातक सी चाहना न होगी किसी आन सों  
पद -

प्रीति तौ मरनऊ न विचारै-

प्रीति पतग जैति पावक ज्यो, जरत न आप-सँभारै  
प्रीति कुरग नाद स्वर मोहित, बधिक निकट है मारै  
प्रीति परेवा उडत गगन तैं, गिरत न आप सँभारै  
सावन मास पपीहा बोलत, पिउपिउ करि जो पुकारै  
‘सूरदास’ प्रभु दरशन कारन, ऐसी भौति उचारै  
घनाचरी

चाहिये जरूर इनसानियत मानस को,  
नौबत बजे पै फेर भेरि बजनो कहा  
जाति औ अजाति कहा हिन्दू औ मुसलमान,  
जाते कियो नेह फेर ताते भजनो कहा  
‘ग्वाल’ कवि जाके लिये सीस पै घुराई लई,  
लाजहू गमाई कहो फेर लजनो कहा  
यातो रग काहू के न रँगिये सुजन प्यारे,  
रँगे तो रगेई रहे फेर तजनो कहा  
सवैया

एकहि सों चित चाहिये अन्तलों बीच दगा को परै नहिं टाको  
मानिक सों चित वेच कै जू अब फेर कहा परखावनो ताको

‘ठाकुर’ काम नहीं सब कोइक लासन मे परवीन है जाको  
 प्रीति कहा करिवे मे लगै करि के फिर ओड निवाहनो थाको

### घनाचरी

गहिवो आकाश पुनि लैवो अथाह थाह,  
 अति विकराल काल ब्यालहि खिलाइवो  
 शेल शमशेर धार साहिवो प्रहार यान,  
 गज भृगराज लै हथेरिन लराइवो  
 गिरि ते ‘गिरन पथ आगि मे जरन और  
 काशी करवत तन बर्फ लो गराइवो  
 पीवो विष विषम ‘कबूल’ कवि नागरजू,  
 कठिन कठोर एक नेह को निवाहिरो

### सप्रेया

अति खीन मृनाल के तारहु ते  
 तिहि उपर पाव दे आवनो है  
 सुइ बेह ते द्वार सकी न तहा  
 परतीति को टाको लगावनो है  
 कपि ‘धोधा’ अनी घनी नेजहु ते  
 चदि तापै न चित्त डरावनो है  
 यह प्रेम को पन्थ कराल महा  
 तरवार की धार पै धावनो है

लोक की लाज औ शोक प्रलोक को  
 वारिये प्रीति के उपर दोऊ  
 गाव को गेह को देह का नातो  
 सनेह मे हा तो करै पुनि मोड  
 'बोध' सुनीति नियाह करै  
 धर उपर जाके नहीं मिर होउ  
 लोक की भीत डरात जा भीत  
 तो प्रीति के पैडे परे जिन कोउ

दोहा

चित दै भजै चकोर ज्यो, तीजे भजै न भूख  
 चिनगी चुगै अँगार की, पियै कि चन्द मयूर

फूट निन्दा

अरि के सग कुटम्बि लखि, जिय उपजत है त्रास  
 वैटा लगै कुठार को, तब बन राय विनास  
 अपनो ही के द्रोह तैं, कटते हैं सब कोय  
 लोहा कटे न काहु ते, जो छैनी नहिं होय  
 तहा नहीं है भय जहा, अपनी जाति न पास  
 काठ बिना न कुठार कँहु, तरु को करत विनास



## घनाक्षरी

फूट गए होरा की विकानो कनी हाट हाट,  
 काहू घाट मोल काहू बाढ मोल को लयो  
 टूट गई लका फूट मिली है विभीषण को,  
 रात्रण समेत बस आममान को गयो  
 कहै कवि 'गग' 'दुरयोधन से छत्र धारी,  
 तनक मे फूट ते गुमान वाको ने गयो  
 फूटे ते, नरद उठ जात वाजी चौसर की,  
 आपस के फूटे कहो कौन की भलो भयो  
 दूध फट जाये घट जाये हे अपार रस,  
 अग कट जाये तन लहत हगस है  
 रतन अमोता के फटे ते घट जाये श्रुति,  
 दन्त के कटे त फील फीनो अति भास है  
 नरद फटे ते वाजी हर जात चौसर की,  
 मेघो के फटे ते होत जत की न आस है  
 'राम' कवि भापै सिरज कान टै विचारो,  
 माता आपस के फूटे ते भलाई को विनास है  
 फूटहि ने लका को विनाश कियो राम कर,  
 फूटहि ने भारत मे मारे मरदाने हैं  
 फूट ने चौहान को फसायो फट वैरियो के,  
 फूटहि ने भाई हाथ भाई मरवाने हे

‘राम’ कवि फूट फटकार के है योग्य सदा,  
 फूट फल खाये मुग्न पाये कहो काने है  
 फूटे भाग्य वाले गो रे फूट बोन वाले,  
 नेक कहिये विचार जो सताने नहिं ताने हैं



### कुण्डलिया

साइं ये न विरोधिये, छोट बड़े सब भाय  
 ऐसे भारी बृत्त को, कुल्हरी देत गिराय  
 कुल्हरी देत गिराय, मार के जमी गिराई  
 टूक टूक कै काट, समुद में देत बहाई  
 कहि ‘गिरधर’ कविराय, फूट जिहि के घर आई  
 हरिनाकस्यप कस, गये बलि रावण साइं  
 साइं बेटा बाप स, बिगरे भयो अकाज  
 हरनाकस्यप कस को, गयो दुहुन को राज  
 गयो दुहुन को राज, बाप बेटा में बिगरी  
 दुशामन दावागीर, हैंमे महि मण्डल नगरी  
 कहि ‘गिरधर’ कविराय, युगन थाही चल आई  
 पिता पुत्र के बैर, नफा बहु कौने साइं,  
 साइं अपने भ्रात को, कवौ न दीजे प्रास  
 पलक दूर नहिं कीजिये, सदा राखिये पास

सदा राखिये पाम, त्रास कबहू नहिं दीजे  
 त्राम दियो लकेश, ताहि की गति मुनि लीजे  
 बहि 'गिरधर' कविराय, राम से मिलयो जाई  
 पाय विभीषण राज, लक्ष्मिनि बाज्यो साई

पद

जगत में घर की फूट बुरी-

घर की फूटहि सों बिनशाई सुवरण लक पुरी  
 फूटहि मां सत्र कौरव नाश भारत युद्ध भयो  
 जाको घाटो था भारत में अरु लो नाहि पुज्यो  
 फूटहि मो जयचन्द्र बुलायो यवनन भारत धाम  
 जाको फल अबलों भोगन सद्य अरज होय गुलाम  
 फूटहि सों नवनन्द विनाशे गयो मगधको राज  
 चन्द्रगुप्तको नाशन बाघो आप नरो सहसाज  
 जो जगमें धनमान और बल आपन राखेन होय  
 तो अपने घर में भूलेह फूट करे जनि कोय

सूर्या

रावण ने कर बन्धु विरोध लख्यो निज सम्पति जान गँवाई  
 बालि ने न्यर्थ सुकठ को कष्ट दे रॉर्टे म्वजीवन राज बड़ाई  
 भूल से भी न कभी करिये निज भाइयो से इस हेतु लडाई  
 काम हैं आते विपत्तिके काल में गाठना कचन पीठफा भाई



## बड़े बड़ाईकी रक्षा करते हैं

बड़े जित्ती लघुता करें, तित्ती बड़ाई पाय

काम करें सब जगतके ताते त्रिभुवनराय

छिमा बडनको होत है, छोटनको उत्पात

का रहीम हरिको घट्यो, जो भृगु मारी लात

पद

सतवादी हरिश्चन्द्र से राजा, नीच घर नीर भरे

पाच पाडु और कुन्ती द्रोपदि, हाड हिमालय गरे

यज्ञ किया बलि लेन इन्द्रासन, मो पाताल धरे

मीरा को प्रभु गिरिधर नागर, विपसे अमृत करे

### बड़ोकी बात मानी जाती है

जो भापें सोई सही, बड़े पुरुष मुख आन

है अनग ताको कहें, महा रूपकी रान

अशुभ करत जो होत शुभ, सज्जन वचन अनूप

श्रवण पिता द्विय दशरथहि, शाप भयो घर रूप

यही बात सब ही कही, राजा करै सो न्याव

ज्यों चौपरके खेलमें पाम पडै सो टाव

बड़े अनीति करें तऊ, दुरो कहै नहिं कोय

यालि हत्यो अपराध बिन ताहि भजैं मत्र लोच

हार बड़ेकी जीत है, निबल न मानै तास

विमुख होय हरि ज्यो कियो, कालयवनको नासै

बडे जु चाहैं सो करैं, कर न मतो उर धारि  
 हरि गिरि तारे जलधि पर, करी सिलातै नारि  
 द्वै ही गति हैं बडन की, कुसम मालती भाय  
 कै सब के सिर पर रहैं, कै बन माहिं विलास  
 हित अनहित गुरुजन वचन, लोपत कयहु न धीर  
 राज काज को छोड के, चले विपन रघुवीर  
 कहैं यहै श्रुति समृती हु, सबै सयाने लोग

तीन दयावत निकट ही, राजा पातक रोग  
 बड़ोंके दोषको कोई नहीं कहता  
 को कहि सकै बडेन सो, लखी बड़ी ये भूल  
 दीने दई गुलाब की, इन डारन ये फूल

### चौपाई

जो अहि-सेज शयन हरि कर ही,  
 बुध कछु तिन कहु दोष न धर हों ।  
 भानु कृशानु सर्व रस खाही,  
 तिन कहैं मन्द कहत कोउ नाही ।  
 शुभ अरु अशुभ सलिल सब बहही,  
 सुर सरि कोउ न अपावन कहही ।  
 समरथ कहैं नहिं दोष गुसाई,  
 रवि पावन सुरसरि की नाई ।

## बडोंके पास सबकी गुज़र होती है

भले बुरे छांटे बडे, रहे बडन पै आय

मकर असुर सुरगिरि अनल दधिमधि सखलवसाय  
गहिये ओट बडेन की, जहा मिटै दुरा दन्द

उदधि मरन मैनाक को, कहु कर सस्यो न इन्द  
भले बुरे निबहै सबै, महत पुरुष के संग

चन्द सर्पजल अगनि विप, वसत शमुके अग  
नीति अनीति बडं सहें, रिम भरि देत न गारि

भृगु उरटीनी लात की, कीनी हरि मनु हारि

### कुरण्डलिया

रहिये लट पट काट दिन, वरु धामैं मा सोय  
छाँह न बाकी बैठिये जो तरु पतरो होय  
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दे है  
जादिन वहै बयारि, टूट तब जडसे जै है

कहि गिरधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये  
पत्ते सब झडजाँय, तऊ छायामे रहिये

वनत देर लगतीहै विगडत शीघ्र है  
सुधरी विगर वेगही, विगरी फिर सुधरै न

दूध फटै काजी परे, सो फिर दूध बनै न  
भली करत लागत बिलम, बिलम न बुरे विचार

भवन बनावत दिन लगै, दाहत लगत न बार

बिगरन वारी वस्तु कौं, कहो सुधारै कौन  
डारे पय औटायकै, मिसरी भोरे नौन  
बिगरी बात बनै नहीं, लाग करो किन कोय  
रहिमन बिगरे दूध के, मथे न माखन होय  
जिहि जोडत तुमको लगी, बहुत देर हे राम ।  
टूट गई इक बचन तैं अब वह प्रीति तमाम

### बलवान महिमा

जोरावर की होतहै, सबके सिर पर राह  
हरि रुकमणि हरि लै गयो, देखत रहे सिपाह  
सिहनको अभिपेक कय, कौन्हो विप्र समाज  
निज भुज बलके तेज तैं, भये भृगनके राज  
वह छुट्रनकं मिलन ते हानि बली की नाहि  
जूथ जेबूकनते नहीं, केहरि कहु नसि जाहिं  
घातासे भले बुरेको पहचान  
भले बुरे सब एकसे, जन तरु थोलत नाहि  
जान पडत हैं काक पिक, ऋतु बमत के माहि  
मधुर बचन से जात मिट, उत्तम जन अभिमान  
तनिक शीत जलसे मिटै, जैसे दूध उफान  
बात कहन की रीतिमे, है अन्तर अधिकाय  
एक बचन से रिस बढै, एक बचन ते जाय

कहै रसीली बात तो, विगडी लंत सुधार । ।

सरस लौनकी ढालमे, ज्यां नीवू रस डार  
कर विगडी सुधरै वचहि, जैसे बनिक् विशंप

हांग मिरच जीरो कहै, 'हग' 'भर' 'जर' लिखलेष  
सभमै अन सममै कछुक, कहिये मीठी बात

बालक के सुन सुन वचन, जैसे श्रवण सुहात  
भले भले ही कहत है, पैत कहत हैं दोष

सूरदास कहि अन्ध को, उपजावत हैं तोष  
भले बुरे को जानिये, जान वचनके बन्ध

कहै अन्धको सूर डक, कहै अधको अध  
पाय प्रकृति वश कीजिये, करि बुधि वचन विवेक

लष्ट पुष्ट सो एक को, यष्ट मुष्ट सो एक  
करिये सभा सुहावतो, मुख तैं वचन प्रकाश

बिन समझे ममपालको, बचनन भयो विनाश  
परुष वचन तैं रोष हित, कोमल वचन समाज

रजक पछारथो कूवरी, राख लई ब्रज राज  
हसन के ढिग बैठ करि, लीजे मौन सहाय

वक, वक, वक मत कीजिये, जाती जानी जाय

**विपत कालमें कोई साथ नहीं देता**

यदपि आपनो होय तऊ, दुरतमें करत न पीर

ज्यो दुरतती अँगुरी निकट, दूसरि ताहि न पीर

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहिचान

मोच नहीं बित हानिको, जो न होय हित हानि

निम्नट न लागत भीत हितु, विपत कालके माहिं

होत अधेरो तजत है, संगति अपनी त्राहिं  
मवैया

चारिध तातहुसे विधिसे सुत सोम सुधा सु, सहोदर दोऊ  
रमा रमा तिमकी भगिनी मधुवा मधु सदनसे वहिनोऊ  
तुच्छ तुपार इतौ परिवार भयो सरमध्य सहाय न कोऊ  
सूख सरोज रहयो जल हीन नही दुरामे किटिकोकोउ होऊ

**बुरे लगते हे**

सम्पति धीते विलसवो, सुरको चाहै कोय

रुख उरकरे फूल फल, कैधौं कैसे होय

पिछनेपन का रति कथा, जल सूखे कासार

ज्ञान भये समार सुर, बित्त गये परिवार

दुजंन सगति जगत रति, पर दुरा वायक वात

मान विना धन कोटिह, मज्जनको न सुहात

**भक्तका उपालंभ**

धोरेई गुण रीसते, बिसराई वह धानि

तुम हू कान्ह मनो मये, आज कालके दानि

रुचको टेरत दीन रत, होत न श्याम सहाय

तुम हू लागी जगत गुरु, जगनायक जगवाय

ज्यों हैं हृ त्यां होंहुगो, हो हरि अपनी चाल  
हठ न करो अति कठिन है, मो तरिवो गोपाल

## भक्ति उपदेश

जप माला छापा तिलक, सरं न एको काम  
मन काचे नाचे वृथा, साँचे राचे राम  
सौ लग या मन मदनमें, हरि आवें किहि बाढ  
निपट विकट जब लो जुटै, मुलै न फपट कपाट  
अपने अपने मत लगे, बादि मचावत शोर  
ज्या त्यां सेवो सबहि को, एकै नन्द विशोर  
सोरठा

मैं समझो निरधार, यह जग काचो काच सो  
एकै रूप अपार, प्रतिविम्बित लखिये जहा

## भक्ति महिमा

जो नारायण भक्त है, नारायण मतिमन्द  
तो मरसै मौ मांति सो, गुण धर दोहा छन्द  
रहिमन मनहि लगाय कै, देख लैहु किन कोय  
नरको वश करिबो कहा, नारायण वश होय  
जिहि रहीम चिन आपनो, कीनो चतुर चकोर  
निशिवासर लागो रहै, कृष्ण चन्द्र की ओर  
मतत सम्पति जान कै, मथको सब कुछ देइ  
दोन बन्धु बिन टीन की, को रहीम मुधिलेइ

समय दशा कुल देख कै, लोग करत सन्मान

रहिमन दीन अनाथ थो, तुम बिन का भगवान  
धूर धरत नित सीसपर, रुहु रहीम किहि काज

जिहि रज मुनि-पत्री तरी, सो दूढत गज राज  
इहि शरनागत राम की, भवसागरकी नाव

रहिमन जगत उधार कर, और न कट्ट उपावः  
जिहि रहिमन तन मन दियो, क्रियो हिये बिच मौन  
तामो दुरग सुख कहनकी, रही बात अब कोन  
घनाक्षरी

पासनि सो बाध कै अगाध जल थोर राखे,  
तीर तरवारन मो मारि मारि हारें हैं ।  
गिरि तै गिरायदिये डरपे न नेक तन,  
भूधर ते मतवारे हाथी तर डारे हैं ।  
फेरे मिर आरा लै अगिनि माम्क जोर पुनि,  
पूछे मीड शातन लगाये नाग कारे है ।  
पूछे ते बतायो खम तहई दिरसायो रूप,  
प्रगट अनूपदास बानि ही से प्यारे हैं ।

दोहा

कोऊ कोटिक समहो, कोऊ लाख हजार  
मो सम्पति यदुपति मदा विपति विदारन हार  
या अनुरागी चित्तकी, गति समझै नहि कोय  
ज्यो ज्यो वृद्ध श्याम रग, त्यो त्यो उज्वल होय



जो अनेक अवगुण भरी, चाहै याहि बलाय ,  
मो पति सम्पति हू बिना, यदुपति राखै जाय

### भय स्थानसे बचो

जिहि दिशि भय तिहि दिशि कबहु, ना जै ये करि चोज  
गज तिहि मग पग ना धरे, जहा सिंह को रोज  
दुर्दिन परे रहीम कहि, दुरथल जैयत भाग

ठाढे हूजत घर पर , जब घर लागत आग

### भले बुरे दिनोंका अन्तर

दिवस भले विगै न कहु, रहो निचीते सोय  
आपे चोरी करन को, चोर आवरो होय  
प्रापतिके दिन होय है प्रापति बारम्बार

लाभ होत व्योपार मे, आमत्रण अधिकार  
अप्रापति के दिनन मे, खर्च होत अविचार

घर आवत हैं पाहुने, बनज न लाभ लगार  
भली किये हैं हे तुरी, देखो विधि प्रीप्रानि

भक्ति करी द्विज जमदिगनि, अर्जुन करी अनीति  
रहिमन चुप हैं बैठिये देख दिनन को फेर

-जब नीके दिन आयहै, बनत न लग है डेर  
सबैया

बन्धु विरोध करे सिंगरो मंगरो नित होत सुधारस चादन  
मित्र कर् करनी रिपुकी धरनी धर देखन न्याउ निपातट

राम कहैं विप होत सुधा, घर नारि सती पतिसो चित फाटत  
मा विधना प्रतिकूल जबै तव उट चढे पर कूकर काटत

### भाग्य-फल

जाकी प्रापति होय सो, मिलै आपतैं आय

मेवा क्रोम हजार को, किहि किहि ठौर न पाय  
होय बदा सो भाग्यमे, आपहि मिलि है आय

चूहा बिल को खोति करि, पडै साप मुग्न जाय

### भाग्य हीन

भाग्य हीन को ना मिलै, भली वस्तुका भोग

दारु पकै मुग्न पाक को, होत काक को रोग

भाग्य हीन को देव हू, देत सु लेत धनेन

दीठ परे जहैं वस्तु तहें, चले मूढ कं नेन

आवत समय विपत्ति को, मित्र शत्रु हँ जाय

दुहत होत बद्ध बँधन को, यम्भ मात को पाय

जो पुर्यारथ ते कहू, सम्पति मिलति रहैमि

पट तागि वैराट घर, तपन रमाई भीम

द्विपय

गजा नर शिर भानु तापत दग्धन लाग्यो

विधि बश छाया हेत, ताड तरवर तर भाग्यो

ताहि जात तिहि ठौर, वृक्षत फल इक टूट्यो

भयो भयानक शब्द, गिरन गजा शिर फूट्यो

श्री शिव सम्पति कवि मनै, सुनो मुख्य यह बात है  
विपति सग लगिजात तहँ, भाग्य हीन जहँ जातहै

## भावी

दूर रुहा नियरे कहा, होन हार सो होय

जर सोचे नारेलको, फलमें प्रगटै तोय

राम न जाते हग्नि सग, सीय न रावण साथ

जो रहीम भावी कतहु, होती अपने हाथ.

यह निहचै करि जानिये, जान हार सो जाय

गजके भुक्त कपित्थ लों, ज्यो गिरि बीच बिलाय

जान हार सो जाय अरु, होन हार हँ जाय

रावणतँ लका गई, बसे बभीषण पाय

तुलसी जम भवितव्यता, तैसी मिले सहाय

आप न आवै ताहि पै, ताहि तहँ लै जाय

सुनहु भरत भावी प्रवल, बिलस कह्यो मुनि नाथ

हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ

भरद्वाज सुन जाहि जय, होत विधाता वाम

धूरि मेरु सम जनक यमु, ताहि व्याल सम दाम

चौपाई

कल्पयेलि जिमि बहु विधि लाली, साँच सनेह सलिल प्रतिपाली

फूलत फलत भयो विधि वामा, जानि नजाय काह परिणामा

लिम्पत सुधाकर लिखगा राह, विधि गति वाम सदा सथ काहू

दोहा

हरि रहीम गेसी करी, ज्या कमान सर पुर  
रैच आपनी ओर को, डार दियो पुनि दूर

पद

करम गति टागे नाहिं टरी (टेक) -

मुनि वसिष्ठ से पण्डित ज्ञानी सोध के लगन धरी

सीता हरन मरन दशरथ को वन में विपत परी

कहै वह फद कहाँ वह पारधि कहै वह मृग चरी

सीता को हर लेगयो रावण सुवरन लक जरी

नीच हाथ हरिचन्द्र विकाने बलि पाताल धरी

कोटि गाय नित पुन्न करत नृग गिरगट जौनि परी

पाडव जिनके आप मारथी तिन पर रिपत परी

दुर्योधन को गरब मिटायो यदु कुल नास करी

राहु केतु औ मानु चन्द्रमा विधि सजोग परी

कहत कबीर सुनो भाई साधो होनी होत खरी-

घनाक्षरी

भावीको बनाव दाग अकथ अपार बल,

चलत न चारे हारे भूर बलवान हैं ।

नल से नरेश गहि गादी से गिराय दीने,

नारि दमयन्ती कर छोरत अपान हैं ।

मौजी बश राम सग कचन कुरग धाये,

अक्ष इव लीने कर बीच धनु वान हैं ।

राम कवि पेमे ही युधिष्ठिर त्रिचार वान,  
आपद अपार सही हारे धन धान हैं ।



## मतलवी-मित्र

अपनी अपनी गरज सब, बोलत करत निहोर  
बिन गरजे बोले नहीं, गिरवर हू को मोर-  
स्वारथ के सब ही सगे, बिन स्वारथ कउ नाहि  
सेवै पछी सरस तरु, निरस भये उड जाहि  
बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ कडवे बैन

लात राय पुचकारिये, होय दुधारु धैन  
जिहि जासो मतलव नहीं, ताकी ताहि न चाह  
ज्यो निम प्रेही द्रव्यके, तून समान सुर नाह  
नर कारज की सिद्धि लो, करै अनेक प्रकार

दृष्टें रोग शरीर तैं, को बूढे उपचार  
चहल पहल अवसर परे, लोक रहत घर घेर  
ते फिर दृष्टि न आवहीं, जैसे फसल बटेर

सर सूखे पछी उडै, औरै सरन समाहि  
दीन मीन बिन पन्छ क, कहु रहीम कहैं जाहि  
कुण्डलिया

साई सब ससार मे, मतलव का ज्योहार  
जब लग पैसा गाठ मे तबलग ताको यार

तत्र लग ताकोयार यार सगहि सग डोलै  
पैसा रहा न पास,यार मुखमे नहि बोलै  
कहि गिरधर कविराय, जगत यहि लेखाभाई  
करत वेगरजी प्रीत, यार जोई विरला साई  
कृतिघन कवहु न मानही कोटि करे जो कोय  
सर्वस आगे राखिये, तउ न अपना होय  
तउ न अपनो होय, भले की भली न माने  
काम काढ चुप रहै, फेर तिहि नहि पहचाने  
कहि गिरधर कविराय, रहत नितही निर्भय मन  
मित्र शत्रु सब एक, दाम के लालचि वृतघत

दोहा

अपनी प्रभुता कों सभै, बोलत भूठ बनाय  
वेश्या बरस घटावती, जोगी बरस बढाय।

### मित्र लक्षण

मित्र मित्र के काम कों देत विभव करि हेत  
जैसे चन्द्र प्रकाश करि, रधि मण्डल ते लेत  
मथत मथत माखन रहे, दही मही मिलगाय  
रहिमन मोई मीत है, भीर परे ठहराय  
जाल परे जल जात यहि, तजि मीनन को मोह  
रहिमन मछरी नीर को, तउ न छाटति छोह

कहि रहीम सम्पति संगे, वनत बहुत बहु रीति  
विपति कसौटी जो कसे, तेई साचे मीत  
चौपाई

निज दुख गिरि सम रज के जाना,  
मित्रके दुख रज मेर समाना ।  
जिन के अस मति सहज न आई,  
त सठ हठ कत करत मित्ताई ।  
कुपथ निवार सुपन्थ चलावा,  
गुण प्रगटे श्रवणगुणहि दुरावा ।  
विपति काल करि शत गुन नेहा,  
श्रुति कहि सन्त मित्र गुण एहा ।  
जो न मित्र दुख होहिं दुखारी,  
तिन्हे त्रिलोकत पातक भारी ।

### मिथ्याऽभिमान

यश मिथ्या अभिमान को, नेकहु जग मे नाहि ।  
वन वन विगडैं बुल बुले, ज्यों वर्षा जल माहि  
जो मिथ्या धन धाम पर, करता है अभिमान  
मनो कूपकी मैड पर, सोवत चादर तान  
धन धारा अर सुतन मे, रहत लगाये चित्त ।  
क्यो रहीम खोजत नहीं, गाढे दिन को मित्त

कहु रहीम केतिक रही, केती गई विताय

माया ममता मोह परि, अन्त चलो पछिताय  
अरे मरे कितने ररे, धरे चित्त निज हाय

गया न तू नहिं साथ तुव, जात नाम रघुनाथ  
जगत जनयो जिन सकल, सो हरि जान्यो नाहि  
ज्यो आँखन जग देखिये, आँख न देखी जाहिं  
भजन कह्यो ताते भज्यो, भजो न एको चार  
दूर भजन जाते कह्यो, सो तै भज्यो गँवार

### मूर्ख कृत निन्दा

दोष धरै गुण को पिशुन, इह उर गुनिन विसारि

जू के भय तैं बसन को, देत कहा कोउ डारि ?  
जो बडेन को लघु कहैं, नहिं रहीम घटि जाहिं

गिरधर मुरली धर कहे, कछु दुख मानत नाहि  
शशि की शीतल चादनी, सुन्दर सषहि सुहाय  
लगे चोर चित में लटी, घटि रहीम मन आय

शीत हरत तम हरत नित, भुवन भरत नहिं चूक  
रहिमन तिहि रवि को कहा, जो घटि लखै उलूक  
शीतलता ऽरु सुगन्ध की, महिमा घटी न मूर

पीनस धारे जो तज्यो, सोरा जानि कपूर  
मूरख के अपवाद तैं गुणी न होत मलान

ज्यों मौकत है श्वान पै, धरै न गज कछु ध्यान



सर्वथा

पीनम वारो प्रवीन मिले, तो कहा लौ सुगन्धि सुगन्ध सुघावे  
कायर कोष चढै रन मे तो कहा लागि चारण चाव चढावै  
जैसे गुणी को मिलै निगुणी तो पुष्पी कहै क्योकर ताहि रिभाये  
जो प नपु सक नाह मिलै तो कहा लागि नारिश्ट गार बनावै

### मोह, ज्ञान अन्तर

मोह महातम रहत है, जौ लौ ज्ञान न होत

कहा महातम रहत है ?, आदित भये उदोत

मोह प्रबल ससार मे, सय को उपजै आय

पालै पोपै रग वचन, दै है कहा कमाय

भये ज्ञान अज्ञान नहि, है अज्ञान न ज्ञान

मानु उपो तो तम नहीं, है तम उपो न भान

### यथा योग्य .

यथा योग्य की ठौर बिन, नर छवि पावै नाहि

जैसं रत्न कथीर मे, काच कनक के माहि

अपनी अपनी ठौर पर, सब को लागै दाव

जल में गाडी नाव पर, थल गाडी पर नाव

इक गुन तैं सोभा लहै, इक अवगुन अवरोह

शोभ उरोजन पीनता, त्यो कटि कृशता सोह

जा लायक जिहि होय सो, ताही ठौर मनोग

चन्देरी पति क्यो धरै रुक्मणि श्री हरि जोग

मान मरोवर ही मिलै , हमन मुक्ता जोग

सफरिन भरे रहीम सर, बक बालक नहिं योग

बे न यहा नागर बडे जिन आदर तो आव

फुल्यो अन फुल्यो मयो, गैवई गाव गुताव

धरले सुध मगह कै, रहे सब गहि मौन

गधी गन्ध गुलाब को, गैवई गाहक कौन

यथा योग्य विन को लहै, कहहु राम सम्भान

मूढ हमत हैं हहर कै, सुन सुरागकी तान

## याचक निन्दा

सचतै लघु है मागिबो, यामे फेर न सार

बलि पै याचत ही भयो, वामन तन करतार

वृन अर तूल दुहन ते, हरुची याचक आहि

जानत है कछु मागि है, पवन उडावत नाहि

इक विन मागे ही लहै, मागे एक लेहै न

घन जल भर सरिता भरै, चातक चोंच भरैन

माता स्नन पय पान को, समझ भीक की बाल

दातन उँगली धरत है, पछतावतहै बाल

क्यहु न सम्पति भीक करी, चिर स्थायनी होत

इत आवत उत जात है, यथा कला निधि जोत

सागे घटे रहीम पद, नितो वगे घटि काम

तीन पैग वसुधा करी तऊ बावनै नाम

रहिमन वे नर मर चुके, जो कहु मांगन जाहि  
 उनसे पहिले वे मरे, जिन मुख निकसत "नाहि"  
 रहिमन याचकता गहे, बडे छोट ह्वै जात  
 नारायण हू को भयो, बावन आँगुर गात  
 ये रहीम घर घर फिरैं, मांग मधूकरि खाहिं  
 चारो चारी छोडदो, वे रहीम अब नाहिं  
 घर घर डोलत दीन ह्वै, जन जन याचत जाय  
 दिये लोभ चशमा चरन, लघु पुनि बडो लखाय  
 याचक नर के वदनते, हटत तेजकी जोत  
 जलट जलधिसे जल गहत, श्याम वर्ण ज्यो होत

सवैया

हे करतार ! हा तोसो कहू कयहू जनि दीजिये काहुको टोटो  
 और लिरयो जनि काहुके भाग्यमे मालके काजे महीपन मोटो  
 तू हु तो जानत है अपने जिय मांगते कछु और न रोटो  
 जो गयो मांगन तू बलि द्वार तो याहीते ह्वै गयो बावनछोटो  
 "मुझे दीजिये कुछ" यो कहि जब याचक कर फैलाता है  
 तमी शरीर कापने लगता उसका स्वर घट जाता है  
 उसी समय उसके शरीरसे ये पाँचो हट जाते हैं  
 ज्ञान तेज बल और मान यश अधम प्राण रहे जाते हैं



## धनाक्षरी

चातुर चालाक शक वक्ता हो विशुद्ध सूर,  
 भूर बलवान गान गायक रिक्तात है ।  
 परिडत अग्रड गुण वारिध सुमडित हो,  
 चन्द्रमा समान रूप योवन दिखात है ।  
 कविता सुलीन छन्द बन्धत विहीन दोष,  
 समता न जक्त माम्क जाकर लखात है ।  
 कहत सु राम जे तो गरुता गरूर सबे,  
 “क्षीजिये” कहे ते एक पल में दुरात है ।

## योग्यताकाही मान हे

## दाहा

भयो बडप्पन के विना, को उच्चासन जोग  
 बैठौ काग मुडेर पर, गरुड न माने लोग  
 कुण्डलिया

बड़े न हूजें गुनन विन, विरट बडाई प्राय  
 कहत धतूरे सो कनक, गहनो गढो न जाय  
 गहनो गढो न जाय, धतूरे सो किहि भाँती  
 पुष्कर जलसो कहत, सुरभि नहीं गध सुहाती  
 चन्द कपूर न कान्ति, जाति उडि त्यां दिन दूजै  
 सु कवि नामते कहा, गुनन विन बडे न हूजें

## लक्ष्मी चञ्चल है

साची सम्पति और की, और भोगिन आय

कन सम्ह चीटीन को, ज्यो तीतर चुग जाय

धन अरु गेंद जु खेलको, दाऊ एक सुभाय

करमें आवत छिनकमें, छिनमें करते जाय

कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय

पुरुष पुरातनकी बधू, क्यो त चचला होय

कमला थिर न रहीम कहि, लखत अधम जे कोय

प्रभुकी सो अपनी कहै, क्योन फजीहत होय

नारी काह रक की, अपनी कहे न कोय

हरि नारी अपनी कहे, क्यो न फजीयत होय

## लोभ निन्दा

निज परछाई नोर मे, देखत लपको श्वान

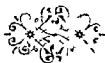
मुख हू की रोटी बही, भौंकत रहौ अजान

नाशवान ससारमे, अधिक मोह मत मान

जो गठरी हलकी रही, मजिल है आसन

टरे न दुर्जन लालची, करो लार अपमान

मक्खी फिर फिर आत है, तजे न जब लग प्रान



लोभभी वही अच्छाहे जो आशा पूरी करे

लालच भी ऐसो मलो, जासों पूरै आस

चाटे हू कहु ओसके, मिदत काहुकी प्यास ?

देग ठिकाना मागिये, मागे मिले जु होय

मुनि घर भीतर कागही, दूढे लहत न कोय

अपने लालचके लिये, दुखहू आवै दाय

रान विंथाये रमाय गुरु, पहरै वीर बँधाय

वाचाल निन्दा, मौन महिमा

वरुवादी को नीच पद, मौनी को सत्कार

नूपर पायन पडत टै, चढत कुचन पर हार

पायल पाय लगी रहै, लगे अमोलक लाल

भोडर हू की भासि है, बेंदी मामिनि भाल

बहुत न बकिये कीजिये कारज अवसर पाय

मौन गहे एक दाव पर, मछली लेत उठाय

विचार-प्रशंसा

बुरे लगत हितके बचन, हिये विचारो आप

कडवी भेषज बिन पिये, मिटै न तनको ताप

करिये सुखको होत दुख, यह कहु कौन सयान

वा सोने को जारिये, जासों टै कानदू

भले सुरे जह एकसे, तहा न वसिये जाय

ज्यो अन्यायपुर में विके, रसर गुर एकै भाय  
निष्फल श्रोता मृढ पै, वक्ता वचन विलास

हाव भाव ज्यो तीय के, पति ओ वेके पास,  
न करि राम रँग देख सम, गुण बिन समझे वात  
गात घात गौ द्रधतै, सैहुड कै ते घात

बिन कुल गुन जाने बिना, मान न कर मनुहार  
ठगन फिरत सब जगतको, भेष भक्तको धार  
मूरखको पोथो दर्द, बोचन को गुण गाथ

जैमे निर्मल आरमी, दर्ई अन्धके हाथ ।

हरि रस परिहरि विषय रस, मप्रह करत अजान  
जैसे कोऊ करत है, छोड सुधा विष पान ।

जासो निबहै जीवका, करिये सो अभ्यास  
वेड्या पाल शील तो, कैसे पूरै आस

जाको जैसो उचित तिहिं, करिये सोइ विचार  
गीदड कैसे ल्याय है, गज मुक्ता गज मार

कहिये वात प्रमान की, जासो सुधरै काज

फीकौ थोरे तानते, अधिकौ रसाये नाज  
चतुर धूर इक्मे रात, जाके नही विवेक

जैसे अचुथ गेंवार को, पाच काच है एक  
अपनो समय विचार कै, अरि जीतिये अचुक

दिवस काग घूफहि हर्न, कागहि निशि ज्यो घूक  
 छल बल समय विचारके, अरि हनिये अन्याम  
 कियो अकेले द्रौण सुत, निसि पाडव कुल नाम  
 सुन्दर यान ने छोडिये, जौ लो होय न और  
 पिछलौ पाव उठाइये, देस धरन को ठौर  
 फिर पीछे पछताइये, सो न करै मति सूध  
 बदन जीभ हिय जरत है, पीमत तातो दूध  
 इ गत तैं आकार तैं, जान जात जो भेट  
 तासो बात दुरै नहीं, ज्यो दाईसे पेट  
 सुनिये सब हीकी कही, करिये स्वहित विचार  
 मर्न लोक राजी रहें, सो कोजे उपचार  
 देसा देसी करत सब, नाहिन तन्व विचार  
 या को यह अनुमान है, भेड चाल ससार  
 तिहि प्रमाण चलिवो भलो, जो सब दिन ठहराय  
 उमड चलै जल पारतें, जो गहीम बढ़ जाय  
 रहिमन देस बडन को, ताघु न दीजे टार  
 जहा काम आवै मुई कहा करै नलपार  
 फल विचार कारज करो, कगो न व्यर्थ भ्रमेल  
 तिल सम बालू पेलिये, नाहिन निकमत तेल  
 पीछे कारंज कीजिये, पहिले पटुच विचार  
 कैसे पावत उच्च फल, वामन बाह पमार



जो करिये सो कीजिये, पहले कर निर्धार

पानी पी घर पृच्छिये, नाहिन भलो विचार  
पीछे कारज कीजिये, पहिले यतन विचार

बडे कहत हैं वाधिये पानी पहिले पार  
ठीक किये विन और की, बात साच मत थाप  
होत अधेरी रैन में, परी जेवरी साप

कुण्डलिया

विना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय  
काम विगारे आपनो, जग में होत हैंसाय  
जग में होत हैंसाय, चित्त में चेन न पावे  
स्नान पान सन्मान, राग रँग सनहि न भावै  
कहि गिरधर कविराय, दु स कुछ टरत न टारे  
खटकत है जिय माहि, करे जो विना विचारे

चौपाई

सहसा करि पाछे पचताहीं, कहत वेद बुध ते बुध नाहीं

विद्या दान महात्म्य

निस दिन विद्या दान तैं, होत न विद्या दूर  
खिंचत रहत जल रूप ते, तऊ रहत भर पूर



## विद्या नीच से भी लो

उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीच पै होय  
परथो अपावन ठौर पर, कचन तजत न कोय

## विद्या विहोन निन्दा

विद्या विन न विरोजई, यदपि सरूप कुलीन

ज्यो सोभा पावे नहीं, टेसू वास निहीन  
होत बहुत धन होत तऊ, गुण युत भये उदोत

नेह भरथो दीपक तऊ, गुण विन जोति न होत  
कहा भयो जो धन भयो, आदर गुण तैं होय

कोटि दीप धारी धनुष, गुण विन गहत न कोय  
नहीं रूप कुछ रूप है, विद्या रूप निधान

अधिक पूजियत रूप ते, विना रूप विद्वान

## विपरीत

जिय पिय चाहै तुम करो, घन चन्दन उपचार

रोग कष्ट औपधि कष्ट, कैसे होत करार  
प्रेम पगत बरजी न ज्यों, अथ बरजत वे काज

रोम रोम विप रम गयो, नाहिन बनत इलाज  
रोप मिटै कैसे कहत, रिस उपजावन यात

इंधन डारै आग मे, वैसे आग बुझात

निपट अमिलती यातनो, वैसे करि है कोय  
वसन नील के माट में, कयह लाल न होय

## विरह-दशा

विरही जनकं चित्त कौ, नाहि रहत बुधि बोध  
 विर चर का वृक्त फिरै, राघव सीता सोध  
 विरह रूप घन नम भयो, अवधि आश उद्योत  
 ज्यो रहीम भादो निशा, चमकि जात खद्योत  
 विरही जन व्याकुल रहै, भूलि जात सुर नैन  
 चकवा चन्वी विछड ज्यो, तडपत है सब रैन

### घनाचरी

दृष्टि जात ग्यान पान भूपन वसन भौन  
 दृष्टि जात वित्त देश प्रेम की पगन मे  
 तात मात दारा पति पुत्र सखा बन्धु छुटै,  
 तन मन प्रान दृष्टै नैन की रगन मे  
 रसिक विहारी नेम धर्म परलोक लोक,  
 दृष्टिजात मोद बहु चित्त की ठगन मे  
 ये ते सब दृष्टि जात रचह न लागै बार  
 विरह न दृष्टै नेक नेह की लगन मे

### सवैया

विरही समभायहु धीर हिये न धरै न धरै, न धरै न धरै  
 जग लोगहिसो रसिकेश कट्ट न डरै न डरै, न डरै न डरै

निज प्रीतम के बिन एक घरी न भरै न भरै न भरै न भर  
विधि काहुहि प्रीय बिछोह कवौ न करै न करै न करै न करै  
फल है तिहि के शत कर्मन को जिहि के जिय माहि सदा कल है  
कल है नहि जाहि कलेशनते न लगै कहु ताहि कट्ट भल है  
मल है रसिकेश सदा अति सा हठ कै दृढ प्रेमहि जो न लहै  
न लहै निज मीत वियोग कत्रौ जग जीवन को सुयही फल है

## विरोध

रहै न कवहु दौय गल, एक सदन के माहि  
एक म्यान में द्वै छुरी, जैसि समावै नाहि ।

## विश्वास-महिमा

सिद्ध होत मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीति  
तिरिया अपने कारने, लिख पूजत है भीति  
वैर है

छप्पय

वैर धनी निर्धनी, वैर कायर अरु सूरहि  
घृत मधु मारपी वैर, वैर निम्भूहिं रूपूरहि  
मूसे सर्पहि वैर, वैर पावक अरु पानी  
जरा जोवना वैर, वैर मूरख अरु शानी  
बड़ बर-चोर जिम चन्द सनु, धिरहनि वैर बसतसो  
नरहरी सुकच्य कचित्त किय, भगत वैर अदत्त सो

## शत्रुसे मित्रता न करो

वेर भाव जह भूल हू, मिलत न करिये कोय

मूसे और विलार में, कबहु प्रीति न होय  
निहचै कारन विपति को, किये प्रीति अरि सग  
मृगको मुख मृगराजके, होत कबहु तन भग

कुण्डलिया

जाकी धन धरती हरी, ताहि न लीजे सग  
जो चाहे लेतो बनै, तो करिडार निपग  
तो करिडार निपग, भूल परतीति न कीजे  
सौ सौ सौहैं राय, चित्त मे एक न दीजे  
कहि गिरधर कविराय, सटक नहि जै है ताकी  
अरि समान पर हरिय, हरी वन धरतीजाकी  
चौपाई

यदपि मित्र प्रभु पित गुरु गेहा, जाइय बिन बोले न सदेहा  
यदपि विरोधमान जहँ कोई, तहाँ गये कल्याण न होई

## शत्रुसे सचेत रहो

अरि छोटे गनिये नही, जातै होय विगार

तृण समूह को तनिक मे, जारत तनक अगार  
छोटे अरि पर चढहु सजि, सुभट शस्त्र तन त्रान  
लीजै ससा अखेट पर, नाहरको सामान

कहु रसमे बहु रोसमे, अरि सों जिन पतिआय

जैसो सीतल तपत जल, डारत आग बुझाय

हीन जान न विरोधिये, हो अति तन दुखदाय

रजहू ठोकर मारिये, चढै सीस पर आय

कागजको सौ पूतरा, सहिजहिमे घुल जाय

रहिमन यह अचरज लखो, सोऊ खीचत वाय

रिपु तेजमो अकेल अति, लघु कर गनिये न ताहु

अजहु देत दुख रवि शशिहि, शिर अवशेषत राहु

**शिखा अधिकारीको देनी चाहिये**

गुरुह सिखावै ज्ञान गुण, शिष्य सुबुध जो होय

लियै खरधरी भीत पर, चित्र चितैरो कोय

सुबुध बीच पर टहन को, हरत कलह रस पूर

करत देहरी दीप ज्यों, घर आगन तम दूर

बुद्धि बिना पिद्या कहो, कहा सिखावै कोय

प्रथम गावही नाहि तो, मीम कहा ते होय

सुबुध अबुध की सेव को, यह मरूप जिय थाप

धलमे रोपित कमल ज्यो, बधिर कर्ण ज्यो जाप

कहा करै आगम निगम, जो मूरख समझै

दोष न दर्पण को कट्ट, अन्ध बदन देखै

शान्त्र सुने निपफल सफल, जो नहि होय बिकेक

स्वाद न जानत कर्छली, चाग्रत पाक अनेक

निष्फल है मति मन्द को, यों उपदेश पत्रि  
 ज्यों अन्धे के सामने, महा मनोहर चित्र  
 अधिकारी को सोर दे, अनधिकारि को छोड़  
 बजर हो तो जोतु ले, कष्ट को मत तोड़  
 सीख दीजिये पात्र को, त्याग कुपात्र कुठाम  
 जन्मत बीज सुगेनम, ऊपरमे नहिं जाम  
 शिजा कबहु न दीजिये, यथा योग्य विन राम  
 लालटेन की रोशनी, अन्धे के किस काम  
 शिजा दिये सुपात्र को, होत बडो उपकार  
 मुनि प्रेरे-वाल्मीक से, सुख पावत ससार

### सज्जन महिमा

अहित किये हूँ हित करे, सज्जन परम सधौर  
 सोगे हूँ शीतल करे, जैसे नीर समीर  
 उर ही तैं उत्तम प्रकृति, सज्जन परम दयाल  
 कौन मिरावत है कहो, राज ह्म को चाल  
 जे उत्तमते अधम सो, धरत न रिम मन भाहिं  
 घन गरजे हरि हूकरैं, स्यार बोल मुन नाहि  
 बडे सहज ही बात से, रीझ देत बेकसीस  
 तुलसीदल से विष्णु ज्यों, आक धतूरे ईस  
 सहज रसीले होय सो, करे अहित पर हेत  
 जैमे पीड़ित कीजिये, तऊ ईस रस देत

उत्तम पर कारज करे, अपनो काज बिसार  
पूरें अन्न जहान को, ता पति भिक्षाधार  
सन्त कष्ट सहि आपही, सुखि राखे जु समीप  
आप जरें तउ और को, करे उजेरो दीप  
बुरी करे परे जे भले, भली करे हित धार  
जैसे दधि बाध्यों तऊ, कपि दल दियो उबार  
बड़े विपन हू मं करे भल बिरानं काम  
क्रिय विराट पतिकी विजय, अर्जुन कर सग्राम  
बडे बड़ेई काम कर, आपु सराहत नाहि  
जय जस उत्तरको दियो, पथ विराटक माहि  
निन पूछे ही कहत हे, सज्जन हित के ब्रैन  
भले बुरेको कहत है, ज्यां तमचर गतरेंन  
विना कहे हू सत पुरुष, परकी पूरें आस  
कौन कहत है सूर को, घर घर करत प्रकास  
जे घर आने शत्रु हू, सुमन देत सुख चाहि  
ज्यां काटे तरु मूल कउ, छाह करत वह ताहि  
प्रीति छुटे हू सुजनके, मनत हेत छुटेन  
कमल नालको तोरिये, तत्रापि रुत छुटेन  
सज्जन के प्रथ बचनतै, मन सन्ताप मिटाय  
जैमे चन्दन नीरतै, ताप ज्यु तनका जाय



निश दिन खटकत तनक तृण, पडे जु आपन माहि  
 तिनमे सज्जन राखिये, सो छिन खटकत नाहि  
 सुजन वचन दुर्जुन वचन, अन्तर बहुत लखाय  
 वे सबको नीके लगै, वे काहू न सुहाय  
 तुला सुईकी तुल्यता, रीति सुजन की दीठि  
 गरुवे दिशि नै जात हैं; हरुजेको दै पीठि  
 जह तह सुजन मिलै नही, गुण गरुवे जग माहि  
 ज्योति भरे पानिप भरे, प्रति गज मुक्ता नाहि  
 बहु धन बीते तनिक धन, सचै सुजन करै  
 मनन हानि उपज तहा, कन कन कवहू भरै  
 शील काम कुल युत चतुर, पुरुष परिचा जान  
 ताडन छेदन कस तपन, इनते कनक पञ्चान  
 रस पीने विनही रसिक, रस उपजावत मन्त  
 दिन बरसै मरमै करै, जैसे विटप वसन्त  
 जहा सुजन तह प्रीति है, प्रीति तहा सुख ठौर  
 जहा पुप तह वास है, वास जहा तह भौर  
 सुजन करत उपकार को, वित माफिक जग माहि  
 गहरे गहरी छाह तरु, विरले विरली छाहि  
 सज्जन भो रस पोखिये, ल्यों ल्यों बढत हुलास  
 जेतो भीठो वस्तु मे, तैतो अधिक मिठास

( १२१ )

विपत पडे हू डेत हैं, सत पुरुषन के काम  
राज विभीषण को दियो, वैसी विरया राम  
सुजन बचावत कष्ट तैं, रहैं निरन्तर साथ  
नयन सहाई ज्यो पलक, देह सहायक हाथ  
सब के सुख कर होत हैं, सत्पुरुषन के अग  
हरि चन्दन सों सुख लहैं, भृङ्ग भुजङ्ग गिहङ्ग  
यो रहीम गति बडन की, ज्यो तुरङ्ग व्यग्रहार  
दाग दिखानत आप तन, सही होत असगर  
तरुवर फल नहिं खात हैं, मग्वर पियत न नीर  
कहि रहीम पर काज हित, सन्तन धरे शरीर  
आप करे उपकार अति, प्रति उपकार न चाह  
हियरो कोमल सन्त मम, सुहृद सोइ नर ग्राह  
मन से जग को भत चहें, हिय छल रहे न नेर  
सो सज्जन ससार मे, जाको निमत निनेरु  
पशु पक्षी हू जान हे, अपनी अपनी पीर  
तब सुजान जानौ तुम्हे, जब जानैं पर पीर  
चटक न छाटत घटत हू, सज्जन नेह गैभीर  
फीको परै न बर घटै, रँग्यो चोल रँग चीर  
बन्दौ सन्त समान चित, हित अनहित नहिं कोय  
अजलिगत शुभ सुमन ज्यों, सम सुगन्ध कर दोय  
मले भलाई पै लहै, लहैं निचाई नीच  
सुधा सराही अमरता, गरल सराहौ भीच

## चौपाई

साधु चरित शुभ सरिस कपासू,  
 निरम विशद गुण मय फल जासू,  
 जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा,  
 वन्दनीय जिहि जग यश पावा  
 मुद मगल मय सन्त समाजू,  
 जो जग जगम तीरथ राजू  
 अरुथ अलौकिक तीरथ राजू,  
 देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ  
 बन्दौ सन्त असज्जन चरणा,  
 दुख प्रद उभय बीच कछु बरणा  
 विछरत एक प्राण हर लेही,  
 मिलत एक वारुण दुख देही  
 उपजहि एक सग जल माही  
 जलज जौक जिम गुण बिलगार्ही  
 सुधा सुरा सम साधु असाधू,  
 जनक एक जग जलधि अगाधू  
 सुधा सुधाकर सुरसरि साधू,  
 गरल अनल कलिमल सरि व्याधू  
 गुण अगुण जानत सब कोई,  
 जो जिहि भाग नीक तिहि सोई

## चौपाई

जग-बहु नर मर सरि सम भाई,  
 जे निज वाढ बढहि जल पाई,  
 सज्जन सुकृत सिधु मम कोई  
 देख पूर विधु वाढहि जोई,  
 देव । देवतरु सरस स्वभाऊ,  
 सन्मुख विमुख न साहुहि काऊ  
 उमा मन्त की यहै बडाई,  
 मन्द करत जो करे भलाई  
 सन्त अमन्तन की अस करनी,  
 जिम कुठार चन्दन आचरनी  
 काटिये मलय पगसु सुन भाई,  
 निज गुण देइ सुगध बसाई  
 पर उपकार बचन मन काया,  
 सत सहज न्यभाउ रग राया  
 भूरज तरु मम सत कृपाला,  
 पर हित सह नित त्रिपत विशाला  
 सत हृदय सनतत सुखकारी,  
 विश्व त्रिदत जिमि इन्दु तमारी  
 मत सहहिं दुख पर हित लागी,  
 पर दुख हेत अमत अभागी

सत विटप सरिता गिरि धरनी,  
 पर हित हेत इन्हन की करनी  
 सत हृदय नवनीत समाना,  
 कहा कविन पै कहै न जाना  
 निज परिताप दहै नमनीता,  
 पर दुख द्रवहि सुसत पुनीता

दोहा

हित करियत यहि भातिसो, मिलयत हैं वहि भांति  
 झीर नीर ते पूछले, हित करवे की बात  
 मालिनी

दिनकर कमलों को स्वच्छ देता सुहास

शशि कुमुद गणों को रम्य देता विलास

जलद वरस ते हैं भूमिमें अम्बु धारा

सुजन विन कहे ही साधते कार्य मारा

विकल अति क्षुधासे देखके पुत्र प्यारा

जननि हृदय से है छूटती दुग्ध धारा

लस कर कुदशा त्यों दीन दु खी जनोकी

सहज प्रगट होती है दया सज्जनोंकी

लहर रहित होता है पर्याधि प्रशान्त

सुहृदय रहते त्यों धीर गम्भीर शान्त

दुख मुस भय चिंता आदिसे हो अलिप्त

स्थिर मति रहते हैं साधु ही आत्म तृप्त

सत्र नद नदियो का नीर धारा प्रवाही

वह कर मिलता है सिन्धु में सर्वदा ही  
तदपि न तजता है आत्म मर्याद मिधू

सु निपुल मुख में भी गर्व लाते न साधू  
यदि मत्र सरितापै श्रीष्म में शुक्र हो भी

वह उद्वि रहेगा पूर्ण ही मित्र तो भी  
धन सुग्य प्रभुता का सर्वथा हो अभात्र

पर सम रहता है सज्जनों का स्वभाव

सत्रैया

सन्त करै नहि वैर कहु सबके हित में वरतैं अतिही  
ता तन को जय दाहत कौ यह तथापि देत सुग्यामित ही  
जैसे कुठार कट्टै तरु चन्दन गध तिसै मुख दे गत ही  
हेतु इही सर्वात्म हेरत ता पद ऋज नमो नितही

दोहा

तन दाहन छेदन विमन सहे कनक छवि पाय  
ल्यो दुर्जन के बचन सह, सज्जन सन्त कहाय  
कष्ट दिये पर साधु जन, तजैं न पर उपकार  
चन्दन को फूकत तउ, देत सुगध अपार,  
सन्त कृपो रवि उदय ते, मिटै तिमर अज्ञान  
हृदय सरोवर विमल ह्वै, फूले हित बुध ज्ञान

## सज्जन स्व वचनों की रक्षा करते हैं



सज्जन अगीकृत मियो, ताको लेहि निवाह

छर्ई कलकी कुटिल शशि, तउ शिव तजत न ताह  
बडे भार लै निरबहैं, तजत न खेद विचार

शेष धरा वरि धर धरै, अबलों देत न डार  
बडे वचन पलटै नही, कहि निरवाहैं धीर

कियो विभीषन लंक पति, पाय विजय रघुवीर  
कहे वचन पलटै नही, जे सत पुरुष सधीर

कहत सखे हरिचन्द्र नृप, भरथो नीच घर नीर  
वचन तजै नहिं सत पुरुष, तजै प्राण वरु देश  
प्राण पुत्र दुहुँ पर हरे, वचन हेत अवधेश

### घनाक्षरी

सूर्य्य और चोंदहु की ज्यांति टर जाय भले,  
सज्जन का वैन पँ न नेरु कबौ टर है ।  
धन और सम्पति के नाश का न ख्याल लेश,  
पर उपकार हेतसर्व परिहर है ।  
सत्य पक्ष पाति निज सत्य ही को सत्य जान,  
राम कवि अन्त लागि ताहि अनुसर है ।  
सामने है कौन ? और होगा परिणाम कैसा  
बौर न विचार कबौ ताह पर कर है ॥

( १२७ )

सोच रूप सागर में सने रघुराई कहैं,  
लक यह डेन को तो लगे कुछ घात है ।  
सौन या विभीषण को रामे रोक रावण तै,  
जीव जाल मछरी सौ परयो पछतात हे ।  
लक्ष्मण पादों में हू मरण परण लीनो,  
जस राम बुगें न्योत दृवी बुधि जात है ।  
जीव को न लालच वचन को विशेष उर,  
जीव गये वचन वचै तो बडी घात है ।

कुराडलिया

पुत्र प्राण सब ते बडे, चारो युग परमान  
ते राजा दो तजे, वचन न लीने जात  
वचन न दीने जान, बडन की यहै बडाई  
वचन रहे सो काय, और सर्वस तिन जाई  
कहि गिरधर कपिराय, भये नृप दशरथ ऐसे  
प्राण पुत्र परहरे, वचन परहरे न तेने ॐ

### सत्य प्रशंसा

सत्य वचन मुग्न जो कहत, ताको चाह सगाह  
गाहक आप्त दूर तैं, सुन इक सज्जी साह  
अरि हू बूझे मत्र कौ, कहिये साच मुनाय  
ज्यो भीषम पाटवन कौ, दीनो मरम बताय  
कहिये जासों जो हितु, भली बुरी हँ जाय  
चोर करै चोरी तऊ, साच कहै घर आय



चलिये पैडे साच के, साईं साच सुहाय  
साचो जरै न आग तै, मूठो ही जर जाय  
आच न लागे साच को, यामें ना कुण्ड भूल  
सोना पावक मे पडे, घटत तोल नहिं मूल  
कार्य सिद्ध हो सत्य सों, रहो निकट या दूर  
सीधे सरसो धनुर्धर, वेधत लक्ष्य जरूर  
का ब्राह्मण का डोम भर, का जैनी कृस्तान  
सत्य बात पर जो रहे, सोई जगत महान  
न्याय चलत विगरे कष्ट, तौ न करो अफसोस  
धार परत जो राज पथ, तौ न देत कोड दो  
सत पथ चलते दुख मिलै, तऊ न आनत हान  
हरिश्चन्द्र की गाथ को, जानत सकल जहान

### सत् सङ्गति महिमा

रहे समीप बडेन के, होत बडो हित मेल  
सब ही जानत बढत है वृत्त बराबर बेल  
गरुता लघुता पुरुष की, आश्रय बशते हांय  
करी वृन्दमे विंध्य सो, दर्पण मे लघु सोय  
एक भलो सबको भलो, देखो सबद विवेक  
जैसे सत हरिचन्द्र के, उधरे जीव अनेक  
होय शुद्ध मिटि कलुपता, मत सगतिको पाय  
जैसे पारम्भको परस, लोह कनक है जाय

उत्तम जनके सगमे, सहज होत सुख भास  
नृपति लगावै इतर जो, लेत सभा मय वास  
जाके सग अरुगुण दुरं, करिये तिहि पहिचान  
जैसे मानें दूध मय, सुरा अहीरी पान  
जैसी सगति तँसिये, इजत मिलि है आय  
सिर पर मखमता सेहरो, पनही मखमल पाय  
होत सुसगति सहज सुख, दुख कु मगके वान  
गधी और लुहार की, देखो वैठ दुकान  
मुधरै विगारि कुसगने, सत सगतिको पाय  
वामहि सीकर हीग की, जीरा सग मिटि जाय  
उत्तम जन सो मिलत ही, अरुगुण हू गुण होय  
घन म ग रारो उरधि मिल, धरसै मीठो तोय  
दुखदाई सोई तैत सुख, सुखदाई सँग जात  
घट जल भीजे चीर को, लागि लूय सियरात  
सदा सुथान प्रधान है, बल न प्रधान वतात  
नाग डरावत गरुर को, हर उर हार प्रभात  
नीचहु उत्तम सग मिलि, उत्तमही ह्वे जाय  
गग सग जल ह्वयलू, गगोदक के भाय  
बुरो तउ लागत मलो, भतो ठौर पर लीन  
तिय नयना नीको लगै, फाजर अरुधि मलीन

## चौपाई

सठ सुधरहिं सत. सगति पाई,  
 पारस परम कुधातु सुहाई ।  
 गगन चढै रज पवन प्रसगा,  
 कीचइ मिलइ नीच जल सगा ।  
 सोइ जल अनल अनिल सघाता,  
 होय जलद जग जीवन दाता ।  
 धूमऊ तजै सहज करपाई,  
 अगार प्रसग सुगध बसाई ।  
 सोइ भरोस मोर मन आवा,  
 किहि न सु सग बडापन पावा ।  
 रुर्म नाश जल सुर सरि परई,  
 तिहि को कहो मीस नहिं धरई ।  
 उलटा नाम जपत जग जाना,  
 बालमीक भये ब्रह्म समाना ।  
 विन सत सग विवेक न होई,  
 राम कृपा विन सुलभ न सोई ।  
 त्रिवि प्रश मुजन कुसगति परहीं,  
 फणि मणि सम निजि गुण अनुसरहीं ।  
 मणि माणिक मुक्ता छवि जैसी,  
 अहि गिरि गज शिर सोद न तैसी ।

नृप किरीट तरुणी तनु पाई,  
लहहि सुयश शोभा अधिकाई ।

दोहा

ग्रह भेषज जल पवन पट्ट, पाय कुयोग सुयोग  
होहिं कु प्रस्तु सुवस्तु जग, लखहि सु लक्षण तोग  
हरिगीत

मगल करनि कतिमल हरनि तुलासी कथा रघुनाथकी  
गति कूर कविता सरितकी ज्यो परम पावन पाथ की  
प्रभु सुयश मगति भणित भति होयहि सुजन मनभावनी  
मन भूति अग मशानकी सुभिरत मुहावन पावनी  
घनाचरी

मलय की स गति में चन्दन हँ जात वन,  
पारस लगे में लोह मौना होय जात है ।  
नल के सहारे नीर चढत अकास पर,  
फल मग पात एक भाग में निजात है ।  
महा गुणवान नारायण की सुस गति से,  
मन्द मति राम कनि सुकवि कहात है ।  
स गति सुधार देत दुष्ट ओ कुरुर्मियो को,  
स गति ही फूटी तक्दीर को घनात है ।



## अन्धेर ❀

पडे हैं बन्धन में गजराज, मुक्त फिरता है श्रान समाज  
 कुडगा है कोकिल का साज, धरा कूकर के सिर पर ताज  
 इसे हम कहे दिनों का फेर, या कहे दुनिया का अन्धेर  
 कूप का निर्मल शीतल नीर, महा खारी है उदधि गँभीर  
 ईश के भक्त अशक्त अधीर, दुष्ट राक्षस होते हैं वीर

घरो में अजा बनों मे शेर

देखिये दुनिया का अन्धेर

नहीं घटतो तारो की आब, नही थिर माहनाव की ताब  
 कुशलसे किंशुक खिने जनाव, कठिन काटोमे खिचे गुलाब

रत्न कम पत्थर के है डेर - - -

देखिये है कैसा अन्धेर - - -

पर्वतोंमे सोनेकी खान, राज पूताना रेगिस्तान  
 शख का है सूखा सम्मान, किया सीपी को मुक्ता दान

विधाताकी सुबुद्धिका फेर

हो रहा है विचित्र अन्धेर

रुहा वह कमरा रुहा वह कीच, न समझा उच्च न समझा नीच  
 लगाया है कलक शशि बीच, ले गया वह मनोद्वता खीच

❀ हम अन्धेरकी रोगन व्याख्या देखिये "पद्य-परीक्षा" पृष्ठ-२७

मिलनेकापता—वेत्तान प्रि टिङ्ग वर्क्स चाह रहट देहली

दिया है गरल सुधा में गेर

विधाता यह कैसा अन्धेर

महा गुण कारी कडवी नीम, बताते डाक्टर वेद्य हकीम

भरे मीठेमें दोष असीम, बिके दो गिन्नी सेर अफीम

और गुड दोही आने सेर

कौन यह कहे नही अन्धेर

महाज्ञानी थे अष्टावक्र, और पर-सन्तापी है शक्र

चलाता है त्रिधि ऐसा चक्र, किया करता है ऐसे मक्र

लगे अन्धे के हाथ बटेर

लोग हैं चकित देख अन्धेर

खपाया किये जान मजदूर, पेट भरना पर, उनका दूर

उडाते माल धनिक भर पूर, मलाई लड्डू मोती चूर

सुधरनेमें -- है जग के घेर -

अमी है बहुत बडा अन्धेर

अन्न दाता हैं धीर-किसान, मिपाही दिखलाते हैं शान

डराते उन्हें तमाचा तान, तुम्हे क्या सूझी हे भगवान

आवले गद्रे मीठे वेर

किया है क्यों ऐमा अन्धेर -

फिलीपाइनके हिंसक लोग, जिन्हे था कल तक पशुता रोग

भोगते हैं स्वराज्य सुख भोग, पडा आकर ऐमा सयोग

रहा है भारत पर मुख हेर  
बडा अन्धेर बडा अन्धेर-

## सबल में तेज होता है

सबल न पुष्ट शरीर को, सबल तेज युत होय  
दृष्ट पुष्ट गज दुष्ट ज्यों, अकुस के वश सोय  
बिना तेजके पुरुष की, अवश अवज्ञा होय  
आगि बुझै ज्यों राख कौं आन छुवे सध कोय  
मंत्र परम लघु जासु वश, विधि हरि हर सुर सर्व  
महा भक्त गजराज कहैं, वश करि अकुश खर्व  
“चौपाई ।

कहैं कुंभज कहैं सिंधु अपारा, सोख्यो सुयश सकल ससार  
रवि मण्डल देखत लघु लागी, उदय तासु त्रिभुवन तम भागा

## सबल से वैर करना बुरा है

कैसे निबहै निबल जन, कर सबलन कौं गैर  
जैसे बसि सागर बिपे, करत मगर सों वैर  
सबै सहायक सबल के, निबल न कोउ सहाय  
पवन जगावत आगको, दीपहि देत बुझाय  
अछु बसाय नहि सबल सो, करे निबल पै जोर  
चलै न अचल उगार तरु, डारत पवन भूकोर  
एरु बुरो सबको बुरो, होत सबल के कोप  
औगुन अर्जुन के भयो मब क्षत्रिन को लोप

हरत देव हू निबल अरि, दुर्वल ही के प्रान  
 बाघ सिंह को छोड़ कै, देत छाग यति दान  
 छोड सधत को निरत की, कयहु न गहिये श्रोत  
 जैसे टटी डारमों, राग विलय चोट  
 तिन के कागज होत हैं, जिनके थडे सहाय  
 कृष्ण पच्छ पाडव नयी, कौरव गये विलाय  
 सब धकार्वे निबलको निरत पुगतन पाठ  
 डारै जार विहाय दे, अनिता अनल जल काठ  
 जोर न पडुचे निबल को, जो पै सबल सहाय  
 भोडर की फानूस को, दीप न बात पुभाय  
 निबल मरत के पक्ष ते, सबनन भा अनदान  
 हनत हिमायन की गरी, ऐराकी को लान  
 प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अम आह  
 जो मृगपति वय मेडकहि भलो कहत को ताह  
 सबलपक्षसे निबल जन, सबल शत्रु से मार  
 अहि हर उर वसि अभय मन, गरुड विरमानै आस

### कुण्डलिया

साईं बैर न कीजिये, गुरु पण्डित कवि यार  
 वेदा वनिता पैवरिया, यज्ञ कारावन हार  
 यज्ञ कारावन हार, राज मंत्री जी होई  
 विप्र परौसी वैद्य, आप को तपै रसोई



प्राण तृपातुर के रहें, थोरे हू जल पान  
 पीछे जल भर सहस घट, डारे मिलत न प्राण  
 समय समझ कै कीजिये, काज बहै अभिराम  
 सैंधव मागथो जीमते, घोडा को किहि काम  
 दैवो अवसर को भलो, जामो सुधरै काम  
 खेती सूखे वरसिवो, घन को कौने काम  
 बनती देख बनाइये, परन न दीजे रोट  
 जैसी चले बयार तब, तैसी दीजे ओट  
 सुरदाई पै देत दुख, सो सब दिन को फेर  
 शशि शीतल सयोग मे, तपत विरह की धर  
 विधि के विरचे सुजन हू, दुरजन मम ह्वै जात  
 दीपहि रागे पवन तै, अचल बहै बुझात  
 विष हू ते सरसी लगै, रम मे रिस की भास  
 जैमी पित्त ज्वरीन की, कडवी लागत दास  
 कहू अवगुण सो होत गुण, कहूँ गुण अवगुण होत  
 कुच कठोर ल्यो हैं भले, कोमल बुरे उद्योत  
 जैसी हो भवितव्यता, तैसी बुद्धि प्रकाश  
 सीता हरिने ते भयो, रावण कुल को नाश  
 निहचै भावीको कहै, प्रती कार जो होय  
 तो नल से हरिचन्द्र से, विपति न भरते कोय

कष्ट मनाय न चल सके, होनहार के पास  
भीष्म युधिष्ठिर से भयो, कौरव कुल का नाश  
कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर  
समय पाय तरुवरु फरै, केंतिक सींचो नीर  
होत सिद्ध जैसे समय, तैसी ही अबिलार  
कौडी विन जात न लियो, करी तियो दे लाख  
न कछु तऊ जाकी तलब, ताही की मनुहारि  
तिलक समय नृप लेत हैं, वृण हू हाथ पसारि  
गुणी तऊ अवसर विना, आदर करे न कोय  
हियते हार उतारिये, शयन समय जब होय  
कारज ताही को सरै, करै जो समय निहारि  
कबहुँ न हारे खेल में, खेलै दाव विचारि  
जो हाजिर अवमान पर, सोई शस्त्र प्रमान  
दामहि तैं बलदेव ज्यो, हरे सूत के प्रान  
अवसर वीते यत्र को, करिवो नहिँ अभिराम  
जैमे पानी बह गयो, सेतुबन्धु कहि काम  
आण आदर ना करे, पीछें लत मनाय  
घर आण पूजै न अहि दाबी पूजन जाय  
अपने अपने समय पर सवको आदर होय  
भोजन प्यारो भृश में, तिस मे प्यारो तोय

प्यारी अन प्यारी लगे, समय पाय सब बात -

धूप सुहावे शीत में, सो प्रीपम न सुहात

वय समान रुचि होत है, रुचि समान मन मोद

बालक खेल सुहाव ही, योवन विपै विनोद -

सुनत श्रवण पिय के वचन, हिय विकसै हित आगि

ज्यो कदम्ब वर्षा समय, फूलत बूदन लागि

निरस बात सोई सरस, जहा होय हिय हेत

गारी ह प्यारी लंगै, ज्यों ज्यों समधि न देत

अरुण सिरोरुह कर चरण, दृग रजजन मुर चन्द्र

समय आय सुन्दरि शरद, काहिन करत अनन्द

समय समय सुन्दर-सवै, रूप कुरूप न कोय

मन की रुचि जेती, जितै, तितै तितै रुचि होय

चौपाई

चूषित वारि विन- जो तनु त्यागा, मुये करेका सुधा तडागा

का वर्षा जब कृपी सुखानी, समय चूक पुनि का पछतानी

कुण्डलिया

माई समय न चूकिये, यथा शक्ति सन्मान

को जाने को आइ है, तेरे पौरि प्रमान

तेरे पौरि प्रमान, समय असमय तक आवै

ताको तू मन गोल, अक भर हृदय लगावै

कहि गिरधर कविराय, सर्व आमें मधि आइ  
 शीतल जल फल फूल, समय जिन चूको साई  
 बीती ताहि निसार दे, आगे की सुधि लेइ  
 जो बनिआये सहज मे, ताही में चित देइ  
 ताही मे चित देइ, घात जोई बन आने  
 दुर्जट हैंसे न कोय, चित मे रता न खाने  
 कहि गिरधर कविराय, यहै कर मन परतीती  
 आगे को सुग्य समझ होइ बीती सो बीती  
 राजा के दरवार में, जैसे समया पाय  
 साइं तहा न बँठिये, जहँ कोउ देइ उठाय  
 जहँ कोउ देइ उठाइ, बोल अन पॉले रहिये  
 हैंमिये नही हहाय, घात पूछे से कहिये  
 कहि गिरधर कविराय, समय मे कीजे काजा  
 अति आतुर नहिं होय, बहुर अनगैहै राजा

छप्पय

समय मेव वरसत समय सिर होय सर्व फल  
 तरणार्थ ही समय, समय ही जान देह बल  
 समय सुजन हू, मिलै, समय परिटत हू चूके  
 समय प्राति चित घटै, समय सरपर हू सूके  
 कोऊद्वारजु आये समय सिर, समय पाय गिगिबरहि गिर  
 गोविंद अटल करि नन्द कहि, जो कीजे सो समय सिर

चौपाई

सकुचे तात कहत इक याता, अंधं तजहि दुध सर्वस जाता

सहाय प्रशंसा

अथल हु के अबलम्ब तैं, पूर्ण होत है आश

पाय सहारा सूत का, मोम हु करत प्रकाश

सहोदर भ्राताओंका स्वभावभी भिन्न होताहै

एक उदर, चाही समय, उपजत एक से होय

जैसे काटे बेर के, वाके सीधे दौय

यद्यपि सहोदर होय तउ, प्रकृति और की और

विष मारै ज्यावै सुधा, उपजै एकहि ठौर

मारै इक रक्षा करे, एकहि कुल के दौय

ज्यों कृपाण अरु कवच ये, एक लोह के होय

होय भले का सुत बुरो, भलो बुरे को होय

दीपक ते काजल प्रगट, कमल कीच ने सोय

चौपाई

उपजहि एक मग जल माही,

जलज जोक जिमि गुण बिलगाहीं ।

सुधा सुरा सम साधु अमाधु,

जनक एक जग जलधि अगाधु ।



( १४५ )

घनाक्षरीं

एक बीज एक मूल एक डार एक स्थान,  
एक खान पान फूल' शूल के लखानिय ।  
एक सुखदाई अरि मीत को विनेक तज,  
तन मन ताको परमार्थ होत जानिये ।  
कठिन कठोर एक महाँ दुख दायक है,  
अग चुभ दसरो के पीड अधिकानिये ।  
राम कवि अपने सुकर्म ते बडाई होत,  
कुलासी बडाई कंहो' कैसे कर मानिये ।

सर्व "मान्य सिद्धान्त"

मागत गौरव नाश हो, प्रसवत यौवन तोपे

रहेत न विनय प्रणाम लखि, मत पुरसनका कोप

सम सतोप न और सुख, तप नहि क्षमा समान

ब्रह्म ज्ञान सम ज्ञान नहि, धर्म न त्या समान

सामर्थ्य-सीमा

अपनी पहुच विचार के, अरतव करिये दौर

तेतो पात्र पसारिये, जेती तानी सोर

अन मिलती जोई करत, ताहीको उपहास

जैसे योगी योगमे, करत भोगकी आस

बडे बडनके दुख हरत, पै न नीच यह नाम

घन भेटत पै ना सरित, गिरिवर प्रीप्स ताप

होय बडेरु न हूजिये, कठिन मलिन मुख रग

मर्दन बधन छत सहत, कुच इन गुनन प्रसग  
कोऊ विन देखे सुने, कैसे कहे विचार

कूप-भेक जाने कहा, सागरको विस्तार,  
जो समझै जा यातको, सो तिहि कहे विचार

रोग न जाने ज्योतिपी, वैद्य ग्रहनको चार  
जो लायक जा यातको, तासों तसी होय

सज्जन सो न बुरी करै, दुर्जन मली न कोय  
बडे बडनके जात हैं, बडे हरै दुख वन्द

कुह भवन मे जाय कै, चन्द भये जग वन्द  
प्रापति तैसी होत सो, जिहि जैसा लाभाय

भाजन मित सर सरित तें, जल भरि भरि लैजाय  
उत्तम जनकी होइ कर, नीच न होत गसाल

कौवा कैसे चल सके, राज हसकी चाल  
क्यो कीजै ऐसो यतन, जातैं काज न होय

पर्वत पै रोडे कुँवा, कैसे निकसै तोय  
है है बडे बडेन सों, होय न छोटे काज

गहै विटप जुफतीनको, गहि न सकै गजराज  
होय पहुँच जाकी जिती, तेतो करत प्रकाश

रवि सम कैसे कर सकै, दीपक तम को नाश  
विपति बडेई सहि सकैं, इतर विपति तें दूर

तारे न्यारे रहत हैं, गहै राहु शशि सूर

जाय दरिद्र कवि जनन को, सयें गज समाज  
 सिंह तृपित जब हात है, हाथ चढ़े गज राज  
 वीर पराक्रम ना करै, तासो डरत न कांय  
 बालक हू का चित्र कां, बाघ रिलोना होय  
 वीर पराक्रम ते करे, भूमण्डल को राज  
 जोरावर यातैं करत, वन अपनो मृगराज  
 निबढ़ै सोई कीजिये, पन अपनो अनुमान  
 कैमे होत गरीब पै, राजा को सो दान  
 जो धनग्रन्त सो देत कछु, देय कहा धन हीन  
 कहा निचोरै नम्र जन, न्हान सरोवर कीन  
 छोटे मन में आय है, कैसे मोटी बात  
 छेरी के मुह में दियो, ज्यों पेठा न समात  
 मान धनी नर नीच पै, याचै नाही जाय  
 कबहुँ न मागे स्यार पै, वरु भूको मृगराय  
 छोटे नर सों बडन कां, कबहु बुरो न होय  
 फूस आग नहिं कर सकत, तपत उदधिको तोय  
 जिहि जेतो अनुमान तिहिं, तेतो रिजक मिलाय  
 कन कीडीं ब्रुकर दुकर, मन भर हाथी राय  
 यथा शक्ति ही देसके, जो कछु जाक पास  
 ब्राह्मण मन चांरें दियो, श्री पति धन आवास  
 निर्धन ते कय होत है, धनग्रानन फी रीस  
 कहु कागज के फूल कां, कौन चढ़ावत साम



उचन के कर्तव्य को, करत न नीच गुलाम  
 पग-उगली कब करत है, गठ खोलन को काम  
 कैसे छोटे नरन ते, सरत बडन के काम  
 मढो दमामो जात है, कहिं चूहेके चाम  
 चले जाहु या को करत, हाथिन को व्योपार  
 नहिं जानत इहि पुर बसै, धोबी और कुम्हार

### सावधान रहो

जीवन रक्षा के लिये, मन को रख हुशयार  
 चोर घुरावत तब न जब, जागत चौकीदार  
 नीचे बन कर रहत है, पहुँचे साधु उदार  
 ज्यों मजिल पर जाय कर, प्यादा बने सवार  
 जो रहीम मन हाथ है, मनसा कहु किनु जाहि  
 जल में जो छाया परी, काया भीजति नाहि  
 कह कह गुण ते अधिक, उपजत कष्ट शरीर  
 मधुरी बानी बोल कै, पडत पीजरे कीर

### सीधी चाल

रहिमन सीधी चाल सो, प्यादा हात बजीर  
 फरजी मीर, न हो सकै, टेढे की तासीर

### सुखकर

एक बिरानोई भलो, जिहि सुख होत मरीर  
 जैसे बन की औपधी, हरत रोग की पीर

सेयौ छोटी ही भतो, जासो गरज सराय

कीजै कहा पयोधि को, जासो प्यासे न जाय  
बड़ी बडाई नीच को, दीजै अपने काम

सर हू को बोलत पथिक, कहत विनायक नाम  
प्यासे दुपहर जेठ के, थके सब जल सोधि

मरु धर पाय मतीर हू, मारु कहत पयोधि  
विपम विपादित की तृषा, जिये मतीरन सोधि

अमित अपार अगाध जल, मारो मूड पयोधि  
अति अगाध अति उथरो, नदी कूप सर वाय  
सो, तामो सागर जहा, जाकी प्यास बुझाय

### सुजन दुर्जन स्वभाव अन्तर

इक समीप वसि अहित कर, इक हित कर वसि तर

हस विनाशे कमता दल, अमल प्रकाशे सर

शिव सम्पति फल करत है, सुहृत् जनन के हेत

दूरहि सूरज उदित ज्यों, कमलन को सुग्य देन

काज विगारत और को, इक निज काज सुधारि

कियो मत्रिनमिल राज नृप, सुरयहि त्रियो निहारि

काज विगारत आपनो एक और के काज

बलिहि निवारत नैन की, हानि मही कविराज

परधन लेत दिनाय इक, इक धन देत हमत

शिशिर करत पत भार तरु, गहिरे करत अमन

## सुपुत्र प्रशंसा

गाहक सर्व सपूतके, सारै काज सपूत

सय को ढम्पन होत है, जैसे वन को सूत

आप कष्ट सहि और मो, सोभा करत सपूत

'चरखा', 'पोजन', 'चरखिवा, जग ढम्पन ज्यो सूत

बहुत भये किहिं काम के, भारनिगाहक एक

शेप धरै धर सीस पर, मँडक भरि अनेक

एरुहि भले सुपुत्र तैं, सब कुल भलो कहात

सरस सुवासित चिरछ तै, ज्यो वन सकल वसात

पिता भक्त सुत होय तो, पितु को चलत सुभाय

राम राज सब छोड़ कै, वन वासी भये जाय

श्रवण करो ल्यों कीजिये, मात पिता की सेव

काधे कावर लै फिरयो, पूज्यो जैसे देव

सुत सपूत की कीर्ति लखि पिता अधिक सुख पाय

ज्यो राकाशशि छवि लखत, उदधि बढत हर्षाय

इक सपूत जन्मयो भलो, बहु कपूत नहि 'राम'

इक शशि निश तम हेरतु है, नखत समूह निकाम

यदपि होत पितु मात को, सब सुत पर सम नेह

लखि सपूत ठण्डक लहै, जरै कुसुत लखि देह

कुलहि प्रकाशै एक सुत, नहि अनेक सुत निन्द

बन्द एक निश तम हरै नहि उडगन के बृन्द

( १५१ )

चन्दन चन्द्र उशोर हिमोपल,  
हिम रजनी भी और कपूर  
ये सब मिल कर भी न करेंगे,  
मानव हृदय ताप को दूर  
पर सपूत जिस कुल में होगा,  
उसका समय आपही आप  
पलट जायगा यश फैलेगा,  
मिट जायेगा सब सन्ताप  
विमल चित्त हो दानशील हो,  
मूर वीर हो सरल विचार  
सत्य वचन हो प्रेम युक्त हो,  
करे सभी से सम व्यवहार  
ज्ञानी सहृदय हो उपकारी,  
और गुणी हो अपना धर्म  
कर्मा न छोड़े, देश भक्त हो,  
ये सब सत्पुत्रों के कर्म

दाहा

कुल सपूत जान्यो परै, तखि शुभ लक्षण गात  
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात  
वचन ही में करत है, चतुराई की बात :  
होनहार बिरवान के होत चीकने पात

मानै काच गँवार तउ, पार्च काच नहि होय  
भेय बनावै सूर को, कायर सूर न होय

गाल उढाये मिह की, स्यार मिह नहि होय  
कैसे हृ छुटती नहीं, जा मे पडी कुय न

काग न कोकिल हो सके, जो विधि सिखवै आन  
देवन हो से देय प्रमु, कहा सुरेश नरेश

कीनी मीत धनेश तउ, पहरै चरम महेश  
मले बचन मुख नीच के, नाहिन होत प्रकाश

हाँग लसुन में ना मिले, घन वस्तूरी घास  
नीच कुसगति के मिले, करत नीच मो प्यार

खर को गग न्हाइये, तऊ न छोड़त छार  
सज्जनता न मिले किये, जतन किये किन कोय

ज्यों कर फाड़ निहारिये, लोचन बडो न होय  
एकत हृ रह सुजन खल, तजत न अपनो अग

मणि निप-हर, विप-कर सरप, सदा रहत डक सग  
भली बुरी जो आदरै, कौन सकै निरवारि

शीत विमल पावक करन, चलत नीच गति व्यारि  
करै न कबहू साहसी, दीन हीन सो काज

भूख सहै पर घास को, नहीं भरै मृगराज  
सहज शील गुण सुजन के, खन बंध होत न भग  
रतनदीप की ज्यों शिर्षा, बुझत न वात प्रमग

नाहि करत उपकार तैं, काज सिद्धि बलवान

मुनि मन बसिबो सग मृग, किय अगस्त दधि पान  
रुहा भयो जो नीच को, देत बडाई कोय

कहत विनायक नाम पै, रार न विनायक होय  
दुष्ट न छोडत दुष्टता, बढी ठौर हू पाय

जैसे तजत न श्यामता, विष शिव-कठ बसाय  
राल सजन सूचीन के, भाग दुहू सम भाय

निगुन प्रकाश छिद्र को, सगुन सु दापत जाय  
दुर्जन गहत न सुजनता, जतन करो किन कोय

जो पै जो को रोपिये, रुबहू शालि न होय  
दान मान सन्मान यश, अपनी अपनी धान

छोटे छोटी गति कहो, मोटे मोटी मान  
लाए दुष्ट घरे रहे, साधु न हो मति हीन

होत न अहि ससर्ग ते, चन्दन मे विष लीन  
जो रहीम उत्तम प्रकृति, क्या कर सकत कुसग

चन्दन विष व्यापत नहो, लिपटे रहत भुजग  
रहिमन लाए भली करो, अगुनी अगुन न जाय

राग सुनत पय पियत हू, साप सहज घर गाय  
कोट यत्न कोऊ करो, परै न प्रकृति हि धोच

नल बल जल ऊचो चढे, अन्त नीच के नीच  
ओछे बडे न हो सकें, तागि सतरौहे यैन

दीरघ होहिं न नेकहू, फार निहारे नैन  
गुनी गुनी सब कोउ कहत, निगुनी गुनी न होत  
सुन्यो कहू तरु अके तैं, अर्क समान उदोत

कुराडलिया

सवै हँसत कर तार दे, नागरता के नाव  
गयो गर्व गुन को सवै, वसे गँवारन गाव  
वसे गँवारन गाव, गुन न गौरव को पायो  
जो कुछ यश तिहि सँचो, सोइ तहँ आय गँवायो  
भूठो लागन लग्यो, भले काजने हू कल्मेंस  
सुकवि गुनन गति सुनत, गँवारे गाँहके सवै हँस

सोरठा

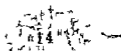
फूले फले न वेत, यदपि सुधा वर्पहि जलद  
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलै विरचि सम  
दोहा

मान करो वरु विविध विधि, अशन अमित पय पाग  
लागहि भाग न काग कै, त्याग न आपन राग  
दुष्ट न छोडे दुष्टता, सज्जन तजे न हेत

काजर तजे न श्यामता, मोती तजे न श्वेत  
भौवरि अन भौवरि भरो, करो कोटि बरुवाद  
अपनी अपनी भौति को, हुटे न सहज मवाद  
संगति सुमति न पावही, पडे कुमति के धध  
रासो मेता कपूर मे, हाँग न होय सगध

## स्फुट

होय भले चाकरन तैं, भलौ धनी को काम  
 व्यो अगद हनुमान ते, सीता पाई राम  
 जाही ते कछु पाइये, करिये ताकी आस  
 रीते संखर पर गये, कैमे बुभत पियास  
 तिनसो विमुखन हजिय, जो उपकार समेत  
 मोर ताल जल पान करि, जैसे पीठ न देत  
 जो कीजै हित त्याग जनि, निज नेही की आर  
 सर जल पीत मोर तउ, जात न आनन मोर  
 रहिमन दानि दरिद्र हो, तउ याचने जोग  
 ज्यो सरितन सूरे परे, कुँवाँ खनावत लोग  
 ताही को करिये जतन, रहिये जिहि आधार  
 को काटै वा डार को, बैठ जाही टार  
 मत्री गुरु अरु वेद्य जो, प्रिय बोलै भय आश  
 राज धर्म तन तीन कर, होय वेग ही नाश  
 जैसे थानक सेइये, तैसे पूरे काम  
 सिंह गुफा मुक्ता मिलै, स्यार खुगी खुर चाम





करें कृपा अस 'रामकवि'  
गिरा, गजानन' दाय  
हिंदी की हितकारिणी  
“ हिंदि-सुभाषित ” होय



कविता की कल, काफियोंका बोज, तुकान्तका राजाना

पत्र—पथ—प्रदर्शक

नारायणपनाद वताम" प्रणीत

## प्रास-पूज

याद आपको समाचारपत्रोंमें अपनी कविता छपवानेका, उन्मत्तों पर नज्म पढ़ानेका, उद तरहपर गजल लिखनेका, हिन्दी समस्या-पत्रिका, नाटक लिखनेका शौक है, तो "प्रास-पूज" अक्षर-शिवि । रोगान दिमाग शाहरो और प्रकाश-प्रिय कवियोंको हम चौमुग्रे चिरागसे चार लाभ होंगे ।

१—प्रास, काफिया, तुक, तुकान्त क्या वस्तु हैं ? कैसे बनता है ? शुद्ध अशुद्धकी पहचान क्या है ? उद्का तरीका, हिन्दीकी रीति क्या है ? इन प्रश्नोंका सरल उत्तर मिलेगा ।

२—द्व हजार । ६००० । से अधिक काफियोंका बोज हम तरह दिया है कि जो प्रास चाहिये औरन मिल सके ।

३—शब्दका लिङ्ग अर्थात् मुनकर मुख्यमका ज्ञान शब्दके साथही आत्म हो जाता है ।

४—पिङ्गलक प्रासद्व प्रमिद ५० से अधिक शब्दके नियम, स्वरूप और उदाहरण सहित लिखे हैं ।

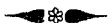
पत्नी, सुन्दर जिल्द सहित मूल्य ६। डाक व्यय ॥

मिर्दनका पता --

येनाथ प्रिटिंग चम्स,

चाह रहट देहली

# ❀ सतसई संजीवन भाष्य ❀



सुप्रसिद्ध साहित्य-मर्मज्ञ विवेचक-कला-निधि श्री प० पद्म-  
मिह जी शर्मा रचित विहारी सतसईकी भूमिकाने हिन्दी-  
ससागरमें युगान्तर उपस्थित कर दिया है। सच पूछिये तो  
महाकवि विहारीकी अनूठी लोकोत्तरानन्दवायिनी और हृदय  
हारिणी कविताके मन्वन्धमें सहृदय-समाजकी उत्तरोत्तर रुचि  
बढाना साहित्याचार्य प० पद्मसिंह शर्मा के कलमका ही  
करिश्मा है। 'विहारी-सतसई' की भूमिका देखकर मूल  
पुस्तकका भाष्य पढनेके लिये पाठकोके हृदय-सागरमें किस  
प्रकार लालसाकी लहर उठती रहती है उसे उनका दिल ही  
जानता है। हर्षकी बात है कि काव्यामृत पिपासुओंकी परि-  
वृत्तिके लिये प० पद्मसिंह शर्मा कृत "सतसई संजीवनभाष्य"  
का प्रथम भाग शीघ्रही प्रकाशित होने वाला है। इसमें सत-  
सईके १२५ गेहोंका जिस पाण्डित्यसे भाष्य किया गया है वह  
एक बार पढनेसे ही विदित होगा। कविवर विहारीलालने  
'सतसई, के जरामे दोहेमे कैसी करामात भरी है इसका ठीक  
ठीक ज्ञान इस भाष्यका अध्ययन करने ही मे हो सकेगा।  
सागरको सागरमें भरें कर कविवर विहारीलालने तो कमाल  
किया ही है परन्तु इस कमालका जमाल दिग्बानेमे शर्माजीने

भी अपनी प्रशस्त प्रतिभा शक्तिका पूरा परिचय दिया है हम उस भाष्यकी विशेष प्रशंसा न करते हुए पाठकोमे उम्र पढ़नेका अनुरोध करते हैं ।

इस चार मतसईकी भूमिका ( जो पहिले प्रकाशित हो चुकी है ) और भाष्य दोनो एक जिल्दमे एकत्रित कर दि गये हैं, परन्तु जिन माहकोंके पाम तुलनात्मक भूमिका मौजू है उनको केवल भाष्य भी दिया जा सकेगा ।

पुस्तककी छप ई, सकार्ड, कागज और जिन मय वत्तम है

मिलनेका पता —

नेताय प्रिंटिंग वर्क्स, चाह रहट नेहली ।

नारायण शतक

नीतिके नवीन १०० दोहे  
कार्ड साइज: ६४ पृष्ठ । आधे दोहे  
मे नीतिका स्पष्ट, आर्थमे उस-  
का स्पष्ट है ।

रचना रची सरस या फीकी  
निज मय नाहि प्रशंसा नोकी  
काके टिकट भेजनेसे मिलेगा ।

मिलनेका पता —

नेताय प्रिंटिंग वर्क्स

चाह-रहट दिल्ली

विवेचक—कलानिधि

श्री प० पद्मसिंह जी शर्माक

## लेखोंका संग्रह

पुस्तकाकार छप रहा है। इसमें उन सब महत्व-पूर्ण शिक्षाप्रद और मनोरञ्जक लेखोंका समावेश है जो समय-२ पर परोपकारी, भारतोदय, भारत-मित्र, प्रतिभा सौरभ, श्री शाब्दा आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। जिन्हे पुस्तकाकार देखने को सहृदय समाज बहुत दिनोंसे समुत्सुक था। कई ऐसे लेख भी इस संग्रह में सम्मिलित कर दिये गये हैं जो आज तक कहीं प्रकाशित नहीं हुए। इसमें अनेक अनूठी समालोचनाएँ भी हैं, जो "सतसई संहार" से कम रोचक नहीं हैं।

"सतसई संहार" शीर्षक सुप्रसिद्ध समालोचना भी इस संग्रह में समावेशित कर दी गयी है।

सबसे पूर्व समालोचनात्मक लेखों का संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। इसके बाद शीघ्रही अन्य प्रकारके लेख छापे जायेंगे। छपाई, सफाई और कागजकी उत्तमताओं और पूरा ध्यान दिया जा रहा है। पद्मसिंह जी शर्माके लेखोंकी लोक प्रियता से आशा की जाती है कि यह संग्रह प्रेस से निकलते ही धड़ा धड़ विकने लगेगा। सम्भव है देखते मंगाने वालों को दूसरे संस्करणकी प्रतीक्षा करनी पड़े इस लिए ग्राहक महाशयों को अभी से अपने नाम रजिष्टर में लिखवाने चाहिये। जो सज्जन पहिले ही अपने नाम ग्राहक सूची में लिखावेंगे वो डाक व्ययसे मुक्त कर दिये जाएंगे

पता—चेताव प्रिंटिंग वर्क्स

चाहरहट देहली

# पद्य-परीक्षा

लेखक—नारायणप्रसाद वेताव

भारतके मशहूर मशहूर कवियोंकी कविताओपर पिङ्गल शौखानुसार बेलाग समालोचना करके गुण दोष लिखे हैं। अयोध्यामिहजी उपाध्याय, रामचरितजी उपाध्याय, श्रीधर पाठक मैथिलीशरणगुप्त, नाथूराम शंकर शर्मा, महावीरप्रसादजी द्विवेदी, मिश्रबन्धु, लाला भगवानदीन दीन, त्रिशूल, प० रूपनारायण पाण्डेय इत्यादि कवियोंने जिन जिन छन्दों का व्यवहार किया है, उन हिन्दी छन्दोंके नियम, उद्बहरोके कायदे भी समालोचनाके साथ लिखे गये हैं।

यह अपने ढङ्गकी निगली पुस्तक छपकर मिलकुल तैयार है। मूल्य जिन्द सहित १) रु०

मिलनका पना

वेताव प्रिण्टिङ्गवर्स

चाह रहट देहली

# उर्दू सुभाषित ।

आजकल हिन्दी कविता और लेखों में उर्दू शेरों के उद्धरण का रिवाज उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, पढ़ने वाले भी उर्दू की चाट का पूरा मजा लेते हैं। ऐसी रचि रखनेवालों के लिये ही यह मसाला तैयार किया गया है। जिस तरह "सुभाषित रत्नभाण्डागारम्" में प्रत्येक विषयके श्लोक मिल जाते हैं, जिस प्रकार इस 'हिन्दी सुभाषित' में हिन्दी के पद्य हर एक विषय पर मिलजाते हैं, इसी तरह 'उर्दू-सुभाषित' में भी हर मजमून के अशआर आवश्यकानुसार मिलेंगे।

स्वतंत्र पुस्तक लिखने वाले, अनुवाद करने वाले, नाटककार, उपन्यास लेखक, व्याख्यान देना उपदेशक, कथा वाचने वाले, समाचार पत्रों के सम्पाद-दाता इस पुस्तक से बहुत लाभ उठा सकते हैं। वाणी तथा लेख में इस सृष्टि संग्रह के एक दो पद्य डाल दीजिये, मुँ का मजा बढ़ जायगा और सब स्वादिष्ट होजायगा।

उर्दू कवियों के चुने हुए उर्दू शेर तो हैं ही, परन्तु "विषयशीर्षक" और लिपि हिन्दी है। भाषा ज्योंकी त्यों उर्दू है, हा कठिन शेरों का हिन्दी अनुवाद साथ दे दिया है।

मिलनेका पता—

धेताय प्रिंटिङ्ग वर्क्स  
चाह रहट देहली

# पिङ्गल सार

चट्टि पृष्ठ कम है किह बुरे तो नलास कुछ भन मोलिये  
मेरी गूदडी का न दगि। मगर इसमें लाल टटोलिय ।

प्रियवर । यह कोई पुस्तक नहीं है किन्तु पुस्तका-  
कार एक पाठावलीके पत्र एकत्रित किये हुए हैं । १६२०  
ई० में हम एक मासिक पिङ्गल पाठावली निकालते थे,  
जिसका मृत्यु केवल आशीर्वाद था, यहा तक कि छपाई  
और डाक व्ययार्थ तक भी कुछ नहीं लिया जाता था ।  
पूरे १ वर्षतक यह सिलसिला जारी रहकर बन्द हो  
गया । उन्हीं पाठों में कुछ पृष्ठ और छपवाकर सम्मिलित  
कर दिये हैं । उर्दू अरूजको भी दिन्दी साचे में ढाल कर  
साथही लगा दिया है । अब यह अपने अङ्गमें पूरी पुस्तक  
हो गयी है । छन्द कोई नया नहीं, वही प्राचीन आचार्यों के  
लिये, प्राचीन ग्रन्थों से लिये हुए हैं किन्तु वर्णन शैली  
नवीन है, ज्यों कि प्रजासी विद्यार्थियोंको घर बैठे डाक  
द्वारा पढाना अभीष्ट था इस लिये जहा तक सरल और  
सुगम हो सका, किया गया है ।

यह पुस्तक उपन्यासोंकी तरह एक रुपये के ४०० पेज  
खरीदने वाले भागवाही ग्राहकों के काम की नहीं है क्योंकि  
कि इनकी पृष्ठ संख्या ( २०×३० का १६ चाँ साइजमें )  
केवल १६६ है । मूल्य साधारण जिल्द सहित ॥॥॥

मिलनेका पता—

वेताव प्रिण्टिङ्ग वर्क्स

चाह रूट देहली



# उर्दू सुभाषित ।

आजकल हिन्दी कविता और लेखों में उर्दू शेरों के उद्धरण का रिवाज उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, पढने वाले भी उर्दू की चाट का खूब मजा लेते हैं। ऐसी रचि रखनेवालों के लिये ही यह मसाला तैयार किया गया है। जिस तरह "सुभाषित रत्नभाण्डागारम्" में प्रत्येक विषयके श्लोक मिल जाते हैं, जिस प्रकार इम 'हिन्दी सुभाषित' में हिन्दी के पद्य हर एक विषय पर मिलजाते हैं, इसी तरह 'उर्दू-सुभाषित' में भी हर मजमून के अशआर आवश्यकानुसार मिलेंगे।

स्वतंत्र पुस्तक लिखने वाले, अनुवाद करने वाले, नाटककार, उपन्यास लेखक, व्याख्यान दाता उपदेशक, कथा वाचने वाले, समाचार पत्रों के सम्वाद दाता इस पुस्तक से बहुत लाभ उठा सकते हैं। वाणी तथा लेख में इस सूक्ति-संग्रह के एक दो पद्य डाल दीजिये, पुँ का मजा बदल जायगा और सब स्वादिष्ट होजायगा।

उर्दू कवियों के चुने हुए उर्दू शेर तो हैं ही, परन्तु विषयशीर्षक" और लिपि हिन्दी है। भाषा ज्योंकी त्यों उर्दू है, हा कठिन शेरों का हिन्दी अनुवाद साथ दे दिया है।

मिलनेका पता—

'वेताव' प्रिंटिंग वर्क्स  
चाह रहट देहली

# पिङ्गल सार

यदि पृष्ठ कम हैं कि हैं बुर तो उलासे कुछ भी न उोलिये  
मेर्ग गृदडी को न देखि। मगर इनमें ताल टटोलिये !

प्रियवर। यह कोई पुस्तक नहीं है किन्तु पुस्तका-  
कार एक पाठावलीके पत्र एकत्रित किये हुए हैं। १९२०  
ई० में हम एक मासिक पिङ्गल पाठावली निकालते थे,  
जिसका मृत्यु केवल आशीर्वाद था, यहा तक कि छपाई  
और डाक व्ययार्थ तक भी कुछ नहीं लिया जाता था।  
पूरे १ वर्षतक यह सिलसिला जारी रहकर घन्द हो  
गया। उन्हीं पाठों में कुछ पृष्ठ और छपनाकर सम्मिलित  
कर दिये हैं। उर्दू अरूजको भी दिन्दी साचे में ढाल कर  
साथही लगा दिया है। अब यह अपने अङ्गमें पूरी पुस्तक  
हो गयी है। छन्द कोई नया नहीं, वही प्राचीन आचार्यों के  
लिखे, प्राचीन ग्रन्थों से लिये हुए हैं किन्तु वर्णन शैली  
नवीन है, क्यों कि प्रवासी विद्यार्थियोंको घर बैठे डाक  
द्वारा पढाना अभीष्ट था इस लिये जहा तक सरल और  
सुगम हो सका, किया गया है।

यह पुरतक उपन्यासोंकी तरह एक रुपये के ४०० पेज  
खरीदने वाले भाग्याही ग्राहकों के काम की नहीं है क्यों  
कि इसकी पृष्ठ संख्या (२०×३० का १६ घाँ साइजमें)  
केवल ११६ है। मूल्य माध्यागण जिन्द सहित ॥॥॥

मिलनका पता—

वेताव प्रिण्टिङ्ग वर्क्स

चाह रहट देहली

( १६६ )

हिन्दी में

अपूर्व अनूठी अन्युपयोगी उपादेय

अपने विषयकी पहिली

सचित्र पुस्तक

## “मनुष्यका भोजन”

इसमें खान पान सम्बन्धी प्रायः सभी विषयों का डाक्टरों, यूनानी और आयुर्वेदीय मतमें अत्यन्त मनोरञ्जक एवं सरल भाषामें विशद और विस्तृत वर्णन है। हिन्दी में इसके जोड़की अन्य पुस्तक आज तक नहीं लगी। केवल कहनेको बात नहीं है प्रमाण लीजिए,

१— श्रीमती काशी - नागरी प्रचारिणी मन्डलने अपने विषयकी सर्वोत्तम पुस्तक होनेके कारण इस पर पदक दिया है।

२— महामति प्रोफेसर गोपालचन्द्र जी भार्गव एम एल सी सम्पादक 'विज्ञान' श्री युक्त डाक्टर त्रिलोकीनाथजी वर्मा बी एल सी, एम डी बी एस, असिस्टेंट सर्जन,

चिट्ठर्य श्री ए० लक्ष्मीधर जी वाजपेयी भूतपूर्व सम्पादक “चित्रमय जगत” आदि कई धुरन्धर विद्वानोंने इसका संगोधन किया है।

३— 'विज्ञान' जैसे प्रतिष्ठित पत्र में इसके लेखों ने स्थान प्राप्त किया है।

४— 'दैनिक आज' जैसे गौरवशाली पत्रने विना निवेदन किये ही इसके लेख उद्धृत किये हैं।

५— अनेक प्रसिद्ध विद्वानों ने मुक्त कण्ठसे इसकी प्रशंसा और छपाने के लिये आग्रह किया है।

जो पुस्तक इतने विद्वानों द्वारा सशोभित और प्रशंसित हो क्या वह आपको पसन्द न आणगी ?

शीघ्र चुराने वाला है— जल्दी काजिए मूल्य ५)

महात्मा गान्धी लिखित  
संसारमें हल चल मचा देने वाली  
अपूर्व पुस्तक

“स्वराज्यकी कुञ्जी”

गदिया कागज, मनोहर चित्र, छपाई सफाई अत्युत्तम  
फिरभी मूल्य केवल ५)

भूलोकका अक्षृत ।—) हिन्दूजातिका हास ।—)

पना—वेनावि प्रिंटिंग वर्क्स  
चाह रहट देहली



